पशुओं के रोग और पारंपरिक चिकित्सा

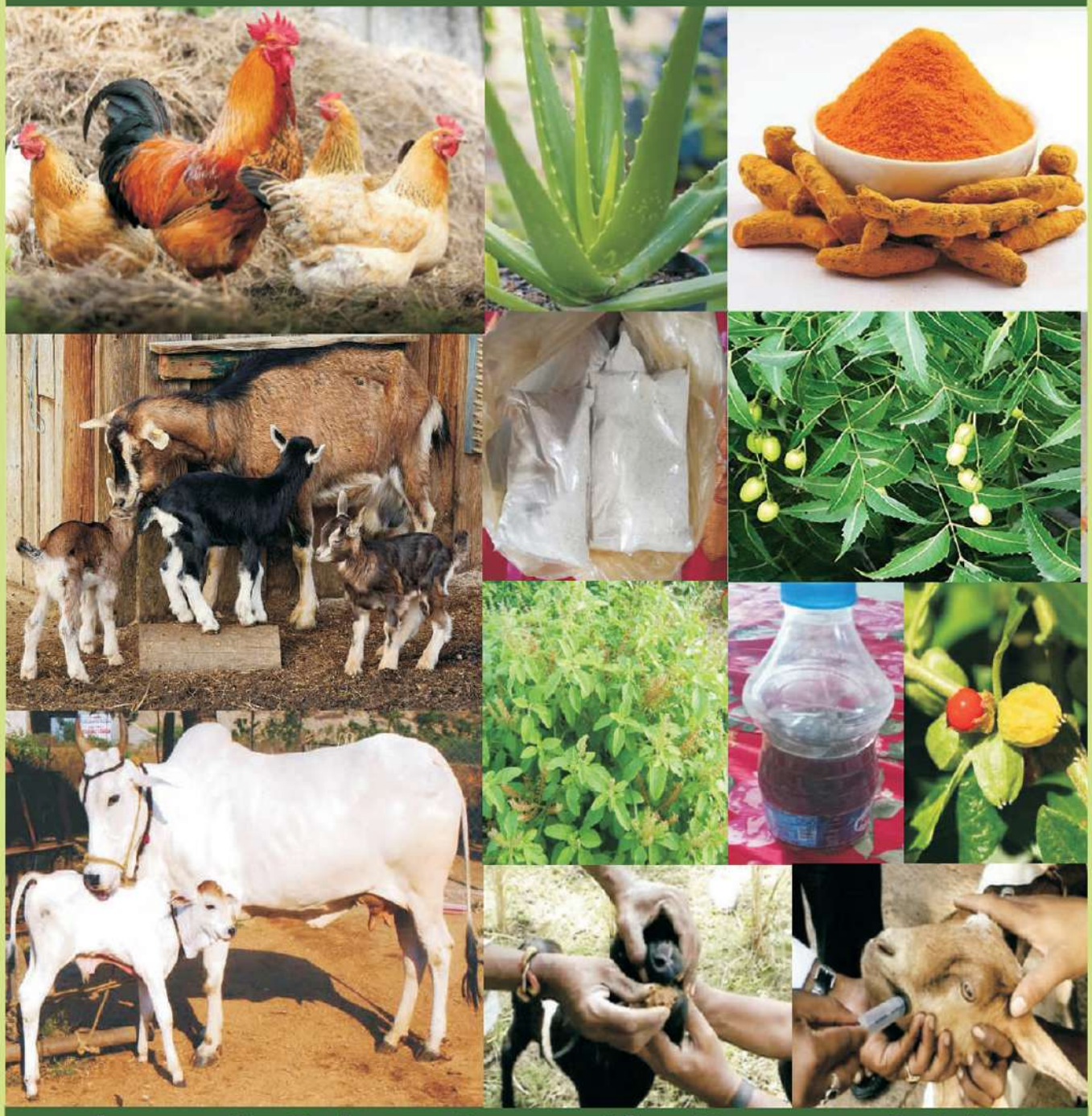

परंपरागत औषधि के साथ होगा पशुओं का विकास - उससे मिलेगी महिलाओं को साहस और परिणाम स्वरूप होगा गाँव का विकास

PROFESSIONAL ASSISTANCE FOR DEVELOPMENT ACTION

प्रदान Pradan

TATA TRUSTS

PASHUDHANPRAHAREE

www.pashudhanpraharee.com

अनुक्रमाणिका

क्रमांक नं.	पशुओं की रोग सूची	पृष्ठ संख्या
भाग 1	**बाह्य प्रभाव से होने वाले रोग :**	
1	बुखार	5
2	अल्पकालिक (तीन दिन) बुखार	5
3	सनस्ट्रोक / हीट स्ट्रोक	6
4	जलना (बर्न्स और स्कैल्ड्स)	6
5	कटा घाव और सेप्टिक घाव	6
6	कीड़ा पड़ने वाला (मैगोट) घाव	7
7	कुत्ते के काटना (बकरी का शिकार)	7
8	रेबीज (हाउड्रोफोबिया)	8
9	सांप का काटना	9
10	बिच्छू / अन्य कीड़े काटना	9
भाग 2	**शरीर के बाहरी हिस्से पर रोग :**	
11	फोड़ा	10
12	सिस्ट	10
13	एडिमा (फैला हुआ सुजन)	10
14	ट्यूमर (मौसा)	11
15	केसियस लम्फाडेनाइटिस (सी एल)	11
16	गठिया / घुटना सुजन (और केप्रिन गठिया एन्सेफलाइटिस CAE)	11
17	नाभि संक्रमण बीमार (केवल युवा जानवरों की बीमारी)	12
18	मोच	13
19	फ्रैक्चर (Fracture)	13
20	बिस्थापन (डिसलोकेसन)	13
21	यक्ष्मा / जॉनस / पैराट्यूबरकुलोसिस रोग	14
भाग 3	**जीभ, मुंह और पैर / खुर से संबंधित रोग:**	
22	लकड़ी जीभ (Wooden Tongue/Actinobacillosis)	14
23	नीली जीभ (Blue Tongue)	15
24	स्टोमेटाइटिस (मुंह भीतर का घाव/अल्सर)	15
25	मुंह के बाहर /होंठ/नाक में छाले (Ecthyma/Sore Mouth/Orf)	16
26	खुर में घाव (Foot root)	16
27	Pink eye/आंख का लाल होना/सफेद आंख (Cloudy eye)	17
भाग 4	**ऐसा रोग जिसके लिए टीकाकरण आवश्यक है:**	
28	बकरी प्लेग (PPR)	17
29	फडकीयां बीमारी (Enterotoxaemia/ई.टी.) - चक्कर लक्षण	18
30	पॉक्स/चेचक (बकरी/भेड़ और गाय)	19
31	टेटनस (धनु, बंद जबड़े)	19
32	एंथ्रेक्स	20
33	मुंहपका-खुरपका बीमारी (एफएमडी)	20
34	रक्तस्त्रावी सेप्टीसीमिया (एच एस)	21
35	ब्लैक क्वार्टर (लंगड़ा बुखार, ब्लैक लेग)	21
भाग 5	**अन्त परजीवी संक्रमण के कारण होने वाले रोग:**	
36	निमाटोड (राउंडवॉर्म, हुकवर्म, हेमोंकोसिस एस्कारियोसिस/पॉट बेली)	22
37	सेस्टोड (टैपवार्म, फेफड़े के कीड़े)	22
38	ट्रेमेटोड्स (लिवर फ्लूक्स वर्म्स एंड पैराम्फिस्टोम्स (बॉटल जॉ)	23
भाग 6	**त्वचा रोग और बाह्य परजीवी संक्रमण :**	
39	टिक्स और जूँ - बाह्यपरजीबी	24
40	मांजे/खुजली - बाह्यपरजीबी	24
41	दाद (फंगल संक्रमण, बाल झड़ना)	25
42	ढेलेदार त्वचा (लम्पी स्किन)	26

क्रमांक नं.	पशुओं की रोग सूची	पृष्ठ संख्या
भाग 7	**प्रोटोजोआ जनित रोग :**	
43	कोक्सीडायोसिस	27
44	बेबेसियोसिस / लाल पानी का बुखार/टिक बुखार (मुलायम टिक)	27
45	थिलेरियासिस (हार्ड टिक्स)	28
46	ट्रिपैनोसोमियासिस / सुर्रा रोग - चक्कर लक्षण	29
भाग 8	**तंत्रिका तंत्र को प्रभावित करने वाले रोग:**	
47	दौरे / आक्षेप और पक्षाघात	29
48	गीड (कोएनुरस सेरेब्रलिस) - चक्कर लक्षण	30
49	लिस्टरियोसिस - चक्कर लक्षण	30
50	मेनिनजाइटिस / एन्सेफलाइटिस - चक्कर लक्षण	31
51	पोलियो एन्सेफलोमलेशिया (पीईएम, स्टार गेजिंग) - चक्कर लक्षण	31
52	ग्रास टाइटेनी (Mgकी कमी) - चक्कर लक्षण	32
53	बेशरम/थेथर के पत्ते खाने से - चक्कर लक्षण	32
भाग 9	**पाचन तंत्रके रोग :**	
54	एनोरिक्सिया (भूख की कमी) / अपच	33
55	पेट दर्द	34
56	कब्ज और गोला-बंध	34
57	पेट फूलना (ब्लोट/टिम्पनी)	35
58	एसिडोसिस (एसिड अपच)	36
59	ट्रॉमेटिक रेटिकुलो पेरिटोनाइटिस (TRP)	37
60	खाद्य विषाक्तता	37
61	गैर-संक्रामक दस्त (पोषण संबंधी विकार और विषाक्त पदार्थों के कारण)	37
62	संक्रामक-दस्त (संक्रमण और क्रीमी के कारण)	38
63	कोलीबैसिलोसिस (ई कोलाई, सफेद/बछड़ा दस्त)	39
64	निर्जलीकरण	40
भाग 10	**श्वसन प्रणाली के रोग :**	
65	सर्दी और खांसी (राइनाइटिस)/निमोनिया/सीसीपीपी (बकरी)/सीबीपीपी (बैल)	40
66	ड्रेचिंग निमोनिया	41
67	संक्रामक गोजातीय राइनो ट्रेकाइटिस (IBR)	41
भाग 11	**प्रजनन और मूत्र प्रणाली के रोग:**	
68	एनोस्ट्रस (गर्मी में न आना)	41
69	रिपीट ब्रीडिंग (गर्मी में बार-बार आना)	42
70	मेट्राइटिस (गर्भाशय की सूजन)	42
71	गर्भपात - प्रारंभिक चरण (गैर-संक्रामक)	42
72	गर्भपात - आखरी चरण (मृत बचा जन्म, संक्रामक)	43
73	ब्रूसिलोसिस	43
74	फूल पाछा दिखाना (गर्भाशय निकल आना)	44
75	डीस्टोकिया (प्रसब में कठिनाई)	44
76	जेर न गिरना	45
77	प्रसवोत्तर रक्तस्त्राव	46
78	थनैला (स्तन की समस्या)	46
79	दूध न गिरना (अगालैक्टिया)	47
80	दुग्ध-बुखार (हाइपोकैल्सीमिया)	47
81	डाउनर काओ सिंड्रोम (गाय उठ न पाना)	48
82	कीटोसिस (एसीटोनिमिया, हाइपोग्लाइसीमिया) - चक्कर लक्षण	48
83	दूध की कमी	49
84	यूरोलिथियासिस (पथरी, पेशाब में कठिनाई)	50
85	हेमाचूरिया / मूत्र में रक्त	51
भाग 12	**विटामिन/खनिज की कमी से संबंधित रोग:**	
86	पिका (अ-खाद्य पदार्थ खाना)	52
87	रिकेट्स और अस्थिमृदुता (धनुष पैर, विटामिन डी की कमी)	52
88	घेंघा रोग (गण्डमाला)	52
89	लोहे की कमी से एनीमिया	52
90	विटामिन ए की कमी, अंधापन	52
91	बकरी टीकाकरण विवरण	52
92	अन्य	52
भाग 13	**रंगीन तस्वीरों के साथ मुर्गी रोगो का एक संकलन :**	53 से 99

भाग 1 : बाहरी प्रभाव के कारण होने वाले रोग

1. बुखार

जानवर	सामान्य तापमान (F)
गाय/बैल, बिल्ली	101.5
भैंस	99 से 102
बकरी, सुअर, कुत्ता	102
भेड	103
पोल्ट्री पक्षी	106 से 108

बुखार, जीवाणु और वायरस के संक्रमण और उच्च तापमान जैसी पर्यावरणीय स्थितियों के लिए, शरीर की प्रतिक्रिया है।

आमतौर पर यह माना जाता है कि बैक्टीरियल संक्रमण में तापमान बहुत अधिक बढ़ जाता है। Ephemeral fever (तीन दिन की बुखार), एक विशिष्ट बुखार है जो वायरल संक्रमण से होता है।

लक्षण:

ऊंचा तापमान, खुले मुंह में सांस लेना, सूखी थूथन, कानों का गिरना, प्यास में वृद्धि, कंपकंपी, भूख की कमी, सुस्त और उदास आदि।

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. काली मिर्च, धनिया के बीज, जीरा, सूखी तेजपत्ते, हल्दी पाउडर, भुई नीम/ चिरैता प्रत्येक के 5 ग्राम लें। लहसुन की 1 कली, 1 प्याज, 1 मुट्ठी भर नीम और तुलसी के पत्ते और गुड 25 ग्राम लें। सभी को पीसें, बोलस बनाएं और 2-3 दिनों के लिए, दिन में दो बार खिलाएं। एनडीडीबी- https://youtu.be/OF|Lpe58BK0 या,
2. 25 ग्राम गुड़+ 10 ग्राम हल्दी+ काली मिर्च के 10 पिस (गर्भवती जानवरों को नहीं) लें। आप मेलोनेक्स 1/2 गोली जोड़ सकते हैं। सभी को पीसें, बोलस बनाएं और इसे दो दिन के लिए दें। डॉ रामावत https://youtu.be/xWLG3w0vTdw। या,
3. जामुन के पेड़ की 200 ग्राम छाल (Syzygium cumini) को 400 मिलीलीटर पानी में तब तक उबालें जब तक कि यह आधा न हो जाए और दो दिनों के लिए दिन में दो बार 100 मिलीलीटर पानी पिलाएं या,
4. गिलोय (Tinospora cordifolia) या चिरैता / भुई नीम (Andrographics paniculata) का 50 मिलीलीटर रस, दिन में एक बार तीन दिनों के लिए पिलाएं या,
5. जामुन के पेड़ की 40 ग्राम तने की छाल (Syzygium cumini), 20 ग्राम तुलसी के पत्ते (Ocium sanctum), 10 ग्राम चिरैता / भुई नीम (Andrographics paniculata) सभी को एक साथ पीस लें और एक बोलस बनाएं, और दो दिनों के लिए दिन में एक बार खिलाएं या,
6. तुलसी के 20 ग्राम पत्ते (Ocium sanctum), 2 ग्राम काली मिर्च, 50 ग्राम प्याज सभी को एक साथ पीसकर बोलस बना लें, और दिन में एक बार तीन दिनों तक खिलाएं। या,
7. 10 ग्राम पिप्पली (Long pepper), 10 ग्राम चिरैता/भुई नीम (Andrographics paniculata), 50 ग्राम गुड, सभी को एक साथ पीसकर बोलस बना लें, और दिन में एक बार तीन दिनों तक खिलाएं।

2. अल्पकालिक (तीन दिन) बुखार (Ephemeral fever)

यह मुख्य रूप से नवंबर से फ़रवरी के दौरान केवल गाय, बैल और भैंसों को प्रभावित करता है। यह एक वायरस के कारण होता है जो मच्छरों और संबंधित कीड़ों के काटने के माध्यम से जानवरों में प्रवेश करता है य कई क्षेत्रों में यह भी माना जाता है कि यह बीमारी तब होती है जब जानवर ओस के साथ घास को खाते हैं।

लक्षण:

भूख की कमी, बुखार, कंपकंपी, सांस लेने में कठिनाई, आंखों और नाक से पानी आना, लार टपकना, पेट की कठोरता (hardness) आदि

** यह 3 दिनों तक रहता है और अपने आप ठीक हो जाता है, घातक नहीं है।

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. लहसुन और प्याज प्रत्येक के 50 ग्राम, काली मिर्च और काली सरसों प्रत्येक के 5 ग्राम लें, एक साथ पीसें, बोलस बनाएं और 2 दिनों के लिए दिन में दो बार खिलाएं। या,
2. करेली के 50 ग्राम पत्तों को पीसकर 50 ग्राम गुड़ के साथ मिलाएं और दिन में दो बार, 2 दिनों के लिए खिलाएं। या,
3. आयुर्वेदिक उपचार: 25 ग्राम कैफेलॉन पाउडर या 25 ग्राम हिमालय बतीसा को 25 ग्राम गुड़ के साथ मिलाएं, बोलस बनाएं और 3 दिनों के लिए दिन में दो बार खिलाएं.

3. सनस्ट्रोक / हीट स्ट्रोक

गर्मी और सूरज की किरणों के अत्यधिक संपर्क में आने से हीट स्ट्रोक और थकावट होती है। पोल्ट्री बहुत प्रभावित होते हैं, खासकर गर्मियों में, क्योंकि उनके पास पसीना-ग्रंथि नहीं होती है।

लक्षण:

अचानक पतन, तेजी से साँस लेना, हांफना, जीभ का बाहर आना, उल्टी, मांसपेशियों के झटके, तेज बुखार, ऐंठन और कोमा

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. ठण्ड पशु आश्रय प्रदान करें, पीने के लिए पर्याप्त ओ.आर.एस. पानी दें, फीड में प्रतिदिन सामान्य नमक, सेंधा और काला नमक, बेकिंग / मीठा सोडा और खनिज मिश्रण आदि अतिरिक्त 10 ग्राम दें। डॉ रामावत- https://youtu.be/CPgWl0tliWc और,
2. जामुन के पेड़ की 200 ग्राम छाल (Syzygium cumini) को 400 मिलीलीटर पानी में तब तक उबालें जब तक कि यह आधा न हो जाए और दो दिनों के लिए दिन में दो बार 100 मिलीलीटर पानी खिलाएं। या,
3. गिलोय (Tinospora cordifolia) या चिरैता / भुई नीम (Andrographics paniculata) का 50 मिलीलीटर रस, तीन दिनों के लिए दिन में एक बार खिलाएं। डॉ राजीब: https://youtu.be/vrK-aRSgrKM

4. जलना (बर्न्स और स्कैल्ड्स)

जानवर, गर्म वस्तुओं, आग, गर्म तरल पदार्थ, एसिड आदि के संपर्क में आने के कारण ये होते हैं।

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. जानवर को पीने के लिए बहुत सारे तरल पदार्थ (गुड और नमक के साथ पानी) दें। ओर,
2. मरहम लगाएं - Burnol या silver sulfadiazine या नारियल का तेल slaked चूने के साथ या एलोविरा रस हल्दी पाउडर के साथ या करेला के पत्ते कुचल कर। और,
3. एक बार जब जला ठीक होना शुरू हो जाता है, तो इसे किसी भी अन्य घाव की तरह व्यवहार करें और क्षेत्र को साफ रखें।

5. कटा घाव और सेप्टिक घाव

कांच, चाकू और कांटों आदि से त्वचा कटने से यह घाव होता है। जब कटे हुए घाव जीवाणु से संक्रमित हो जाते हैं तो मवाद का निर्माण होता है जो सेप्टिक घाव बन जाता है। जब घावों को लंबे समय तक उपेक्षित किया जाता है, यह आमतौर पर होता है।

लक्षण:

त्वचा कट गई हो और बाहरी खूनस्राव होता है, घाव में बदबूदार मवाद, दर्द आदि

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. एक गिलास पानी में हल्दी एक चुटकी या पोटेशियम परमैंगनेट पाउडर (सरसों के बीज का आकार), मिला के घाव को धोएं। और,
2. खूनस्राव को नियंत्रित करने के लिए-
   I) खूनस्राव को रोकने में मदद करने के लिए ठंडे पानी के पैक या बर्फ़ टिंचर आयोडीन या टिंचर बेंज़ॉइन या चीनी, चाय, कॉफी पावडर लागू करें, या
   ii) तुलसी के पत्ते को पीसकर लगाएं। और,
3. हल्दी पाउडर को घी या सरसों के तेल में मिला लें। घाव ठीक होने तक एक बार रोजाना लगाएं- या,
4. हिमैक्स मरहम लागू करें (इसमें घाव भरने और विकर्षक गुण दोनों हैं)। या,
5. नीम (Azadirachta indica) + सीताफल (Annona sqamosa) + तुलसी की एक मुट्ठी भर पत्तियों को एक चुटकी नमक के साथ पीस लें। या,
6. प्याज के पेस्ट के साथ संजीवनी पत्ते । या,

** मरहम लगाने के बाद, एक साफपट्टी लगाई जानी चाहिए जिसे हर दिन बदलें, जब तक कि घाव ठीक न हो जाए।

6. कीड़ा पड़ने बाला (मैगोट) घाव

मक्खियां घावों पर बैठती हैं और अंडे देती हैं। ये अंडे से कीड़ा (मैगोट्स) बाहर आते हैं, जो खून पर फ़ीड करके बढ़ते हैं। मैगोट घाव संक्रमित नहीं होते हैं।

लक्षण:

सफेद पड़ जाना, घाव में कीड़े, खून बह रहा हो आदि

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. सतही रूप से दिखाई देने वाले कीड़ों को हटा दें। घाव को कपास या पतली पट्टी के साथ पैक करें, जिसमें से तारपीन, कपूर युक्त तेल या निम्नलिखित हर्बल उपचारों में से किसी एक में भिगोया जाता है। 3-4 दिनों के बाद फिर से पैक करें। और फिर घाव को सामान्य कटा घाव के रूप में उपचार किआ जा सकता है। के.जी.एफ https://youtu.be/vT1NjGgMZvs । और,
2. घाव ठीक होने तक, एक बार दैनिक रूप से लगाएँ- नीम (Azadirachta indica) + सीताफल (Annona sqamosa) + तुलसी की एक मुट्ठी भर पत्तियों को एक चुटकी नमक के साथ पीस लें। या,
3. सीताफल के पत्तों का जूस+ तंबाकू के पत्ते + कपूर का पेस्ट बनाएं।

** मरहम लगाने के बाद, एक साफपट्टी लगाई जानी चाहिए जिसे हर दिन बदलें, जब तक कि घाव ठीक न हो जाए। उपरोक्त चरणों को डॉ रामावत द्वारा प्रदर्शित किया गया है: https://www.youtube.com/watch?v=EnUOei2rbgY

7. कुत्ते के काटना (बकरी का शिकार)

कुत्तों का काटना एक बहुत ही आम समस्या है, खासकर गर्मियों के मौसम के दौरान भोजन की कमी के कारण। काटने वाले जानवर (कुत्ते) की लार, उस जानवर में रब्बिज का कारण बनती है जिसे काटा जाता है।

लक्षण:

काटने का निशान दिखाई देता है, घाव से खून बहना आदि

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. आवारा कुत्तों से जानवरों की रक्षा करें। और,
2. बहते पानी में लाईफबॉय साबुन लगाकर लगभग 15 मिनट के लिए तुरंत धो लें। यह बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि रब्बीज जीवाणू, साबुन और पानी/अल्कोहल में नष्ट हो जाता है। फिर, खूनस्राव को रोकने के लिए घाव पर टिंचर आयोडीन या अल्कोहल या कोई एंटीसेप्टिक मरहम लागू करें। आप लहसुन की 5 पंखुड़ियों के साथ इमली के बीज पाउडर 5 ग्राम मिश्रण को भी लगा सकते हैं। घाव को सिलने की जरूरत नहीं है। और,
3. हल्दी पाउडर (1 भाग) और दीमक मिट्टी (2 भाग) को हल्का गरम पानी में मिलाएं, एक पेस्ट बनाएं और लागू करें।

एलोपैथिक उपचार:

1. काटे गए क्षेत्र को साबुन और पानी / अल्कोहल से धोएं. काटने की जगह पर टांका न करें। यदि काटने गर्दन या मस्तिष्क के पास है, तो यह अधिक खतरनाक है।
2. इंजेक्शन सीपीएम और विटामिन बी कॉम्प्लेक्स, 1 मिलीलीटर प्रति किलो शरीर का वजन से दें । इसके अलावा स्ट्रेप्टो-पेनिसिलिन सुई बकरी को 1 मिलीलीटर दें।
3. **टीकाकरण:** कई प्रकार के एंटी रेबीज वैक्सीन होते हैं जैसे नोबिवैक, रेबीजेन मोनो आदि।
4. **रब्बीज वैक्सीन शेड्यूल:** एंटी रब्बिज वैक्सीन (एआरवी) को 1 मिलीलीटर प्रत्येक, "0" दिन (उदाहरण 1/1/20), तीसरा दिन (4/1/20), 7 वें दिन (8/1/20) पर दें। काटने बाला जानवर के बारे में 10 दिनों तक निरीक्षण करें। यदि, पागल या मृत पाया जाता है, तब एआरवी का बाकि तिन टीका फिर से लगाएं, तो 14 वें दिन (15/1/20), 28 वें दिन (29/ 1/20) और, 90 वें दिन (31/3/20) पर। रब्बियों के खिलाफ कुल 6 एआरवी के बारे में: डॉ रामावत https://youtu.be/eurWY9sJ9kU

8. रेबीज (हाइड्रोफ्रेबिया)

यह एक तीव्र वायरल, घातक बीमारी है जो मुख्य रूप से चमगादड़, गिलहरी, आवारा कुत्तों और बंदरों जैसे संक्रमित जानवरों के माध्यम से फैलती है य संक्रमित जानवर की लार में यह वायरस होता है।

लक्षण:

1. **उग्र रूप:** हाइपर-उत्तेजना / आक्रामकता / चिंतित, स्वभाव में परिवर्तन, घबराहट, पलकों का तिरछा होना, उद्देश्यहीन रूप से घूमना, जानवरों पर हमला / काटना आदि
2. **लकवाग्रस्त रूप :** लार टपकना, गले का पक्षाघात, निगलने में असमर्थता, भूख की कमी, असामान्य चाल आदि।
   डॉ रामावत https://youtu.be/AVHIt_gud6A

एलोपैथिक उपचार:

1. काटे गए क्षेत्र को साबुन और पानी / अल्कोहल से धोएं। काटने की जगह पर टांका न करें। यदि काटने गर्दन या मस्तिष्क के पास है, तो यह अधिक खतरनाक है।
2. **टीकाकरण:** कई प्रकार के एंटी रेबीज वैक्सीन होते हैं जैसे नोबिवैक, रेबीजेन मोनो आदि।
3. **रब्बीज वैक्सीन शेड्यूल:** एंटी रब्बिज वैक्सीन (एआरवी) को 1 मिलीलीटर प्रत्येक, "0" दिन (उदाहरण 1/1/20), तीसरा दिन (4/1/20), 7 वें दिन (8/1/20) पर दें। काटने बाला जानवर के बारे में 10 दिनों तक निरीक्षण करें। यदि, पागल या मृत पाया जाता है, तब एआरवी का बाकि तिन टीका फिर से लगाएं, तो 14 वें दिन (15/1/20), 28 वें दिन (29/ 1/20) और, 90 वें दिन (31/3/20) पर। रब्बियों के खिलाफ कुल 6 एआरवी के बारे में: डॉ रामावत https://youtu.be/eurWY9sJ9kU

9. सांप का काटना

सांप का काटना आमतौर पर जहरीला या गैर-जहरीला हो सकता है। जहरीले सांप के काटने के लक्षणों को आसानी से अन्य प्रकार के जहरीले जहर, एंथ्रेक्स और कीट के काटने से एलर्जी प्रतिक्रियाओं के साथ भ्रमित किया जा सकता है।

लक्षण:

काटने की जगह पर जलन और सूजन, मुंह पर झाग, नाक और मुंह से अत्यधिक खूनस्राव, पलकें गिरजाती हैं, अंगो का समन्वय में गड़बड़ी, कोमा और मृत्यु आदि

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. जहर को हटाने की सुविधा के लिए काटने के क्षेत्र को (5 मिमी तक गहरा) और भी काट लें । इसे जल्द से जल्द किया जाना चाहिए। घाव पर सीधे पोटेशियम परमैंगनेट पाउडर छिड़काब करें, ताकि यह जल जाए। और,
2. काटने के ऊपरी अंग भाग में एक कपड़ा बांधें जहां केवल एक ही हड्डी है। सुनिश्चित करें कि कपड़ा इतना टाइट ना हो, ताकि आप कपडे के नीचे अपनी छोटी उंगली डालने में सक्षम होना चाहिए, ताकि खून प्रवाह धीमा हो ना की कुल बाधा हो। और,
3. नीम की पत्तियों को जितना हो सके खिलाएं और 50 मिलीलीटर घी भी पिलाएं। और,
4. कनेर (Cascabela thevetia) की 2 कलियों ले लो, इसे कुचल के काटने की साइट में पेस्ट लगाएं।
   स्वदेशी https://youtu.be/YquG6l4A0uw
5. सिरिस के पेड़ की 100 ग्राम छाल (Albizia Lebbeck) की कुचल कर 100 मिलीलीटर पानी और 10 ग्राम जीरा पाउडर और फ़्रीड के साथ मिलाएं। SR- फिल्मों: https://youtu.be/WCagcRri_mk

** यदि संभव हो तो पशु को पशु चिकित्सा अस्पताल ले जाएं। एंटी स्नेक वेनम (एएसवी) एकमात्र प्रभावी उपचार है।

10. बिच्छू / अन्य कीड़े काटना

लक्षण:

काटने के चारों ओर लाल पडना और सूजन, गंभीर दर्द, हांफना, अत्यधिक पसीना आदि

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. डंक को हटाया जाना चाहिए । काटने की जगह को तुरंत साफ करें और 1 गिलास पानी में 1 चम्मच मीठा / बेकिंग सोडा पानी में धो कर बकरी के मूत्र को लगाएं। और
2. 1 प्याज + 1/4 चम्मच सेंधा नमक + 1 एविल गोली का पेस्ट बनाएं और लागू करें । त्वरित उपचार के लिए भी 1 एविल गोली + 1/2 मेलोक्सिकैम पैरासाइटामोल गोली, दिन में दो बार फ़्रीड करें। डॉ रामावत https://youtu.be/OT9Jo5qF0j0 या,
3. अरबी (कचु) पौधे के तने से रस निकालें और सोडियम बाइकार्बोनेट नमक (मीठा / बेकिंग सोडा) के साथ मिलाएं और लागू करें। या,
4. कनेर (Cascabela thevetia) की 2 कलियों ले लो, इसे कुचल के काटने की जगह में पेस्ट लगाएं।
   स्वदेशी https://youtu.be/YquG6l4A0uw

भाग 2 : बाहरी शरीर के हिस्से पर रोग

11. फोड़ा

ये संक्रामक सूजन हैं, जो अक्सर जानवरों को गन्दा सुइयों इंजेक्ट/उपयोग करने के कारण होती हैं। कुछ बीमारियों से भी फोड़ा बन सकता है। केजीएफ - https://youtu.be/YncPB×dg744

लक्षण:

मवाद से भरी गर्म और कठोर, दर्दनाक सूजन, संक्रमण के कारण होती है।

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. फोड़े पर गर्मी का सेक दें और आयोडीन मरहम लागू करें। या,
2. अर्का पत्तियों (Calotropis gigantea) के दूध के कुछ बूँदें लगाएं। या,
3. 50 मिलीलीटर करंज तेल (Pongamia) लें, 5 ग्राम कर्पूर के साथ मिलाएं, इसे थोड़ा गर्म करें और फिर लागू करें। या,
4. कुछ गेहूं का आटा, हल्दी पाउडर और घी लें, एक साथ पकाएं और गर्म लागू करें, इसे कपड़े से तब तक ढंक दें जब तक कि फोड़ा परिपक्व न हो जाए।

नोट: एक फोड़ा, फोड़ने के समय कृपया ध्यान रखें ताकि संक्रामक मवाद बाहर नहीं फैलता है और कई और फोड़े बनाने के लिए कारण हो।

12. सिस्ट (Cysts)

ये एक गोल आकार वाली सूजन हैं, जो पशु शरीर में कुछ प्रकार के विदेशी तत्वों की उपस्थिति के कारण बनती हैं।

लक्षण:

वे गोल, नरम और ठंडे सूजन हैं जो धीरे-धीरे विकसित होते हैं।

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. टिंचर आयोडीन लागू करें और उसके बाद सिस्ट पर चंदन का पेस्ट लगाएं

13. एडिमा (फैला हुआ सुजन)

जुगाली करने वाले पशु के रेटिकुलम में विदेशी पदार्थ, गर्दन के नीचे मुड़ी हुई त्वचा, के एडिमा का कारण बनता है । इसकेलिए सर्जरी के अलावा, कोई उपचार नहीं है। इसके अलावा, यह फैलाहुआ सूजन तरल पदार्थ के संचय के कारण हो सकता है। अत्यधिक लिवर फ्लूक वर्म का प्रभाब, प्रोटीन की कमी का कारण बनता है। जबड़े के नीचे एडिमा को (Bottle jaw) कहा जाता है, जो दिन के दौरान दिखाई देता है और फिर रात में कम हो जाता है।

डा रामावत: https://youtu.be/opl_Wa4vI8g

लक्षण:

यह ठंड महसूस होता है और इसमें एक परिभाषित आकार नहीं है, जब एडिमा में उंगली दबाते हैं तो गड्ढा कुछ समय के लिए बना रहता है।

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. 25 ग्राम चिरैता/भुइनीम (Andrographics paniculata) पाउडर या कुजाता (Holarrhena antidysenterica) छाल के साथ 10 ग्राम कच्ची हल्दी और काली मिर्च के 10 पिस को साथ मिलाएं, बोलस बनाएं और 3 दिनों के लिए दिन में एक बार खाली पेट खिलाएं। या,
2. यदि एडिमा लिवर फ्लूक वर्म के कारण होती है, तो सुबह खाली पेट में नीलजान या फास्रिल सिरप, प्रति 3 किलो शरीर के वजन में 1 मिलीलीटर केवल एक बार दें। लिव-52, 1 मिलीलीटर प्रति 5 किलो शारीर वजन, रोजाना 10 दिन तक दें।

14. ट्यूमर (मौसा)

एक ट्यूमर मस्से, पप्पिलोमा आदि जैसे मांस की कोई असामान्य वृद्धि है। कभी-कभी यह कुछ प्रकार के कैंसर भी हो सकते हैं।

लक्षण:

एक अजीब आकार का सूजन है, आमतौर पर दर्दनाक नहीं होती है, छूने से ठंड महसूस होता है और धीरे-धीरे बढ़ती है

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. मौसा और पैपिलोमा के आधार को एक धागे के साथ कसकर बांधकर हटाया जा सकता है। और,
2. पपीते के फल या तना के दूध की कई बूंदों को दिन में दो बार मस्से पर लगाएं। या,
3. 1-2 लहसुन की फली को निचोड़ लें और रस को दिन में एक बार मस्से पर तब तक लगाएं जब तक कि मस्सा न गिर जाए।
4. अदरक के ताजे रस के साथ नींबू को पेस्ट के रूप में मिलाएं और मौसा पर लगाएं। या,
5. THUJA (होम्योपैथी दवा) की 10 बूँदें बकरी को सुबह और शाम दोनों समय 10-15 दिनों के लिए दें। इसके अलावा, 5-7 दिनों के लिए मौसा पर थूजा लगाएं। डॉ रामावत द्वारा: https://www.youtube.com/watch?v=cgkJIk8BY3A
6. पानी में कॉपर सल्फेट (टुटिया) का बारीक पेस्ट लगाएं और दिन में 3-4 बार मौसा पर सावधानी से लगाएं। इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि इसे शरीर के सामान्य अंगों पर लागू नहीं किया जाना चाहिए। डॉ उमेर: https://youtu.be/13bk4G×mt8g

15. Caseous Lymphadenitis (C L)

यह एक जीवाणु रोग है, जो मुख्य रूप से भेड़, बकरियों और शायद ही कभी गाय, बैल को प्रभावित करता है। मुख्य रूप से कांटों, झगड़े आदि के कारण त्वचा फटने/टूटने से यह हो जाता है।

लक्षण:

1. मुख्य रूप से लिम्फनोड्स में एक सेब के आकार का एक मोटी, गंधहीन मवाद भरा, गर्म-सूजन होते हैं।
2. लिम्फ-नोड्स एक-एक करके फोड़े में बदल जाते हैं।

** यह Bottle jaw, hematoma बीमारी के लक्षण के साथ मिलता है।.

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. घाव को पोटेशियम परमैंगनेट /आयोडीन दवा / कॉपर सल्फेट से रोजाना धोएं। और,
2. अर्का पत्तियों (Calotropis gigantea) के दूध के कई बूँदें लगाएं । या,
3. 50 मिलीलीटर करंज तेल (Pongamia) लें, 5 ग्राम कपूर के साथ मिलाएं, इसे थोड़ा गर्म करें और फिर लागू करें।
4. कुछ गेहूं का आटा, हल्दी पाउडर और घी लें, एक साथ पकाएं और गर्म लागू करें, इसे कपड़े से तब तक ढंक दें जब तक कि फोड़ा परिपक्व न हो जाए।

16. गठिया / घुटना सुजन (और केप्रीन आर्थाइटिस एन्सेफ्लाइटिस CAE)

जोड़ों के बीच की जगह में तरल पदार्थ होता है जिसे श्लेष द्रव कहा जाता है। यह जोड़ों को चिकना रखता है । जब श्लेष द्रव अपनी संरचना को बदलता है या संक्रमित हो जाता है, तो यह एक ऐसी स्थिति की ओर जाता है जिसे अक्सर गठिया के रूप में जाना जाता है। यह कैल्शियम और विटामिन डी की कमी, बकरी के बच्चों में नाभि-संक्रमण, चोट आदि जैसी कुछ कारणों से हो सकता है।

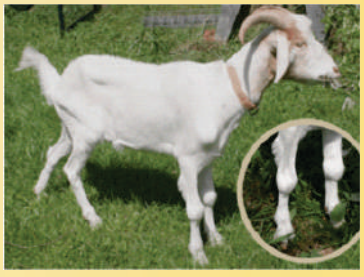

कैप्रिन गठिया एन्सेफ्लाइटिस (सी.ए.ई.) बकरियों की एक संक्रामक वायरल बीमारी है । बकरियों में सी.ए.ई. के 3 प्रमुख रूप हैं: गठिया, एन्सेफ्लाइटिस (मस्तिष्क की सूजन), और निमोनिया या रोग का गठिया रूप वयस्क बकरियों में सबसे आम है, जबकि बच्चों में एन्सेफेलिटिक रूप सबसे आम है।

** कारक ठंडे और/या नम मौसम हैं।

लक्षण:

1. **गठिया रूप:** प्रभावित क्षेत्र में सूजन और कठिन, दर्दनाक, लंगड़ापन, घुटनों पर चलना आदि होती है। यह मुख्य रूप से वयस्क बकरियों को प्रभावित करता है। यदि बच्चे का जोड़ प्रभावित हो, तो नाभि संक्रमण बीमारी होती है।
2. **निमोनिया रूप:** गहरी पुरानी खांसी, मुश्किल साँस लेना आदि।
3. **मस्तिष्क सूजन रूप:** लड खडा के चलना, सिर का झुकाव, दौरे, पक्षाघात। यह विशेष रूप से बकरी के बच्चों को प्रभावित करता है।

** बकरी के बच्चे चक्कर लगा रहे हैं, डॉ रामावत द्वारा: https://youtu.be/fIPAiQ4-Bt4

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. कैल्शियम सिरप दें। और,
2. 25 ग्राम हल्दी पाउडर लें और इसे 10 ग्राम पान में इस्तेमाल किया जाने वाला चूना के साथ मिलाएं, एक पेस्ट बनाएं और जोड़ों पर लागू करें। जोड़ों पर अरंडी के पत्तों को लपेटकर इसे 3-5 दिनों तक पट्टी करें। विकी- https://youtu.be/ahITgiuta4c | या,
3. कनेर (Cascabela thevetia) के पौधा के सभी हिस्से को लें और इसे सरसों के तेल में गर्म करें और जोड़ों में पेस्ट लगाएं। स्वदेशी- https://youtu.be/YquG6l4A0uw या,
4. Iodex मरहम या तारपीन के तेल या 100 मिलीलीटर वनस्पति तेल के साथ कपूर के मिश्रण, प्रभावित स्थानों में, 3-5 दिनों के लिए एक दिन में एक बार हल्के से मालिश करें। या,
5. सिन्द्वार (Vitex negundo) या हिना / मंजुअती (Lawsonia inermis) पत्तियों का पेस्ट 3-4 दिनों के लिए हर दिन लगाएं और पट्टी बांधे। या,
6. 2 मुट्ठी भर पारिजात/गंगाशिउली के पत्तों (Nyctanthes arbortristis) को पीस लें, 1/2 लीटर पानी के साथ मिलाएं और दिन में दो बार 4-5 दिनों के लिए खिलाएं।

17. नाभि संक्रमण (केवल युवा जानवरों की बीमारी)

यह युवा जानवरों की एक बीमारी है। इस में, एक से अधिक जॉइंट गर्म, सूजन और दर्दनाक होते हैं।

लक्षण:

गठिया रूप: युवा जानवरों को प्रभावित करता है, प्रभावित क्षेत्र में सूजन दर्द, लंगड़ापन, घुटनों पर चलने आदि होता है। अक्सर, प्रभावित अंग वजन सहन नहीं कर सकते हैं, और एक से अधिक पैर प्रभावित होने वाले बच्चे खड़े होने में असमर्थ हो सकते हैं। आमतौर पर, बुखार होता है लेकिन भूख में कोई कमी नहीं होती है। कभी-कभी नाभि क्षेत्र में सूजन आ जाती है, लेकिन अक्सर कोई दिखाई देने वाली असामान्यता नहीं होती है।केजीएफ: https://youtu.be/qWYCgcxzMAc

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. कैल्शियम सिरप दें। और,
2. 25 ग्राम हल्दी पाउडर लें और इसे 10 ग्राम पान में इस्तेमाल किया जाने वाला चूना के साथ मिलाएं, एक पेस्ट बनाएं और जोड़ों पर लागू करें। जोड़ों पर अरंडी के पत्तों को लपेटकर इसे 3-5 दिनों तक पट्टी करें। विकी- https://youtu.be/ahITgiuta4c | या,
3. कनेर (Cascabela thevetia) के पौधा के सभी हिस्से को लें और इसे सरसों के तेल में गर्म करें और जोड़ों में पेस्ट लगाएं। स्वदेशी- https://youtu.be/YquG6l4A0uw या,
4. Iodex मरहम या तारपीन के तेल या 100 मिलीलीटर वनस्पति तेल के साथ कपूर के मिश्रण, प्रभावित स्थानों में, 3-5 दिनों के लिए एक दिन में एक बार हल्के से मालिश करें। या,

5. सिन्द्वार (Vitex negundo) या हिना / मंजुअती (Lawsonia inermis) पत्तियों का पेस्ट 3-4 दिनों के लिए हर दिन लगाएं और पट्टी बांधे। या,
6. 2 मुट्ठी भर पारिजात/गंगाशिउली के पत्तों (Nyctanthes arbortristis) को पीस लें, 1/2 लीटर पानी के साथ मिलाएं और दिन में दो बार 4-5 दिनों के लिए खिलाएं।

18. मोच

मांसपेशियों में चोट को मोच कहा जाता है । ऐसा तब होता है जब जानवर किसी भी तरह की दुर्घटना का शिकार होते हैं ।

लक्षण:

लंगड़ापन, प्रभावित हिस्से में मांसपेशियों की सूजन, दर्द और स्थानांतरित करने में असमर्थता आदि

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. एक कपड़े में एक मुट्ठी नमक डालें और कपड़े को बांधें। नमक थैली गर्म करें और खून संचरण को बढ़ाने के लिए प्रभावित हिस्से (गर्म सेक) पर लागू करें, दिन में दो बार 3-5 दिनों के लिए। और,
2. Iodex मरहम या तारपीन तेल या 100 मिलीलीटर वनस्पति तेल के साथ कपूर 4 टिकिया मिश्रण करके, 3-5 दिनों के लिए एक दिन में एक बार हल्के से मालिश करें। या,
3. सिन्द्वार (Vitex negundo) या मेंहदी / मंजुआती (Lawsonia inermis) पत्तियों का पेस्ट 7 दिनों के लिए दिन में एक बार लागू करें। या,
4. काली सरसों के बीजों को पीसकर पेस्ट बना लें और दिन में एक बार 7 दिन तक लगाएं।

19. फ्रैक्चर (Fracture)

हड्डियों में टूटने को फ्रैक्चर कहा जाता है । फ्रैक्चर में अलग-अलग दिशाओं में अंग, स्वतंत्र रूप से घूमते हैं।

लक्षण:

तीव्र दर्द, क्षेत्र की सूजन, जानवर असामान्य रूप से प्रभावित अंग को रखता है, अंग को स्थानांतरित करने पर क्रैकिंग ध्वनि आदि

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. टूटी हुई हड्डी को सेट करें और अंगों को उनकी सामान्य स्थिति में लाएं । और
2. पलाश (Butea monosperma) छाल को धागे के साथ बांधकर स्ट्रिप्स बनाएं और टूटी हुई क्षेत्र पर पट्टी चढ़ाएँ । या,
3. एक साफ्कपड़े या बांस स्ट्रिप्स के साथ क्षेत्र को, निम्नलिखित पेस्ट में से एक के साथ पट्टी करें,

Dr Ramawat https://youtu.be/kie5Ism-i50

a) हाडजोड के पत्ते (Cissus quadrangularis), या
b) रागी/महुआ पाउडर या काली सरसों, और सॉफ्टबोलिगम (Softbollygum) पेड़ की ताजा छाल के साथ।

स्वदेशी: https://www.youtube.com/watch?v=HZejZZdGSH0

20. बिस्थापन (डिसलोकेसन)

हड्डियों के एक दूसरे से अलग होने को डिसलोकेसन कहा जाता है। यह केवल जोड़ों पर होता है, जब की फ्रैक्चर कहीं भी हो सकता है।

लक्षण:

लंगड़ापन, प्रभावित हिस्से में मांसपेशियों की सूजन, दर्द और स्थानांतरित करने में असमर्थता, असामान्य मुद्रा आदि।

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. ट्रैक्शन लागू करें और विस्थापन को प्रतिस्थापित करें। युमाब को रोकने के लिए क्षेत्र में स्प्लिंट और पट्टी लागू करें। और,
2. Iodex मरहम या तारपीन तेल या 100 मिलीलीटर वनस्पति तेल के साथ कपूर के 4 टिकिया का मिश्रण, लागू करें और एक दिन में एक बार हल्के से मालिश, 3-5 दिनों के लिए करें। या,
3. सिन्द्वार (Vitex negundo) या मेंहदी / मंजुआती (Lawsonia inermis) पत्तियों का पेस्ट 7 दिनों के लिए दिन में एक बार लागू करें।

21. यक्ष्मा / जॉनस / पैराट्यूबरकुलोसिस रोग

टीबी जीवाणु किसी भी मार्ग से शरीर में प्रवेश करते हैं, लेकिन श्वसन पथ के माध्यम से प्रवेश सबसे आम है। यह आमतौर पर गाय, बैल, भैस को सबसे ज्यादा प्रभावित करता है, लेकिन बकरियों और भेड़ों प्रजातियों में दुर्लभ है।

लक्षण:

अच्छे भोजन, पोषण और देखभाल के बावजूद लगातार शरीर सुख जाना, आमतौर पर फेफड़ों को सांस लेने में कठिनाई और सूखी खांसी, उतार-चढ़ाव वाले बुखार (एक दिन बुखार होता है और अगले दिन नहीं), यदि आंतों को प्रभावित होता है तो क्रोनिक दस्त हो सकता है, जब त्वचा प्रभावित होती है विभिन्न आकारों के नोड्यूल पाए जा सकते हैं अदि

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. शेड में जानवरों की भीड़ से बचें, शेडों की सफाई। और,
2. पशु को एक संतुलित आहार दें।

** गोवंश और मनुष्यों, एक दुसरे से टीबी को संक्रमित कर सकता है। संदिग्ध संक्रमित जानवरों का दूध न पिएं, हमेशा उबला हुआ दूध पिलाएं आदि

भाग 3 : जीभ, मुंह और पैर/खुर से संबंधित रोग

22. लकड़ी जीभ (Wooden Tongue / Actinobacillosis)

यह जुगाली करने वालों का, कभी-कभार होनेबाला एक संक्रामक जीवाणु रोग है। यह लकड़ी की जीभ के रूप में जाना जाता है।

लक्षण:

जीभ की सूजन, दर्द, सख्त/कठोर होना, खाने में असमर्थ, लार टपकना। जीभ के विभिन्न भागों पर नोड्यूल और अल्सर देखा जाता है। रोग बढ़ने से, जीभ बाहर एक तरफा निकल कर लटक/स्थिर हो जाती है।

डॉ रामावत: https://youtu.be/zj1pITSHbYo

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. लौंग के 3 पिस, लहसुन की 3 पंखुड़ियां, आधा चम्मच चीनी, इसे पीस लें और 1 चम्मच शहद के साथ मिलाएं। इस पेस्ट को जीभ पर, दिन में दो बार 3-4 दिनों के लिए चाटने दें।

डा रामावत https://youtu.be/nKC2L0FLyqY

23. नीली जीभ (Blue Tongue)

यह मुख्य रूप से भेड़, बकरियों और शायद ही कभी गाय, बैल को प्रभावित करता है। यह किसी भी समय हो सकता है लेकिन मुख्य रूप से अक्टूबर और जनवरी के बीच पाया जाता है। यह एक वायरल बीमारी है और विशेष रूप से मच्छरों के माध्यम से फैलता है।

लक्षण:

अक्सर युवा जानवरों को होता है। तेज बुखार, सांस लेने में कठिनाई, अत्यधिक लार टपकना, मसूड़ों/जीभ/होंठों की सूजन और उसके बाद अल्सर, जीभ नीली हो जाती है, थूथन, होंठ और कान का लाल होना और सूखना आदि।

श्रमजीबी द्वारा: https://youtu.be/4SSVh5w-kI8

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. पोटेशियम परमैंगनेट (1 गिलास पानी के साथ 1 सरसों के बीज का आकार) के साथ मुंह धोएं। बोरिक पाउडर या हल्दी पाउडर और घी का पेस्ट बनाकर मुंह पर लगाएं। और,
2. 5-7 दिनों के लिए प्रति दिन दो केले खिलाएं। एलोवेरा जूस (2 भाग) और हल्दी पाउडर (1 भाग) का पेस्ट बनाएं, और लागू करें।
   डीजी- https://www.youtube.com/watch?v=Vrtyq1Av7sk&t=11s और,
3. **बुखार के लिए इलाज:** तुलसी के पत्तों (Ocium sanctum) के 20 ग्राम, काली मिर्च के 2 ग्राम, 50 ग्राम प्याज सभी को एक साथ पीस लें और एक बोलस बनाएं, और तीन दिनों के लिए दिन में एक बार खिलाएं।

24. स्टोमेटाइटिस (मुंह भीतर का घाव/अल्सर)

स्टोमेटाइटिस, मुंह और होंठों की सूजन है। इस में मुहं में घाव/अल्सर के साथ या बिना, मुंह और होंठ के श्लेष्म झिल्ली को प्रभावित करता है। स्टोमेटाइटिस, एक अन्य बीमारी/संक्रमण/एलर्जी का प्रतिक्रिया या असंतुलित खाद्य पदार्थों के कारण हो सकता है। यह अक्सर संक्रामक रोगों जैसे एफ एम डी, पीपीआर, नील जीभ आदि में एक लक्षण है।

Dr Ramawat : https://youtu.be/UN1ro8PAGiw

लक्षण:

भूख की कमी, मुंह और जीभ के अंदर सूजन और लालिमा, झागदार लार टपकना और लार टपकना, होंठों का बार-बार चाटना, जीभ, मसूड़ों और मुंह पर छोटे काँटे, मुंह से बुरी गंध आदि।

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. पोटेशियम परमैंगनेट (1 गिलास पानी के साथ 1 सरसों के बीज का आकार) के साथ मुंह धोएं। और,
2. शहद (2 भाग) और हल्दी पाउडर (1 भाग) का पेस्ट बनाकर इसे लगाएं।
   डॉ रामावत https://youtu.be/oCg4of8KY4Q या,
3. बोरिक पाउडर या हल्दी पाउडर और घी का पेस्ट बनाकर मुंह पर लगाएं। या,
4. एलोवेरा जूस (2 भाग) और हल्दी पाउडर (1 भाग) का पेस्ट बनाएं, और लागू करें। या,
5. कैल्शियम हाइड्रॉक्साइड पानी (चुना पानी) के साथ 1 चम्मच नारियल तेल मिलाएं और 3 दिनों के लिए दिन में एक बार जीभ पर रगड़ें।

25. मुंह के बाहर / होंठ / नाक में छाले (Ecthyma / Sore Mouth / Orf)

यह एक वायरल बीमारी है, विशेष रूप से केबल भेड़ और बकरी को प्रभावित करती है। वायरस, मुंह में घावों के माध्यम से प्रवेश करता है जो चराई के दौरान होता है । संक्रमित जानवरों के संपर्क में आने से भी फैलता है। यह किसी भी समय हो सकता है लेकिन मानसून की शुरुआत के दौरान यह बहुत अधिक प्रचलित है।

लक्षण:

1. नाक और मुंह के चारोंओर छाले (स्कैब) जिसके कारण जानवर अपना मुंह खोलके खा नहीं सकता है। होंठों, मुंह और नथुने पर नोड्यूलर विस्फोट पाए जाते हैं, घावों के बाद एक सप्ताह के बाद पपड़ी का गठन होता है आदि
2. मुंह पर खुजली होने से जानवर कठोर सतहों पर चेहरे को रगड़ता रहता है, घाव से खून बहना, सांस लेने में कठिनाई आदि
3. बुखार, लंगड़ापन, भूख की कमी, कमजोरी और वजन घटना, मृत्यु आदि

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. पोटेशियम परमैंगनेट (1 गिलास हल्का गर्म पानी में 1 सरसों का आकार) के साथ मिलाकर घाव को साफ्करें। और,
2. एलोवेरा जूस (2 भाग) और हल्दी पाउडर (1 भाग) का पेस्ट बनाएं, और लागू करें । या,
3. हल्दी पाउडर, मक्खन / घी / तिल / नारियल तेल, बोरिक पाउडर और एक चुटकी हींग की समान मात्रा में मिलाएं, और लागू करें। डॉ रामावत https://youtu.be/W4toZID5vyA या,
4. नीम के पत्तों 50 ग्राम के साथ 25 ग्राम कच्ची हल्दी को पीसकर 10 ग्राम नमक डालकर लगाएं। या,
5. गोल्डन शॉवर (Cassia fistula) पत्तियों के 4-5 पत्तों को खिलाएं और 2-3 दिनों के लिए इस पत्तियों का पेस्ट भी लगाएं। या,
6. हिमैक्स या सोफ्रामाइसिन मरहम या बोरिक पाउडर और मक्खन / घी लागू करें।

26. खुर में घाव (Foot root)

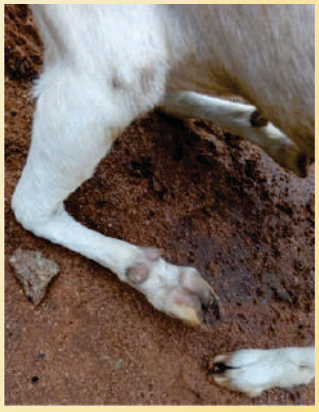

यह एक जीवाणु रोग है, सभी जानवरों को विशेष रूप से बरसात के मौसम में प्रभावित करता है। आमतौर पर, अस्वास्थ्य कर शेड, कठोर / पथरीले असमान फर्श आदि के कारण यह होता है।

लक्षण:

1. खुर- नरम, बदबूदार, गुच्छे-बंद हो जाते हैं और टूट जाते हैं, खूनस्राव, कीड़ा पड़ना आदि और जानवर जमीन पर खुर रखना पसंद नहीं करते हैं।
2. भूख में कमी, वजन, लंगड़ापन आदि।

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. शेड को साफ्रखें । पोटेशियम परमैंगनेट पानी के साथ घाव धोएं। और,
2. सीताफ्ल (Annona squamosa) की 25 ग्राम ताजा पत्तियां लें और 25 ग्राम सूखे तंबाकू (Nicotiana tabacum) पत्तियों के साथ मिलाएं, उन्हें अच्छी तरह से पीस लें और 3 दिनों के लिए दिन में एक बार लागू करें। या,
3. 2 मुट्ठी गुड़ामारी (Gymnema sylvestre) पत्तियों का रस निकालें और 3 दिनों के लिए दिन में एक बार लागू करें। या,
4. 5 ग्राम कपूर को 10 ग्राम हल्दी पाउडर और 20 मिलीलीटर सरसों के तेल के साथ मिलाएं। एक पेस्ट बनाएं और 3-4 दिनों के लिए दिन में एक बार लागू करें। डॉ रामावत: https://youtu.be/va66Y0AcmmM

27. Pink eye / आंख का लाल होना / सफेद आंख (Cloudy eye)

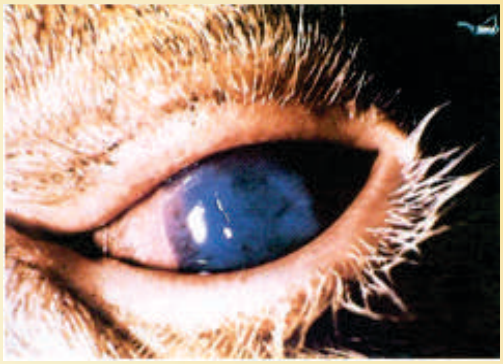

आंखें बहुत नाजुक होती हैं और आसानी से प्रभावित हो जाती हैं। बाहरी कणों, सर्दी, एलर्जी, विटामिन ए की कमी, बुखार आदि के कारण आंखों से विभिन्न प्रकार के पानी के स्राव हो सकते हैं। और पीले-मोटे मवाद जैसे स्राव संक्रमण (निमोनिया, पीपीआर जैसी संक्रामक बीमारियों के कारण होता है। आंखों से खूनस्राव- चोटों, सांप के काटने और एंथ्रेक्स जैसा जहरीली स्थितियों के कारण हो सकता है।

लक्षण:

विभिन्न प्रकार के निर्वहन, आंखों का लाल होना । कॉर्निया, धुंदला और अपारदर्शी हो जाता है जिससे अल्सरेशन और अंधापन होता है। यह विटामिन ए और बी 12 की कमी के कारण, चोट, संक्रमण या अल्सरेशन के कारण हो सकता है।

https://www.youtube.com/watch?v=-rq8dtS1z2o

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. सभी आंखों की समस्याओं के लिए पहले कपास या साफ कपड़े को साफ फिटकरी उपचारित पानी में डुबोकर आंखों को साफ करें। और,
2. सहजन (मोरिंगा ओलीफेरा) या धतूरा या संजीवनी (Tridax procumbens) पत्तों के रस लें, एक चुटकी नमक के साथ मिलाएं और दिन में दो बार आंखों में 2 दिनों के लिए लगाएं। या,
3. शुद्ध शहद की 2-3 बूँदें, दिन में दो बार 2 दिनों के लिए लागू करें। या,
4. संजीवनी (Tridax procumbens) की एक मुट्ठी पत्तियों की रस निकालें और 3 दिनों के लिए दिन में दो बार आंखों में लागू करें। या,
5. प्रभावित आंख को सुबह सामान्य खारे पानी से धोएं और बोरिक एसिड पाउडर लगाएं । शाम को, फिर से धोएं और पेंडिस्ट्रिन एसएच मरहम (Pendistrin SH Ointment) लागू करें, इसे 3-4 दिनों तक दोहराएं।

डॉ रामावत https://youtu.be/qwOa7fKP95o

भाग 4 : ऐसा रोग जिसके लिए टीकाकरण आवश्यक है

28. बकरी प्लेग (PPR)

यह केवल बकरी और भेड़ों की सबसे घातक और आमतौर पर होने वाली जानलेवा वायरल बीमारी है।

लक्षण:

1. तेज बुखार, मुहं में छाले और होंठो/थूथन में नोडुलर घावों का बनना, बदबूदार पानी के दस्त । और,
2. आंखों का लाल होना, आंखों, नाक और मुंह से पानी का निर्वहन जो बाद में गाढ़ा और पीला हो जाता है, कठिन साँस लेना, खाना न खाना, गर्भपात, मृत्यु आदि होता है।

Symptoms by Dr Ramawat:
https://www.youtube.com/watch?v=Q9lqfPtRqC8

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार (जीवित रहने की बहुत कम संभावना):

1. नियमित टीकाकरण (1 मिलीलीटर) एक साल में एक बार, संक्रमित जानवरों को अलग करना। और,
2. **मुंह के छाले के लिए इलाज:** पोटेशियम परमैंगनेट पानी (1 गिलास पानी के साथ 1 सरसों के बीज का आकार) के साथ मुंह धोएं। बोरिक पाउडर या हल्दी पाउडर और घी का पेस्ट बनाकर मुंह पर लगाएं या एलोवेरा जूस (2 भाग) और हल्दी पाउडर (1 भाग) का पेस्ट बनाएं और लागू करें। और,
3. **बुखार के लिए इलाज:** तुलसी के पत्तों (Ocium sanctum) के 20 ग्राम, काली मिर्च के 2 ग्राम, 50 ग्राम प्याज सभी को एक साथ पीस लें और एक बोलस बनाएं, और तीन दिनों के लिए दिन में एक बार खिलाएं। और,
4. **दस्त के लिए उपचार करें:** 50 ग्राम हर्रा (Terminalia chebula) पाउडर को 50 ग्राम दही के साथ मिलाएं और 2 दिनों के लिए दिन में दो बार खिलाएं य यह सभी प्रकार के दस्त के खिलाफ बहुत प्रभावी है। या, 1 मुट्ठी भर नीम (Azadirachta indica) के पत्तों से रस निकालें, 50 ग्राम दही के साथ दिन में एकबार खीलाएं, 3 दिनों के लिए।

29. फडकीयां बीमारी (Enterotoxaemia / ई.टी.) - चक्कर लक्षण

यह केवल बकरी और भेड़ों का जीवाणु रोग है। जीवाणु मिट्टी और जानवरों की आंतों में रहते हैं। मुख्य कारण: लंबी समय भुख के बाद, एका-एक समय में दूध का अत्यधिक सेवन या हरे चारे खाना। इसलिए, इसे "ओवर ईटिंग" बीमारी भी कहा जाता है। अत्यधिक स्टार्च का सेवन, जीवाणु का मात्रा बढ़ता है और विषाक्त पदार्थों का उत्पादन करने के लिए एक आदर्श वातावरण पेट में बनाता है । ये विषाक्त पदार्थ, आंतों द्वारा अवशोषित होते हैं और खून प्रवाह में प्रवेश करते हैं और मस्तिष्क, गुर्दे आदि जैसे अंगों को प्रभावित करते हैं।
कई किसान, मेमने को दिन में दो बार, सुबह और शाम खिलाने की अनुमति देते हैं । खिलाने में लंबे अंतराल के कारण, मेमने बेहद भूखे होते हैं और एक समय में बहुत सारे दूध पीते हैं, जो जीवाणु के मात्रा बढ़ाने में मदत करता हैं, और इस तरह ई.टी. बीमारी विष के उत्पादन के परिणामस्वरूप होते हैं।

** चक्कर लगाने के लक्षण दस बीमारियों के कारण हो सकते हैं जैसे 1) ट्रिपैनोसोमियासिस 2) गीड 3) एंटरोटोक्सियामिया 4) लिस्टेरियोसिस 5) इंसेफेलाइटिस 6) पोलियोएन्सेफेलोमेलेसिया 7) ग्रास टेटनी 8) अफारा 9) कीटोसिस और 10) बेशरम के पत्ते खाने से।
डॉ रामावत: https://www.youtube.com/watch?v=YVMaI_GYRYU

लक्षण:

पेट में तेज दर्द, पेट की लात मारना; चक्कर-असमन्वय चाल, गिर जाना और साइकिल चलाना जैसा पैर को घुमाना, बदबूदार दस्त, ऐंठन, आंखों बाहर आना। डॉ रामावत: https://youtu.be/9xTUk9wVD-k

पोस्टमॉर्टम से पेट और आंत के अंदर एक पीले रंग के तरल पदार्थ का पता चलता है, गुर्दे फूल जाना आदि

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. जानवरों को ज्यादा मात्रा में हरा चारा खिलाने की अनुमति न दें, बल्कि सूखे और हरे चारे का एक संयोजन खिलाएं। मेमने को 2 सप्ताह तक मां के साथ रखें और वांछित रूप में दूध (दिन में लगभग 4-5 बार), थोडा-थोडा कर के पिलाएं। और,
2. वर्ष में दो बार सभी जानवरों को टीका लगाएं (खुराक - 2 मिलीलीटर सब-कट), गर्भवती बकरियों को विशेष रूप से 4 महीने के अंत में, मेमने (2 महीने की उम्र) के लिए टीकाकरण करने के बाद, बूस्टर खुराक 14 दिन में दोहराया जाना चाहिए। और,

3. बेकिंग सोडा तुरंत दें (1 ग्राम प्रति 2 किलो बॉडी वेट पर), फिर 3 कप सामान्य दूध-चाय बनाएं, 1 प्याज और लहसुन की 5 पंखुड़ियों को पीस लें और चाय के साथ मिलाएं और जितनी जल्दी हो सके पिलाएं।
डॉ रामावत: https://youtu.be/FW-JidMF3hE

**एंटरोटॉक्सिमिया प्रकार डी के लिए कोई उपचार नहीं है, क्योंकि जानवर आमतौर पर मृत पाए जाते हैं।

30. पॉक्स/चेचक (बकरी / भेड़ और गाय)

यह एक वायरल बीमारी है, जो मुख्य रूप से भेड़ / बकरियों को प्रभावित करती है और वर्ष के किसी भी समय हो सकती है। यह अत्यधिक संक्रामक है और जानवर-मानव से एक दुसरे के संपर्क से फैलता है। बकरी / भेड़ और गाय के लिए अलग-अलग वायरस हैं।

लक्षण:

1. बुखार; थन, चेहरे, जांघ के अंदर पर निशान/फफोड़ा; मुंह और पाचन तंत्र के अंदर घावों से जानवरों को खाना आदि मुश्किल हो जाता है
2. मुंह, नाक और आंखों से पानी; मवाद के साथ सूजी हुई आँखें; कठिन साँस लेना, आदि

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार (सफलता की कम संभावना):

1. जानवरों को अलग करना; नियमित टीकाकरण (एक साल में एक बार, 1 मिलीलीटर सब-कट)।
2. दूध निकालने वालों को संक्रमित जानवर का दूध निकालने से पहले अपने हाथों को अच्छी तरह से धोना चाहिए। गैर-संक्रमित जानवरों को पहले दूध निकाले और फिर प्रभावित जानवर को। और,
5. **बुखार के लिए इलाज:** तुलसी के पत्तों (Ocium sanctum) के 20 ग्राम, काली मिर्च के 2 ग्राम, 50 ग्राम प्याज सभी को एक साथ पीस लें और एक बोलस बनाएं, और तीन दिनों के लिए दिन में एक बार खिलाएं। और,
6. पॉक्स घावों पर इनमें से किसी को भी लागू करें: एलोवेरा रस (2 भाग) और हल्दी पाउडर (1 भाग) का पेस्ट बनाएं, और नीम का तेल या हिमैक्स मरहम लागू करें।

31. टेटनस (धनु, बंद जबड़े)

Tetanus
Note the characteristic tail position.

यह एक घातक बीमारी है जो जीवाणु के कारण होती है, जो आमतौर पर मिट्टी में पाई जाती है। जंक लगे काँटों या ब्लेड के कारण घावों के परिणामस्वरूप टेटनस हो सकता है। टेटनस जीवाणु मिट्टी के माध्यम से घावों में प्रवेश करते हैं और खूनप्रवाह तक पहुंचते हैं और अंत में न्यूरोटॉक्सिन पैदा करते हैं। तंत्रिकाएं इन विषाक्त पदार्थों को अवशोषित करती हैं जिसके परिणामस्वरूप टेटनस होता है।

लक्षण:

मांसपेशियों की कठोरता/संकुचन (गर्दन, पैर और संक्रमित घावों के क्षेत्र अदि), खड़े कान, बंद जबड़े की स्थिति, पसीना, धनुषाकार पीठ की स्थिति, तीसरी पलक का प्रोलैप्स, उच्च तापमान, तेजी से साँस लेना आदि

डॉ रामावत द्वारा बकरी में लक्षण https://youtu.be/asPGMfKM2AY

और गाय/बैल में लक्षण https://www.youtube.com/watch?v=0F-cRPfEaQA

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. जानवरों को नियमित रूप से टीका लगाना (0.5 ml); मनुष्यों के लिए उपयोग किए जाने वाले एक ही टीके का उपयोग जानवरों के लिए भी किया जाता है। और,
2. जंक लगे काँटों, ब्लेड का उपयोग करने से बचें। घाव को पानी से साफ किया जाना चाहिए और एंटी टिटनेस वैक्सीन लगाना चाहिए। और,
3. 1 मुट्ठी भर ईश्वरामूली (Aristolochia indica) के पत्तों को पीसें, 500 ml किण्वित चावल के पानी में मिलाकर पिलाएँ, 5-7 दिनों तक दोहराएं।

32. एंथ्रेक्स

यह श्वसन और संचार प्रणालियों का संक्रामक रोगों का एक हिस्सा है, जो जीवाणु के कारण होता है।
एंथ्रेक्स मनुष्य सहित सभी प्रजातियों को प्रभावित करता है। यह बेहद खतरनाक बीमारी है। एंथ्रेक्स जीवाणु, हवा के संपर्क में आने पर "बीजाणुओं" का निर्माण करते हैं, जो मिट्टी में कई वर्षों तक रहते हैं। रोग का प्रकोप आमतौर पर तब होता है जब मिट्टी में बीजाणु कुछ सुहाना परिस्थितियों में गुणा करना शुरू कर देते हैं और जब जानबर ऐसे क्षेत्रों में चरते हैं, सभी जानवर संक्रमित हो जाते हैं।

लक्षण:

1. तेज बुखार, सांस लेने में तकलीफ़ कांपना, ऐंठन, जानवर ढह जाता है
2. कान, मुंह, नाक, गुदा और योनि से खून (काला खून) बहना, खून का थक्का नहीं बनता है
3. मृत्यु के बाद जानवर का शरीर तेजी से फूलता है और तेजी से शरीर अपघटन होता है

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. एंथ्रेक्स टीकाकरण बारिश के मौसम से लगभग 1 महीने पहले किया जाना चाहिए
2. यदि कोई मृत जानवर में प्राकृतिक छिद्रों से खूनस्राव दिखता है, तब - न तो पोस्टमॉर्टम करना है, न ही शव को कसाई को बेचना है, बल्कि बीजाणु गठन को रोकने के लिए शव को पूरी तरह से जला देना है।

33. खुर पका और मुंह पका रोग (FMD)

यह सभी प्रकार जानवरों को प्रभावित करता है और विशेष रूप से डेयरी किसानों के लिए बहुत आर्थिक नुकसान का कारण बनता है क्योंकि इसके परिणामस्वरूप स्तनपान कराने वाले जानवरों में दूध उत्पादन में बड़ी गिरावट आती है। यह आमतौर पर साल में दो बार जनबरी / फरवरी और सितंबर / अक्टूबर के बीच होता है। यह बीमारी एक वायरस के कारण होती है जो हवा और संपर्क के माध्यम से फैलता है।

लक्षण:

1. फफोले - पैर, मुंह, थन, नाक, थूथन जबड़ा, जीभ, पूरे पाचन तंत्र जैसे शरीर के हिस्से के अंदर; अत्यधिक लार टपकना और खाने में असमर्थता मृत्यु का कारण बनता है
2. तेज बुखार, नाक से पानी आना, गर्भपात, दूध की पैदावार में कमी, कमजोरी और वजन में कमी, सांस लेने में कठिनाई आदि

डॉ रामावत: https://youtu.be/iELVpEbw4x8

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. वर्ष 2030 तक एफएमडी के उन्मूलन के लिए, अधिकांश राज्यों में, एनएडीसीपी कार्यक्रम मिशन मोड में शुरू किया जा रहा है। अपने क्षेत्र में बीमारी की शुरुआत से पहले, वर्ष में दो बार टीकाकरण करवायें। और,
2. पशु शेड के फर्श पर चूने के पाउडर को छिड़कना चाहिए । प्रभावित जानवर को दूसरों से अलग किया जाना चाहिए। और,
3. **बुखार के लिए इलाज:** तुलसी के पत्तों (Ocium sanctum) के 20 ग्राम, काली मिर्च के 2 ग्राम, 50 ग्राम प्याज सभी को एक साथ पीस लें और एक बोलस बनाएं, और तीन दिनों के लिए दिन में एक बार खिलाएं। और,

मुंह में घावों के लिए इलाज करें: एलोवेरा जूस (2 भाग) और हल्दी पाउडर (1 भाग) का पेस्ट बनाएं, और लागू करें। और,
खुर में घावों के लिए इलाज करें: हल्दी पाउडर घी के साथ मिलाएं या नीम की मुट्ठी भर पत्तियों को एक साथ पीसलें+ सीताफल (Annona sqamosa) + तुलसी मिश्रण एक चुटकी नमक के साथ मिलाएं, और जब तक घाव ठीक नहीं हो जाता, एक बार दैनिक रूप से लागू करें।
डॉ रामावत https://youtu.be/kVoL62qgsPc

34. गला घोटू (एच एस)

Buffalo calf clinically affected with HS

यह सभी जानवरों, विशेष रूप से गाय/बैल/भैंस को बारिश के मौसम को प्रभावित करता है य इसके अलावा, अप्रत्याशित बेमौसम बारिश, मौसम में अचानक परिवर्तन आदि के दौरान होता है य यह एक जीवाणु रोग है जो फेफड़ों और खून को प्रभावित करता है।

लक्षण:

1. तेज बुखार, सांस लेने में कठिनाई, गंभीर सर्दी और खांसी, अत्यधिक लार टपकना और नाक का निर्वहन
2. बड़े जुगाली करने वालों में गले और गर्दन के क्षेत्र में सूजन
3. भूख की कमी, अंतिम चरणों में जीभ चिपक जाती है और जानवर अचानक मर सकता है

** गाय, बैल की पांच महत्वपूर्ण बीमारी (Rinderpest, HS, Anthrax, BQ, FMD)
डॉ रामावत द्वारा: https://www.youtube.com/watch?v=GEBmaP6SfUs

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. अपने क्षेत्र में बीमारी की शुरुआत से पहले, वर्ष में दो बार टीकाकरण।
2. **बुखार के लिए इलाज:** तुलसी के पत्तों (Ocium sanctum) के 20 ग्राम, काली मिर्च के 2 ग्राम, 50 ग्राम प्याज सभी को एक साथ पीस लें और एक बोलस बनाएं, और तीन दिनों के लिए दिन में एक बार खिलाएं। और,
3. **आयुर्वेदिक उपचार:** 10 ग्राम कैफेलॉन पाउडर + 10 ग्राम हिमालय बाटीसा + 10 ग्राम गुड मिलाएं, बोलस बनाएं और 3 दिनों के लिए दिन में दो बार खिलाएं।

35. लंगड़ा बुखार (ब्लैक क्वार्टर BQ, Black leg)

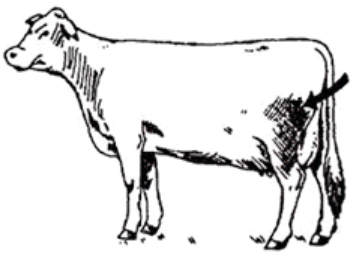
Swelling on legs

यह सभी जानवरों, विशेष रूप से गाय/बैल/भैंस को बारिश के मौसम को प्रभावित करता है। इसके अलावा, अप्रत्याशित बेमौसम बारिश, मौसम में अचानक परिवर्तन आदि के दौरान होता है। यह बीमारी आमतौर पर युवा जानवरों को प्रभावित करती है जो अच्छी स्थिति और स्वस्थ हो।

लक्षण:

1. **प्रारंभिक चरण में:** बुखार, भूख और प्यास की कमी, एक पैर में लंगड़ापन (या तो अगला या पिछला), जानवर पैर उठाता है और इसे जमीन पर नहीं रखता है।
2. **शेष चरण में:** उच्च बुखार, प्रभावित क्षेत्र (आमतौर पर जांघ और कंधे) में मांसपेशियों में सूजन, सूजन क्षेत्र में हवा के बुलबुले त्वचा के नीचे महसूस किए जा सकते हैं जो एक क्रैकलिंग ध्वनि बनाते हैं, यदि जानवर नीचे गिरता है तो यह उठने में असमर्थ आदि। Agvid: https://www.youtube.com/watch?v=6PfP2qWzc5c

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. बीक्यू टीकाकरण मानसून से 1 महीने पहले

भाग 5 : अंत-परजीबी/क्रीमी संक्रमण के कारण होने वाले रोग

विस्तृत जानकारी https://youtu.be/Z83Zw09gYq0

36. नेमाटोड (गोल-क्रीमी, Hookworms, Hemonchosis, Ascariosis)

कई अलग-अलग प्रकार के नेमाटोड हैं। पेट और आंत में मौजूद राउंडवर्म्स की विभिन्न प्रजातियां अंडे देती हैं, जो मल के माध्यम से बाहर निकलती हैं। फिर अंडे, लार्वा हैच करते हैं और अंत में घास पर संलग्न होते हैं । इस संक्रमित घास पर चराई करते समय जानवर लार्वा को निगलते हैं, जो एक बार फिर शरीर में प्रवेश करते हैं। इनको, अपने जीवन चक्र को पूरा करने के लिए लगभग 21 दिनों की आवश्यकता होती है।

लक्षण:

1. भूख की कमी, कमजोरी, वजन में कमी, रूखी और सूखी त्वचा
2. पेट, दाएं और बाएं दोनों तरफझूल जाता है (पॉट बेली)
3. पलकों/आँख के अंदर पीलापन, मांस पीला पड़जाना
4. कब्ज के साथ बारी-बारी से दस्त (गाय के गोबर की तरह) होता है, भारी मात्रा में कीड़े के परिणामस्वरूप आंतों में रुकावट हो सकती है (अक्सर भैंस के बछड़ों में होता है)
5. खनिजों और विटामिन में कमी के कारण, जानवर चप्पल, प्लास्टिक बैग आदि खा सकता है

Access Agriculture: https://www.youtube.com/watch?v=NXZEAHkAmQ8

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. हर समय एक ही चराई भूमि पर एक ही जानवरों को चराएं नहीं (लगभग 4 महीने के बाद ही मूल क्षेत्र में वापस आने की कोशिश करें) । नियमित रूप से शेड को साफकरें, भीड़ से बचें। और,
2. Albendazole / Fenbandazole जैसी दवाओं का उपयोग करके नियमित रूप से (वर्ष में 4 बार) कृमिकरण करें गर्भवती बकरी के लिए, केबल fenbendazole का उपयोग करें और गर्भावस्था के पहले और अंतिम महीने में कृमिनाशक न करें। 7 किलो बॉडी वेट के लिए हींग 1 ग्राम दें।

   डॉ रामावत: https://www.youtube.com/watch?v=l291ZdEYDKo और,
3. 25 ग्राम चिरैता/भुइनीम (Andrographics paniculata) पाउडर को 10 ग्राम कच्ची हल्दी और काली मिर्च के 10 पिस के साथ मिलाएं, बोलस बनाएं और 3 दिनों के लिए दिन में एक बार खाली पेट खिलाएं। या,
4. 25 ग्राम कुटाजा (Holarrhena antidysenterica) की छाल को 10 ग्राम कच्ची हल्दी और काली मिर्च के 10 पिस के साथ पीसकर बोलस बनाएं और 3 दिनों के लिए दिन में एक बार खाली पेट खिलाएं। या,
5. एलोवेरा का रस 50 मिलीलीटर, महीने में एक बार दें।

   DG द्वारा : https://www.youtube.com/watch?v=hIgp9 8-78U

37. सिस्टोड / Cestodes (फिताकृमी, फेफड़ों/Lungs के कीड़े):

एक लंबे-चेपटा कृमि जिसका छोटा सा सिर (हुक और चूसने वाले) होता है और "छोटी आंतों" में रहता है । बड़ी संख्या में अंडे विकसित होते हैं और मल के माध्यम से जमीन पर गिरते हैं। ये किसी भी मध्यस्थ मेजबान जैसे चींटियों या अन्य किट द्वारा खाए जाते हैं जो पौधों की जड़ों पर रहते हैं। मध्यस्थ मेजबान के अंदर अंडे हैच करते हैं और बढ़ते हैं। जब जानवर ऐसे संक्रमित पौधों पर चरते हैं, इन मध्यस्थ मेजबानों को चारा के साथ खाया जाता है और जीवन चक्र फिर से शुरू होता है।

लक्षण:

1. भूख की कमी, कमजोरी, वजन में कमी, रूखी और सूखी त्वचा
2. पलकों के अंदर, मसूड़े, जीभ पीली होती है
3. अक्सर मल में चावल जैसे क्रीमी-खंड देखे जाते हैं। ये कृमि खंड में पाए जाने वाले अंडे हैं।
4. कभी-कभी दस्त हो जाते हैं।

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार : ऊपर जैसा बताया गया, आल्बेन्डा जल के बदले में पेन्टास देना है ।

38. ट्रिमाटोड/Trematodes (लीवर फ्लुक्स / Bottle jaw, Paramphistomes)

ये पत्ते के आकार के, फ्लैट क्रीमी हैं, जो जानवर के कलेजी में रहते हैं। जानवर के कलेजी में मौजूद वयस्क कलेजी-फ्ल्यूक, अंडे देता है, जो मल के माध्यम से बाहर निकलता है। ये अंडे हैच होते हैं और लार्वा बाहर निकल आते हैं। घोंघे जो चरागाहों में और जल निकायों के पास रहते हैं, मध्यस्थ मेजबान हैं जो फ्लुक्स को फैलाने में मदद करते हैं। ये घोंघे में प्रवेश करते हैं और आगे विकसित होते हैं और गुणा करते हैं। घोंघे से एक परिपक्व लार्वा निकलता है और पत्तियों से जुड़ता है जो चराई के दौरान जानवरों द्वारा निगला जाता है। परिपक्व लार्वा जानवर के पेट में प्रवेश करते हैं और अंत में कलेजी तक पहुंचते हैं, जहां वे जानवर के खून को चूसकर रहते हैं।

लक्षण:

1. भूख की कमी, कमजोरी, वजन में कमी, रूखी और सूखी त्वचा
2. पलकों के अंदर, मसूड़े, जीभ पीली होती है
3. तीव्र एनीमिया और प्रोटीन की कमी के परिणामस्वरूप, जबड़े (बोतल जबड़े) के नीचे एडिमा होती है जहां पानी जैसा तरल पदार्थ इकट्ठा होता है, जो दिन के दौरान दिखाई देता है और फिर रात में कम हो जाता है जब जानवर लेट जाता है.
   रामावत: https://youtu.be/opl_Wa4vI8g

4. एडिमा में उंगली दबाने पर गड्ढा बना रहता है और कुछ समय के लिए गड्ढा दिखाई देता है।
5. बार-बार दस्त (गाय के गोबर की तरह)

** Bottle jaw, टी.आर.पी. बीमारी के साथ भ्रमित हो सकता है, डॉ उमर द्वारा: https://youtu.be/yQbVLWtKO9g

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. पानी के स्थिर पूल के पास जानवरों को चराएं नहीं जहां कई घोंघे हैं। और,
2. सुबह खाली पेट में नीलजान या फास्निल कृमिनाशक सिरप (प्रति 3 किलो शरीर के वजन में 1 मिलीलीटर) केवल एक बार दें। लिव-52, 1 मिलीलीटर प्रति 5 किलो बॉडी वेट रोजाना 10 दिन तक दें। गर्भवती बकरी के लिए, गर्भावस्था के पहले और अंतिम महीने में कृमिनाशक से बचें। 7 किलो बॉडी वेट के लिए हींग 1 ग्राम दें।
   डॉ रामावत: https://www.youtube.com/watch?v=l291ZdEYDKo |. और,
3. 25 ग्राम चिरैता/भुइनीम (Andrographics paniculata) पाउडर को 10 ग्राम कच्ची हल्दी और काली मिर्च के 10 पिस के साथ मिलाएं, बोलस बनाएं और 3 दिनों के लिए दिन में एक बार खाली पेट खिलाएं। या,
4. 25 ग्राम कुटाजा (Holarrhena antidysenterica) की छाल को 10 ग्राम कच्ची हल्दी और काली मिर्च के 10 पिस के साथ पीसकर बोलस बनाएं और 3 दिनों के लिए दिन में एक बार खाली पेट खिलाएं। या,
5. एलोवेरा का रस 50 मिलीलीटर, महीने में एक बार दें। DG द्वारा https://www.youtube.com/watch?v=hIgp9 8-78U

भाग 6 : त्वचा रोग और बाहरी-परजीबी संक्रमण:

39. टिक्स (चिच्चड) और जूँ - Ectoparasites

टिक्स, जानवरों / पक्षियों की त्वचा से जुड़ते हैं और प्रति दिन प्रति टिक 1/3 मिलीलीटर खून चूसते हैं। यदि बहुत अधिक टिक हैं तो यह गंभीर एनीमिया का कारण बन सकता है और बेबिसयोसिस, थिलेरियासिस, स्पाइरोकेटोसिस आदि जैसी बीमारियों का कारण बन सकता है।

Dr Atheya https://youtu.be/Bt1U-lqE-HQ

जूँ टिक जैसे छोटे जीव हैं और आमतौर पर पोल्ट्री और भैंसों में देखे जाते हैं।

लक्षण:

विशेष रूप से बाल-रहित भागों में पूरे शरीर में बड़ी संख्या में टिक देखे जाते हैं, जानवर लगातार खुद को खरोंचते हैं, बेचैन होते हैं, पक्षी लगातार खुद पर चोंच मारते हैं, पक्षी रात में असहज होते हैं क्योंकि टिक्स आमतौर पर रात के समय पक्षियों पर रहते हैं, वजन घटने, कमजोरी का संकेत आदि

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. शेड और उसके आसपास के क्षेत्र को साफ रखें । सीताफल के पत्तों या भुई कदम्ब (Sphaeranthus indicus) का एक गुच्छा शेड में 3 दिनों के लिए लटकाएं, हर दिन एक ताजा गुच्छा लटकाएं और पिछले गुच्छा को शेड में जलाकर धुआं दें। या, नियमित रूप से निम्नलिखित में से किसी भी पत्ते के साथ शेड में जलाकर धुआं दें - तम्बाकू / तुलसी / सिन्द्वार/ सीताफल / नीम / लेमन ग्रास आदि। और,
2. नीम की पत्तियों को पानी में उबालें और धूप वाले दिन के दौरान जानवरों को रगड़ कर स्नान कराएं। और,
3. 10 ग्राम हल्दी पाउडर और कपूर के 2 पिस को 100 मिलीलीटर सरसों के तेल के साथ मिलाएं और लागू करें।
   डॉ रामावत https://youtu.be/R3vR8x_EgQs या,
4. **इन तेलों को लें:** 25 मिली नारियल, 25 मिलीलीटर करंज (Derris indica), 25 मिलीलीटर नीम। इसे 25 ग्राम सल्फर पावडर और 5 ग्राम कपूर के साथ मिलाएं और दिन में दो बार लागू करें । या,
5. तंबाकू, सीताफल के पत्तों को पीसकर शरीर पर लगाएं, दिन में एक बार 2-3 दिनों के लिए । या,
6. सूखे तंबाकू के पत्तों को रात भर भिगो दें, इस पानी में नमक मिलाएं और जानवरों के शरीर पर रगड़ें।

40. Mites / घुन संक्रमण (Mange / scabis / चर्म रोग)

घुन छोटे जीव हैं जो नग्न आंखों के लिए अदृश्य हैं, व त्वचा में घुस जाते हैं और त्वचा को काटते हैं। वे सभी जानवरों को प्रभावित करते हैं, लेकिन बकरियां और कुत्ते अधिक संवेदनशील होते हैं। पक्षियों में भी, घुन खून चूसते हैं। अस्वास्थ्यकर परिवेश, कुपोषण, आंतरिक कीड़े और कमजोरी आदि जानवरों में चर्म रोग होने में महत्वपूर्ण कारक हैं।

लक्षण:

गंभीर खुजली / खरोंच, पक्षियों को लगातार खुद को चोंच मारना, बेचैनी, त्वचा पर लाल खून का धब्बा / स्कैब गठन आदि के बाद जीवाणु संक्रमण का कारण बन सकता है

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. शेड और उसके आसपास के क्षेत्र को साफ रखें। और,
2. 30 ग्राम पाउडर सल्फर के साथ 100 मिलीलीटर इस्तेमाल किए गए इंजन तेल को मिलाएं, और दिन में एक बार संक्रमित क्षेत्रों पर लगाएं । या,
3. इन तेलों को लें - 250 मिली नारियल, 25 मिलीलीटर करंज (Derris indica), 25 मिलीलीटर नीम। इसे 25 ग्राम सल्फर पावडर, कपूर के 5 पिस के साथ मिलाएं और दिन में दो बार लागू करें। या,
4. 50 ग्राम कच्ची हल्दी लें, 25 मिलीलीटर नीम के तेल, 5 पिस कपूर के साथ मिलाएं और दिन में एक बार 3-4 दिनों के लिए लागू करें या,
5. सूखे अदरक, कच्ची हल्दी और लहसुन के प्रत्येक 50 ग्राम को एक साथ पीसें, एक पेस्ट बनाएं और दैनिक रूप से एक बार लागू करें।
6. **बाल न झड़ने के लिए:** Ivermectin 25 मिलीग्राम की 1 गोली (25 किलोग्राम शरीर के वजन के लिए) + फ्लुकोनाज़ोल की 1 गोली 150 मिलीग्राम, 2-3 सप्ताह के लिए एक सप्ताह में एक बार दें।
   डॉ रामावत https://www.youtube.com/watch?v=Mpiv_5hg4Q
7. **त्वचा रोग के लिए:** हल्के पोटेशियम परमैंगनेट घोल के साथ प्रभावित स्थानों को अच्छी तरह से धोएं। इंजेक्ट Ivermectin इंजेक्शन, 0.5 मिलीलीटर अगर 20 किलो शरीर के वजन से कम है, अन्यथा 1 मिलीलीटर सब-कट। इसके अलावा 10 ग्राम खनिज मिश्रण के साथ 10% ग्लाइसिन चेलेटेड (Glycine Chelated) zinc 2 ग्राम, 7-10 दिनों के लिए दें।
   डॉ रामावत: https://www.youtube.com/watch?v=77xOHCn_-xQ

** खुजली एक अत्यधिक संक्रामक, ज़ोनोटिक बीमारी है और मनुष्यों को भी संक्रमित कर सकती है। अपने नंगे हाथ से संक्रमित हिस्से को छूने से बचें।

41. दाद (फंगल संक्रमण, बालों का झड़ना)

जहां मौसम गीला और आर्द्र होता है वहाँ, विभिन्न प्रकार के कवक त्वचा को प्रभावित कर सकते हैं। कुपोषण, आंतरिक कीड़े, अस्वास्थ्यकर परिवेश, एंटीबायोटिक दवाओं का अत्यधिक प्रयोग आदि कवक का बढ़ौतरी के लिए अनुकूल परिस्थितियों बना सकते हैं

Ringworm
Goat skin with alopecia and crusting.

लक्षण:

बालों के बिना त्वचा, बाल गिरजाते हैं, प्रभावित क्षेत्र पर लाल / काले धब्बे, संक्रमित क्षेत्र मोटा और सूजन आदि हो जाता

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. जानवर और उसके आसपास के क्षेत्र को साफरखें। और,
2. इन तेलों को लें: 25 मिली नारियल, 25 मिलीलीटर करंज (Derris indica), 25 मिलीलीटर नीम। इसे 25 ग्राम सल्फर पावडर और 5 ग्राम कपूर के साथ मिलाएं और दिन में दो बार लागू करें । या,
3. एक मुट्ठी चाकुंडा (Cassia tora) के पत्तों को पीस लें और पेस्ट को दिन में एक बार, 5 दिनों के लिए लागू करें। या,
4. इमली के 50 ग्राम गूदे को 200 मिलीलीटर पानी के साथ मिलाएं, भुई नीम/चिरैता पाउडर 10 ग्राम और काली मिर्च के 10 पिसे हुए बीज डालें, दिन में एक बार 3 दिनों के लिए खिलाएं।

बाल न झड़ने के लिए:

1. Ivermectin 25 मिलीग्राम की 1 गोली (25 किलो शरीर के वजन के लिए, 7 दिनों के बाद एक बार फिर से दोहराएं) + खाली पेट में 2-3 सप्ताह के लिए सप्ताह में एक बार फ्लुकोनाज़ोल 150 मिलीग्राम की 1 गोली दें।
   डॉ रामावत द्वारा https://www.youtube.com/watch?v=Mpiv_5hg4QI या,
2. Hitek vml प्रति 4 किलो शरीर के वजन, केवल एक बार दे। रुमज़िन पाउडर 5 ग्राम प्रति दिन और Sharkaferrol 5 मिलीलीटर प्रति दिन 5-7 दिनों के लिए दें। डॉ रामावत https://youtu.be/J5K8hc5j4rE

42. लम्पी स्किन / Lumpy skin (ढेलेदार त्वचा)

लक्षण:

त्वचा पर धब्बेदार सूजन।
डॉ रामावत: https://www.youtube.com/watch?v=_BbNAIUyGrk

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. पोटेशियम परमैंगनेट (पीपी) घोल और फिनाइल के स्प्रे के साथ पशु शेड और परिवेश को कीटाणुरहित करें (10 लीटर पानी में 5 ग्राम पीपी + 100 मिलीलीटर फिनाइल मिलाएं)। और,
2. 50 मिलीलीटर नीम का तेल + 25 ग्राम हल्दी पाउडर + कपूर 5 पिस लें, पेस्ट बनाएं और प्रभावित त्वचा पर दैनिक रूप से एक बार लागू करें। इसके अलावा, काढ़ा बनाएं: 10 ग्राम अदरक + 50 ग्राम गिलोय + 20 ग्राम तुलसी के पत्ते + 5 पिस लौंग + 20 पिस काली मिर्च लें। इसे 1 लीटर पानी में तब तक उबालें जब तक कि यह आधा लीटर न हो जाए और 4-5 दिनों के लिए दैनिक रूप से एक बार पिलाएं। ** ध्यान दें कि, यह गर्भवती जानवरों को नहीं दिया जाता है।
   डॉ रामावत: https://youtu.be/YZvCf2Rq754 । या,
3. **गाय, बैल के लिए:** पान के 10 पत्ते, 20 पिस काली मिर्च को पीसें और 10 ग्राम नमक और 50 ग्राम गुड के साथ मिलाएं. दिन में तीन बार दें। NDDB: https://youtu.be/tgldV868VE8

भाग 7 : प्रोटोजोआ जनित रोग

43. खुनी-दस्त (Coccidiosis)

यह सभी जानवरों, खासकर युवा उम्र के दौरान, में दस्त के सबसे आम कारणों में से एक है य यह विशेष रूप से पाया जाता है, जब जानवरों को स्टाल-फीडिंग में रखा जाता है। Coccidiosis प्रोटोजोआ रोग है, जो प्रभावित जानवरों के गोबर के संपर्क में आने से भोजन और पानी के माध्यम से फैलता है.

लक्षण:

युवा जानवरों को इस बीमारी अधिक होता है, दस्त में खून और श्लेष्म, दस्त मोटी और गाढ़ा होना, बहुत अधिक कमजोरी हो जाने के कारण जानवर अन्य बीमारियों के लिए अतिसंवेदनशील हो जाते हैं आदि

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. शेड की स्वच्छता बनाए रखें, ओ.आर.एस. पानी अधिक पिलाएं. PD: https://youtu.be/BxrVh3v4OPE
2. 50 ग्राम हर्रा (Terminalia chebula) पाउडर को 50 ग्राम दही के साथ मिलाएं और दिन में दो बार, 2 दिनों के लिए खिलाएं। यह सभी प्रकार के दस्तों के खिलाफ बहुत प्रभावी है । या,
3. प्रत्येक कुटाजा (Holarrhena antidysenterica) और महुआ (Madhuca indica) के पेड़ की 20 ग्राम ताजा छाल को पीस लें, 20 ग्राम हल्दी के साथ मिलाएं और बोलस बनाएं, दिन में दो बार 3 दिनों के लिए खिलाएं । या,
4. नेब्लॉन: 10 ग्राम पाउडर 50 मिलीलीटर चावल के पानी / दही के साथ मिलाएं, 2 दिनों के लिए दिन में दो बार दें।

44. खुनी-पेशाब / Babesiosis (Red water, Tick fever)

यह सभी जानवरों को प्रभावित करने वाली एक महत्वपूर्ण प्रोटोजोआ बीमारी है । यह मुख्य रूप से एक सफ्ट-टिक जनित रोग है और संक्रमित टिक्स के काटने से स्वस्थ जानवर में फैलता है। जब एक संक्रमित टिक, जानवर के खून को चूसता है, तो टिक की लार के माध्यम से प्रोटोजोआ जानबर के खून प्रवाह में घुल जाता है और हीमोग्लोबिन को तोड़ते हुए लाल खून कोशिकाओं को नष्ट कर देता है। यह हीमोग्लोबिन मूत्र में दिखाई देता है और मूत्र को लाल रंग देता है। वसंत माह के दौरान, जब टिक्स (बाह्क) का आबादी भारी होती है, इसका प्रकोप अधिक होता है।

लक्षण:

उच्च बुखार, गहरे लाल से भूरे रंग (खूनी) मूत्र, जांडिस, एनीमिया, भूख की कमी, कभी-कभी तंत्रिका तंत्र की असमन्वय/गड़बड़ी और ऐंठन आदि

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. शेड और उसके आसपास के क्षेत्र को साफ रखें । सीताफल के पत्तों या भुई कदम्ब (Sphaeranthus indicus) का एक गुच्छा शेड में 3 दिनों के लिए लटकाएं, हर दिन एक ताजा गुच्छा लटकाएं और पिछले गुच्छा को शेड में जलाकर धुआं दें। या, नियमित रूप से निम्नलिखित में से किसी भी पत्ते के साथ शेड में जलाकर धुआं दें - तम्बाकू / तुलसी / सिन्द्वार / सीताफल / नीम / लेमन ग्रास आदि। और,
2. नीम की पत्तियों को पानी में उबालें या सूखे तंबाकू के पत्तों को रात भर भिगो दें, इस पानी में नमक मिलाएं और जानवरों के शरीर पर धूप वाले दिन के दौरान रगड़ कर स्नान कराएं। और,
3. बुखार के लिए इलाज: 5 ग्राम हल्दी पाउडर, 10 ग्राम अदरक और 1 मुट्ठी ताजा तुलसी (Ocinum sanctum) के पत्तों को एक साथ पीस लें और 3 दिनों के लिए दिन में एक बार खिलाएं। और,
4. अजवायन 10 ग्राम, काली मिर्च और सौंठ के 10-10 पीस लें, 25 ग्राम भुई नीम/चिरैता और 25 ग्राम गुड मिलाएं, बोलस बनाएं और 3 दिनों तक खिलाएं। और,

5. 10 ग्राम हल्दी पाउडर और कपूर के 2 पिस को 100 मिलीलीटर सरसों के तेल के साथ मिलाएं और शारीर पर लागू करें।
डॉ रामावत https://youtu.be/R3vR8x_EgQs या,

6. इन तेलों को लें: 25 मिली नारियल, 25 मिलीलीटर करंज (Derris indica), 25 मिलीलीटर नीम। इसे 25 ग्राम सल्फर पावडर और 5 ग्राम कपूर के साथ मिलाएं और दिन में दो बार शरीर पर लगाएं। या,
7. तंबाकू, सीताफल के पत्तों को पीसकर शरीर पर लगाएं, दिन में एक बार 2-3 दिनों के लिए ।

45. Theileriasis (हार्ड टिक के द्वारा होता है)

यह प्रोटोजोआ के कारण होता है जो टिक्स (हार्ड टिक) में मौजूद होता है और संक्रमित टिक का काटने से जानवर में प्रवेश करता है। यह विशेष रूप से क्रॉस-ब्रीड गाय, बैल की एक बीमारी है।

- Swelling of the draining lymph node, usually the parotid.
- Generalized lymphadenopathy.
- Fever 40 – 41°C

लक्षण:

उच्च बुखार, लिम्फनोड्स (कंधे के पास) का बढ़ना, तीव्र एनीमिया, पीला श्लेष्मा झिल्ली, कमजोरी, जांडिस, आंखों और नाक का पानी आदि

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. शेड और उसके आसपास के क्षेत्र को साफ रखें । सीताफल के पत्तों या भुई कदम्ब (Sphaeranthus indicus) का एक गुच्छा शेड में 3 दिनों के लिए लटकाएं, हर दिन एक ताजा गुच्छा लटकाएं और पिछले गुच्छा को शेड में जलाकर धुआं दें।
या, नियमित रूप से निम्नलिखित में से किसी भी पत्ते के साथ शेड में जलाकर धुआं दें - तम्बाकू / तुलसी / सिन्द्वार / सीताफल / नीम / लेमन ग्रास आदि। और,
2. नीम की पत्तियों को पानी में उबालें या सूखे तंबाकू के पत्तों को रात भर भिगो दें, इस पानी में नमक मिलाएं और जानवरों के शरीर पर धूप वाले दिन के दौरान रगड़ कर स्नान कराएं। और,
3. बुखार के लिए इलाज: 5 ग्राम हल्दी पाउडर, 10 ग्राम अदरक और 1 मुट्ठी ताजा तुलसी (Ocinum sanctum) के पत्तों को एक साथ पीस लें और 3 दिनों के लिए दिन में एक बार खिलाएं। और,
4. अजवायन 10 ग्राम, काली मिर्च और सौंठ के 10-10 पीस लें, 25 ग्राम भुई नीम/चिरैता और 25 ग्राम गुड मिलाएं, बोलस बनाएं और 3 दिनों तक खिलाएं। और,
5. 10 ग्राम हल्दी पाउडर और कपूर के 2 पिस को 100 मिलीलीटर सरसों के तेल के साथ मिलाएं और शारीर पर लागू करें।
डॉ रामावत https://youtu.be/R3vR8x_EgQs या,

6. **इन तेलों को लें:** 25 मिली नारियल, 25 मिलीलीटर करंज (Derris indica), 25 मिलीलीटर नीम। इसे 25 ग्राम सल्फर पावडर और 5 ग्राम कपूर के साथ मिलाएं और दिन में दो बार शरीर पर लगाएं। या,
7. तंबाकू, सीताफल के पत्तों को पीसकर शरीर पर लगाएं, दिन में एक बार 2-3 दिनों के लिए ।

46. ट्रिपैनोसोमियासिस/सुर्रा - चक्कर लगाने के लक्षण

यह एक प्रोटोजोआ रोग है जो खून चूसने वाली मक्खियों और कीड़ों के काटने के कारण सभी जानवरों को होता है, लेकिन बहुत अधिक दूध देने वाले गाय/गाय, बैल प्रभावित होते हैं।
Dr Atheya https://youtu.be/Bt1U-lqE-HQ
** चक्कर लगाने के लक्षण दस बीमारियों के कारण हो सकते हैं जैसे
1) ट्रिपैनोसोमियासिस 2) गीड 3) एंटरोटोक्सिमिया 4) लिस्टेरियोसिस
5) इंसेफेलाइटिस 6) पोलियोएन्सेफेलोमेलेसिया 7) ग्रास टेटनी 8) अफारा
9) कीटोसिस और 10) बेशरम के पत्ते खाने से।
डॉ रामावत: https://www.youtube.com/watch?v=YVMaI_GYRYU

लक्षण:

1. उच्च बुखार के बाद तापमान में गिरावट (उतार-चढ़ाव) और रोग बढ़ने से तापमान -सामान्य हो जाता है, दोनों तरफ चक्कर लगाना, कठोर वस्तुओं के खिलाफसिर को दबाना, उद्देश्यहीन रूप से आगे बढ़ना, https://www.youtube.com/watch?v=f0md-hbF6t8&feature=youtu.be और अक्सर नीचे गिरना आदि
   Dr Ramawat https://youtu.be/VI37pSXAiok
2. सतही लिम्फनोड्स का बढ़ना, कॉर्नियल अस्पष्टता, दांत पिसना, लार टपकना, बार-बार पेशाब और गोबर करना आदि

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. शेड और उसके आसपास के क्षेत्र को साफरखें द्य सीताफल के पत्तों या भुई कदम्ब (Sphaeranthus indicus) का एक गुच्छा शेड में 3 दिनों के लिए लटकाएं, हर दिन एक ताजा गुच्छा लटकाएं और पिछले गुच्छा को शेड में जलाकर धुआं दें।
   या, नियमित रूप से निम्नलिखित में से किसी भी पत्ते के साथ शेड में जलाकर धुआं दें - तम्बाकू / तुलसी / सिन्द्वार / सीताफल / नीम / लेमन ग्रास आदि। Vicky: https://youtu.be/nCcxJD90yXc और,
2. बुखार के लिए इलाज: 5 ग्राम हल्दी पाउडर, 10 ग्राम अदरक और 1 मुट्ठी ताजा तुलसी (Ocinum sanctum) के पत्तों को एक साथ पीस लें और 3 दिनों के लिए दिन में एक बार खिलाएं। और,
3. लंबी काली मिर्च (Long pepper, पिपली) 10 ग्राम+ भुई नीम/चिरैता 25 ग्राम+ गुड 25 ग्राम मिलाएं, बोलस बनाकर खिलाएं। 3 दिनों के लिए जारी रखें। और,
4. नीम की पत्तियों को पानी में उबालें या सूखे तंबाकू के पत्तों को रात भर भिगो दें, इस पानी में नमक मिलाएं और जानवरों के शरीर पर धूप वाले दिन के दौरान रगड़ कर स्नान कराएं।

भाग 8 : तंत्रिका तंत्र को प्रभावित करने वाले रोग (चक्कर लगाने के लक्षण):

47. पक्षाघात, दौरे (paralysis) और ऐंठन (convulsion)

कारण:

चोटों, विषाक्तता, संक्रमण, विटामिन और खनिज की कमी, संतुलित आहार की कमी, कृमि संक्रमण, जन्मजात विकार, प्रसव के बाद ऐंठन आदि के कारण तंत्रिका तंत्र प्रभावित होने से।

लक्षण:

शरीर या अंगों के किसी भी हिस्से की असामान्य स्थिति, जानवरों की पीठ/शारीर में खिंचाव, मांसपेशियों में ऐंठन, झटके, दौरे, व्यवहार में परिवर्तन आदि

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. कपूर और नारियल/तिल का तेल के मिश्रण के साथ शरीर के हिस्से को मसाज करें। प्रसव के बाद ऐंठन, डॉ रामावत: https://youtu.be/26akNzL9j7Y और,
2. अजवायन और कलौंजी (काली जीरी) के 15-15 ग्राम, मेथी और गुड़ के 20-20 ग्राम, पीसकर मिला कर बोलस बना लें। 3 दिनों के लिए दैनिक रूप से दो बार खिलाएं। और,
3. 3 दिनों के लिए दिन में दो बार आधा एन.पी.सी. बोलस को खिलाएं (निमेसुलाइड, पैरासाइटामोल और क्लोर ज़ोक्साज़ोन)। और, 7 दिनों के लिए 20 मिलीलीटर न्यूरोकाइंड प्लस वेट सिरप + 20 ग्राम कैलसागर प्लस पाउडर दें।

48. गीड (Coenurus Cerebralis) - चक्कर लक्षण

Coenurus cerebralis एक संक्रमण है जो केवल बकरी और भेड़ के मस्तिष्क/ रीढ़ की हड्डी में "कुत्ते टेपवर्म" के लार्वा-चरण के कारण होता है। लार्वा समूह, एक पुटी में विकसित होता है जो जानवर के मस्तिष्क या रीढ़ की हड्डी में खुद को ढक कर रखता है।

** चक्कर लगाने के लक्षण दस बीमारियों के कारण हो सकते हैं जैसे 1) ट्रिपैनोसोमियासिस 2) गीड 3) एंटरोटोक्सियामिया 4) लिस्टेरियोसिस 5) इंसेफेलाइटिस 6) पोलियोएन्सेफेलोमेलेसिया 7) ग्रास टेटनी 8) अफारा 9) कीटोसिस और 10) बेशरम के पत्ते खाने से।

डॉ रामावत: https://www.youtube.com/watch?v=YVMaI_GYRYU

लक्षण:

1. सिर को एक तरफ (अक्सर बाईं ओर) हलकों में मुड़ना/झुकाना और प्रभावित पक्ष की दिशा में गोल-गोल घूमन। सिर को किसी भी कठिन वस्तु (दीवार, पेड़) में दबाना। डॉ रामावत https://youtu.be/iSWf8IFfYMo
2. युवा जानवरों में, पुटी के स्थान पर खोपड़ी की हड्डी अक्सर नरम हो जाती है और इसे हाथ से दबाया जा सकता है
3. अचानक तीव्र तंत्रिका लक्षण जैसे अंधा दौड़ना, उच्च कदम, झटकेदार चलना
4. यदि रीढ़ की हड्डी शामिल है, तो क्रमिक पक्षाघात, ऐंठन और अंत में गेटअप करने में असमर्थ डॉ रामावत https://youtu.be/ANMnIS-tXeA

** गिड, पोलियोएन्सेफ्लोमालेसिया के साथ भ्रमित हो सकता है (जहां पशु हलकों दोनों तरफ घूमता है और गर्दन को ऊपर मोड़ता है)

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. Praziquantel दवा के साथ कृमिकरन, और
2. विटामिन बी-1 (थियामिन) और आईवरमेक्टिन इंजेक्शन 2 मिलीलीटर, 1 साथ मिलाकर दें।

49. लीस्टेरियोसिस - चक्कर रोग (Circiling disease)

यह जानवरों और मनुष्य दोनों की एक महत्वपूर्ण संक्रामक बीमारी है।

** चक्कर लगाने के लक्षण दस बीमारियों के कारण हो सकते हैं जैसे 1) ट्रिपैनोसोमियासिस 2) गीड 3) एंटरोटोक्सियामिया 4) लिस्टेरियोसिस 5) इंसेफेलाइटिस 6) पोलियोएन्सेफेलोमेलेसिया 7) ग्रास टेटनी 8) अफारा 9) कीटोसिस और 10) बेशरम के पत्ते खाने से। डॉ रामावत: https://www.youtube.com/watch?v=YVMaI_GYRYU

लक्षण:

A. **गर्भपात रूप:** यह आमतौर पर गर्भ-अवधि के अंतिम तिमाही के महीनों में मृत बच्चा जन्म होता है और गर्भपात के बाद प्लेसेंटा/जेर अटक जाता है। गर्भपात के बाद योनि से खून-स्राव भी होता है।

B. **मस्तिष्क (एन्सेफ्लाइटिस) रूप:** उच्च बुखार, अकडन/असमन्वय चाल, चेहरे का पक्षाघात, धनुषाकार जैसा शारीर में अकडन, एक कठिन वस्तु में सिर को प्रेस कर के खड़े होना। बाद में, जानवर या तो बाएं या दाएं दिशा में घूमता हैं, जीसे चक्कर लगाने वाली बीमारी के रूप में जाना जाता है।

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

50. एन्सेफ्लाइटिस (+ मेनिन्जाइटिस या मस्तिष्क बुखार) - चक्कर लगाने का लक्षण

एन्सेफ्लाइटिस का अर्थ है मस्तिष्क की सूजन।

** चक्कर लगाने के लक्षण दस बीमारियों के कारण हो सकते हैं जैसे 1) ट्रिपैनोसोमियासिस 2) गीड 3) एंटरोटोक्सियामिया 4) लिस्टेरियोसिस 5) इंसेफेलाइटिस 6) पोलियोएन्सेफेलोमेलेसिया 7) ग्रास टेटनी 8) अफारा 9) कीटोसिस और 10) बेशरम के पत्ते खाने से। डॉ रामावत: https://www.youtube.com/watch?v=YVMaI_GYRYU

लक्षण:

चक्कर लगाना, असन्बय चाल, दीवार या बाडा पर झुकाव, बाद के चरण में पक्षाघात/दौरे हो सकता है, तेज बुखार (मेनिन्जाइटिस) आदि

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

51. पोलियो एन्सेफ्लोमैलेसिया (पी.ई.एम., गोट पोलिओ, स्टार गज़िंग) - चक्कर लगाने वाला लक्षण

विटामिन बी-1 (थियामिन) की कमी इस बीमारी का कारण बनती है। इसे "गोट पोलिओ" भी बोला जाता है।

** चक्कर लगाने के लक्षण दस बीमारियों के कारण हो सकते हैं जैसे 1) ट्रिपैनोसोमियासिस 2) गीड 3) एंटरोटोक्सियामिया 4) लिस्टेरियोसिस 5) इंसेफेलाइटिस 6) पोलियोएन्सेफेलोमेलेसिया 7) ग्रास टेटनी 8) अफरा 9) कीटोसिस और 10) बेशरम के पत्ते खाने से।

डॉ रामावत: https://www.youtube.com/watch?v=YVMaI_GYRYU

लक्षण:

युवा बच्चे अधिक संवेदनशील होते हैं। तंत्रिका विकार, चक्कर लगाना, गर्दन झुकना, गर्दन को ऊपर कीओर खिंचना को स्टार गज़िंग कहा जाता है, मांसपेशियों में कंपन, खड़े होने में असमर्थ, चिल्लाना, पक्षाघात की तरह शारीर/पीठ की स्थिति, तापमान सामान्य रहन आदि

** यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि, कभी-कभी पी.ई.एम. लक्षण भी "टेटनस लक्षणों" के समान होते हैं। इसी तरह, चक्कर लगाने का लक्षण गिड और मेनिन्जाइटिस रोगों के मामले में होता है।

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. 30 मिली घी और आधा चम्मच हल्दी पाउडर को 250 मिलीलीटर छांच (butter milk) के साथ मिलाएं और तुरंत पिलाएं। डॉ रामावत https://www.youtube.com/watch?v=7DzjZdNjBNo | और,

2. अलसी (नाइजर), सूरजमुखी और काले तिल - प्रत्येक 5 ग्राम बीज पिस लें, 15 ग्राम गुड के साथ दिन में एक बार, 10-15 दिनों के लिए खिलाएं। डॉ रामावत https://www.youtube.com/watch?v=JgoS__i3Gh0

52. ग्रास टाइटनी (Grass Tetany, Hypomagnesium/मग्नेसियम की कमी) - चक्कर लक्षण

यह सभी जुगाली करने वालों की एक अत्यधिक घातक मेटाबोलिक बीमारी है और ज्यादातर मामलों में दूध-बुखार और टीटनस रोग की तरह समानता होती है। यह, खून में मैग्नीशियम की कमी के कारण होता है।

** चक्कर लगाने के लक्षण दस बीमारियों के कारण हो सकते हैं जैसे

1) ट्रिपैनोसोमियासिस 2) गीड 3) एंटरोटोक्सियामिया

4) लिस्टेरियोसिस 5) इंसेफेलाइटिस 6) पोलियोएन्सेफेलोमेलेसिया

7) ग्रास टेटनी 8) अफारा 9) कीटोसिस और 10) बेशरम के पत्ते खाने से।

डॉ रामावत: https://www.youtube.com/watch?v=YVMaI_GYRYU

लक्षण:

अस्थिरता, उत्तेजित होना, शरीर के तापमान में वृद्धि, कान की मांसपेशियों के खिचाब, शारीर में ऐंठन, झागदार लार टपकना, ऊंचा श्वसन दर और दूर से हृदय ध्वनि सुना जा सकता है, जानवरों के गिरना।

डॉ रामावत: https://youtu.be/Vt09JLnlG0k

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

100 ग्राम मडुआ (रागी) का चूर्ण 2 सप्ताह तक प्रतिदिन गुड़ के साथ खिलाएं।

53. बेशरम / थेथर के पत्ते खाना - चक्कर लगाने के लक्षण

जब चारे की कमी होती है, अक्सर बेशरम के पत्तों को बकरियों द्वारा खाया जाता है। यह आदत समय की अवधि में विकसित होती है और एक बार आदत पड़ने के बाद बकरी इसे खाना जारी रखती है। धीरे-धीरे, यह शरीर में विषाक्तता का कारण बनता है।

** चक्कर लगाने के लक्षण दस बीमारियों के कारण हो सकते हैं जैसे 1) ट्रिपैनोसोमियासिस 2) गीड

3) एंटरोटोक्सियामिया 4) लिस्टेरियोसिस 5) इंसेफेलाइटिस 6) पोलियोएन्सेफेलोमेलेसिया 7) ग्रास टेटनी 8) अफरा

9) कीटोसिस और 10) बेशरम के पत्ते खाने से। डॉ रामावत: https://www.youtube.com/watch?v=YVMaI_GYRYU

लक्षण:

शराबी जैसा चाल, चक्कर लगाना, वजन कम करना, नपुंसकता आदि

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. गुड 3 सप्ताह के लिए 1 ग्राम प्रति किलो शरीर का वजन दें। और,
2. लिव -52 गोलियां, दो बार दैनिक,1 महीने के लिए + बेलामिल इंजेक्शन 2 मिलीलीटर, एक दिन अंतराल में 3 बार दें।

भाग 9 : पाचन तंत्र के रोग

54. भूख की कमी (एनोरेक्सिया) / अपच (Indigestion)

भूख की कमी को एनोरेक्सिया कहा जाता है । यह कम गुणवत्ता वाले भोजन, अनियमित भोजन समय, मुंह के संक्रमण, दस्त / कब्ज / सूजन, संक्रामक रोग आदि जैसी पाचन समस्याओं के लिए हो सकता है ।

डॉ रामावत द्वारा कारण: https://youtu.be/tmeou_6I0ds |

जुगाली करने वालों के पाचन तंत्र के बारे में,
PD: https://www.youtube.com/watch?v=62bg3cC-f-g&feature=youtu.be

लक्षण:

पशु नहीं खाता है, जुगाली नहीं करता है, वजन में कमी, थकान, सुस्ती आदि

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. प्रत्येक - अदरक, जीरा और कच्ची हल्दी 20 ग्राम को काली मिर्च के 20 पिस, गुड 50 ग्राम और 3 मुट्ठी भर करेली के पत्तों के साथ पीस लें और दिन में दो बार 2-3 दिनों के लिए खिलाएं । या,
2. **गैर-गर्भवती जानवरों के लिए:** Albendazole कृमिनाशक की 1 खुराक दें । प्रत्येक -अजवायन, काला जिरी, खाने का सोडा के 10 ग्राम को पीसकर और 20 ग्राम मेथी, 20 ग्राम गुड के साथ मिलाएं और दैनिक रूप से एक बार, 3-4 दिनों के लिए खिलाएं । यदि, जानवर गर्भवती है तो अलबेंडाजोल को फेनबेंडाजोल और अजवाइन को आंवला से बदल दें ।
   डॉ रामावत: https://www.youtube.com/watch?v=i7cYY6CJDHs या,
3. प्रत्येक - अजवाइन, हींग, सूखे अदरक को 10 ग्राम और प्याज 25 ग्राम के साथ पीस लें । इन्हें 50 ग्राम गुड और 10 ग्राम नमक के साथ मिलाकर बोलस बना लें और दिन में एक बार, 3 दिन तक खिलाएं । या,
4. हिमालय बत्तीशा पाउडर 10 ग्राम को गुड 10 ग्राम के साथ मिलाएं, बोलस बनाएं और 3 दिनों के लिए दिन में दो बार खिलाएं । या,
5. अश्वगंधा पाउडर 20 ग्राम को 10 ग्राम भुइनीम/चिरैता (Andrographics paniculata) के साथ मिलाएं, बोलस बनाएं और 3 दिनों के लिए दिन में एक बार खिलाएं । या,
6. 50 ग्राम ताजे इमली के पत्तों को हरी मिर्च 25 ग्राम और नमक 10 ग्राम के साथ एक साथ पीसलें, एक बोलस बनाएं और दिन में एक बार, 3 दिनों के लिए खिलाएं । या,
7. **बकरी की भूख बढ़ाएं:** 10 ग्राम काली सरसों के बीज को भूनें, इसे पीस लें और काली मिर्च के 10 पिस के पाउडर के साथ मिलाएं । 5 ग्राम काला नमक और 100 ग्राम दही डालकर 7- 10 दिनों तक रोजाना एक बार खिलाएं ।
   डॉ रामावत: https://youtu.be/EzzjeXcb7_s

   और
   https://www.youtube.com/watch?v=ze4x4wAZYeQ

** यदि जानबर, मुंह के संक्रमण, बुखार, दस्त या किसी अन्य बीमारी के कारण खाना न खाता हो, तो आपको उस विशेष बीमारी का भी इलाज करना होगा । बकरी पानी नहीं पीती: डॉ रामावत द्वारा https://youtu.be/Oz6oHKbcyTo

स्वास्थ्य टॉनिक कैसे तैयार करें:

1. मेथी 20 ग्राम, सेंधा नमक 50 ग्राम, गिलोय (टिनोस्पोरा) 100 ग्राम, मीठा/बेकिंग सोडा 100 ग्राम, अजवायन 10 ग्राम, जीरा 10 ग्राम, धनिया 20 ग्राम, काली मिर्च 10 ग्राम, लाल मिर्च 50 ग्राम, कच्ची अदरक 50 ग्राम, कच्ची हल्दी 50 ग्राम, एलोवेरा का रस 100 ग्राम, लहसुन 50 ग्राम, करी-पत्ता 100 ग्राम, तुलसी के पत्ते 50 ग्राम, तरवर के पत्ते (Cassia auriculata) 100 ग्राम, नारियल 100 ग्राम, गुड़ 100 ग्राम और पान के पत्ते 10 नग लें ।

तैयारी के लिए प्रक्रिया: उपरोक्त सभी सामग्रियों को कूट कर अच्छी तरह से मिश्रित किया जाता है, और बोलस (25 ग्राम वजन) बनाया जाता है। इसके ऊपर हल्दी पाउडर का छिड़काव किया जाता है द्य सुबह और शाम दो बार दैनिक, तीन दिनों के लिए खिलाया जाता है द्य एकबार बनाने से तीन दिनों तक दे सकते हैं।

DG द्वारा: https://www.youtube.com/watch?v=rwqDw9Vnb3U

2. डॉ रामावत द्वारा पाचन पाउडर तैयार करना: https://youtu.be/HssU-4Ilh-w

55. पेट दर्द या उदर शूल (Stomach pain):

यह पाचन तंत्र के कई विकारों का प्रभाव, जैसे सूजन, कब्ज, दस्त और कीड़े आदि के कारण पाया जाने वाला एक लक्षण है। यह मूत्र प्रणाली और प्रजनन पथ की समस्याओं का भी एक लक्षण है। **राहत पाने के लिए जानवर पैरों को खींचना सबसे आम लक्षण है।**

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. 1 कप दूध की चाय तैयार करें। इसके ठंडा होने के बाद इसमें 1 चम्मच सरसों का तेल, आधा चम्मच प्रत्येक अजवाइन पाउडर और हल्दी पाउडर डालें और जानवर को पिला दें। 30 मिनट बाद, 1 चम्मच बेकिंग सोडा (सोडियम बायो-कार्बोनेट) खिलाएं। 4 घंटे के अंतराल पर चाय की तैयारी के हिस्से को केवल दो बार दोहराएं/पिलाएं।
   उमेश सर: https://youtu.be/iWlt_zXVcJU । या,

2. 10 ग्राम अजवाइन + 10 ग्राम अदरक + 25 ग्राम काला नमक + 25 ग्राम मीठा / बेकिंग सोडा + 25 ग्राम गुड को मिलाएं, बोलस बनाएं और दिन में दो बार खिलाएं, 2-3 दिनों के लिए। बकरी गर्भवती हो तो 1 गिलास दूध के साथ 25 ग्राम घी डालकर एक बार खिलाएं। डॉ रामावत: https://youtu.be/M-BuwAhRXpY या,

3. जानवर को कृमिमुक्त करना। SLNI Forte आधा गोली, 2 कप चाय के साथ 4 घंटे के अंतराल पर 2 दिनों के लिए दें।

56. कब्ज और पेट-बंध (Constipation & Impaction, पेट दर्द)

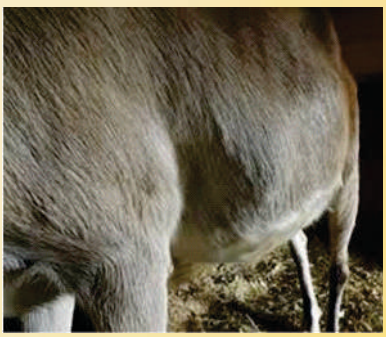

ये पाचन विकार हैं जिसमें मल त्यागने के लिए अत्यधिक प्रेशर की आवश्यकता होती है और मल कठोर, सूखा, छोटी हो जाता है। मल त्यागने के लिए अत्यधिक प्रेशर के कारण, मल में खून हो सकता है।

लक्षण:

पशु मल त्याग ने केलिए कड़ी प्रयास करता है, गोबर या मूत्र सुबह में जानवर द्वारा किआ गया नहीं पाया जाता है, जुगाली नहीं, पेट कठिन हो जाता है और palpate करने के लिए मुश्किल होता है, जानवर असहज महसूस करता है और अक्सर अपने पेट को लात मारना आदि

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. पशु को हरा और सूखा चारा दोनों खिलाएं और किसी भी बाजरा/अनाज से बना पीने का पानी बहुत सारा दें।
2. 100 मिलीलीटर अरंडी (Castor) के तेल को 100 मिलीलीटर दूध के साथ मिलाएं, इसे गर्म करें और 4 घंटे के अंतराल पर दो बार पिलाएं। यदि अरंडी का तेल उपलब्ध नहीं है, तो अरंडी के बीज को कुचल कर उपयोग करें।
   डॉ रामावत https://youtu.be/qC4xmaITDVM या,

3. गैर-गर्भवती जानवरों के लिए: काला जिरी पाउडर और काला नमक प्रत्येक 10 ग्राम लें, इसे 200 मिलीलीटर पानी के साथ मिलाएं और 2 दिनों के लिए दिन में दो बार पिलाएं + उपरोक्त खुराक के 2 घंटे के बाद खाने का सोडा 10 ग्राम दें। गर्भवती जानवरों के लिए काला जिरी न दें। डॉ रामावत: https://youtu.be/8X7_x9VLhLY | या,
4. तुरंत 250 मिलीलीटर खाद्य तेल के साथ जानवरों को पिलाएं। या,
5. 20 ग्राम अजवाइन पाउडर और 20 ग्राम नमक लें, 100 मिलीलीटर पानी के साथ मिलाएं और दिन में दो बार 2-3 दिनों के लिए पिलाएं। या,
6. महानीम (Ailanthus excels) या कुजाटा (Holarrhena antidysenterica) पेड़ की 25 ग्राम ताजा छाल लें, पीसलें और 100 मिलीलीटर पानी के साथ मिलाएं और 3 दिनों के लिए दिन में दो बार पिलाएं। या,
7. हिमालय बत्तीशा पाउडर 10 ग्राम को गुड 10 ग्राम के साथ मिलाएं, बोलस बनाएं और 3 दिनों के लिए दिन में दो बार खिलाएं

** कब्ज के तुरंत राहत के लिए एनीमा (गुदा के माध्यम से साबुन घोल) का उपयोग करें, इसके अलावा 2-3 दिनों के लिए दिन में दो बार आधा SLNI बोलस दें।डॉ रामावत:https://youtu.be/C5uVq6AXtwE

57. अफारा / ब्लोट (Bloat, Tympany)

रूमिनल टिम्पनी (**पेट में गैस की अत्यधिक मात्रा**) जिसे अफारा/ब्लोट के रूप में भी जाना जाता है, जुगाली करने वाले जानवरों की एक आम बीमारी है। कारण,

a. फल्लीदार पौधों (प्रोटीन) को अधिक खाना, बहुत अधिक गीली घास खाना, पके हुए और किण्वित / बासी खाद्य खाना, आहार में अचानक परिवर्तन आदि
b. जहरीला भोजन खाना जैसे ज्वार के नयी-पत्तों, कुछ जहरीला पौधों की पत्तियों को खाना
c. प्लास्टिक की थैलियां, चप्पल, सुई, अन्य असामान्य खाद्य सामग्री खाना
d. कुछ चीजें भोजन मार्ग को जब अवरुद्ध करती हैं, तब जानवर को अफारा/कब्ज आदि होता है

लक्षण:

a. जानवर के पेट की **बाए ओर फूल जाना** और थपडने से एक ड्रम की तरह आवाज आना, भूख की कमी, जानवर जुगाली नहीं करता है, झागदार लार टपकना और मुंह आदि के चारों ओर देखी जाती है
b. जानवर बेचैन रहता है, सांस लेने में कठिनाई, पेट में दर्द, जानवर अपने पिछले अंगों आदि के साथ अपने पेट को लात मारता है
c. अंत में जानवर जमीन पर गिर जाता है और उठता नहीं है

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. जानवरों को गीली घास के चारे पर चरने से ठीक पहले या तुरंत बाद पानी न दें। बारिश के मौसम में जानवरों को चराने के लिए भेजने से पहले कुछ सूखा चारा खिलाएं। जानवर को चारों ओर घुमाएं; इसे किसी भी हाल में बैठने न दें। और,
2. यदि ब्लोट गंभीर नहीं है, तो 10 ग्राम बैकिंग/ खाने का सोडा खिलाएं और लक्षणों के कम होने तक पानी न दें। या,
3. उचित सांस लेने की सुविधा के लिए, मुंह में 90 डिग्री में लकड़ी डालकर मुंह को खुला रखें और सामने के पैरों को एक उच्च स्थान पर रखें। फिर आधा मिलीलीटर तारपीन का तेल और 1 ग्राम हींग को 50 मिलीलीटर नाइजर (अलसी)/तिल/सरसों के तेल के साथ मिलाकर पिलाएं। 15 मिनट बाद 10 ग्राम बेकिंग/खाने का सोडा दें। इसे दिन में दो बार दोहराएं।
उमेश सर: https://youtu.be/qpASxkyyiO0 | या,
4. 25 ग्राम प्याज, लहसुन की 4 पंखुड़ियां, जीरा 5 ग्राम, 10 पीस काली मिर्च, अदरक 25 ग्राम और 3-4 पान के पत्ते को क्रश करें। बोलस बनाने के लिए 25 ग्राम गुड + 5 ग्राम हल्दी पाउडर डालें और दिन में दो बार, 2-3 दिनों के लिए खिलाएं।
एनडीडीबी द्वारा https://www.youtube.com/watch?v=E0hevbII7tU या,

5. अजवाइन (Trachyspermum ami), सेंधा नमक, काला नमक प्रत्येक 10 ग्राम को एक साथ मिला लें और दिन में एक बार दो दिनों के लिए खिलाएं । या,
6. 20 ग्राम सूखे अदरक और 4 ग्राम काली मिर्च पाउडर लें, पानी के साथ मिलाएं । दिन में एक बार 2 दिनों के लिए पिलाएं। या,
7. आम, नीम और जामुन (Syzigium cumini) के पेड़ प्रत्येक के 10 ग्राम तने की छालों को पीसकर बोलस बना लें और जानवरों को दिन में दो बार 2-3 दिनों तक खिलाएं । या,
8. किसी भी खाने का तेल के 250 मिलीलीटर के साथ तारपीन तेल के 15 मिलीलीटर मिश्रण करें और जानवर को पिलाएं, शाम को खुराक को दोहराएं और यदि आवश्यक हो तो अगली सुबह । या,
9. हिमालय बत्तीशा पाउडर 10 ग्राम को गुड 10 ग्राम के साथ मिलाएं, बोलस बनाएं और 3 दिनों के लिए दिन में दो बार खिलाएं ।
10. गुड के 20 ग्राम के साथ Timpol podwer के 20 ग्राम मिलाकर एक बोलस बनाएं । 2 दिनों के लिए दिन में दो बार खिलाएं।
डॉ रामावत https://youtu.be/O3jOX60X5wc

** यदि ब्लोट तीन-चार दिनों से अधिक समय तक बना रहता है या उपचार के बाद भी होता रहता है, तो यह रेतिकुलम में एक विदेशी बस्तु की उपस्थिति के कारण हो सकता है, जिसको की अस्त्रोपचार करना पड़ता है।

58. एसिडोसिस (Acidosis, एसिड अपच, खाद्य विषाक्तता)

यह स्थिति मुख्य रूप से आसानी से किण्वित कार्बोहाइड्रेट फ़ीड जैसे गेहूं, उबले हुए चावल, कटहल (जैक फरूट) आदि की अत्यधिक मात्रा के अचानक खाने के कारण जुगाली करने वालों जानबरों में देखी जाती है। इस स्थिति में, लैक्टिक एसिड और फैटी एसिड के अत्यधिक उत्पादन के कारण रुमेन/पेट का पी.एच. 5 या उससे कम अम्लता वातावरण में अचानक बदल जाता है

लक्षण:

1. भूख न लगना (एनोरेक्सिया), बाए ओर का पेट फूलना, बाए ओर के पेट में पानी के संचय के कारण धब-धब ध्वनि, कम जुगाली करना और लार नहीं बनना आदि
2. शरीर का तापमान कम होना, अत्यधिक पानी जैसा दस्त, गंभीर निर्जलीकरण
3. साँस लेना मुश्किल होना, मांसपेशियों में कंपन, दांतों को पीसना आदि

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. निर्जलीकरण के कारण, जानवरों को प्यास लगेगी लेकिन पीने के लिए पानी न दें। 3-4 कप सामान्य चाय के साथ, 10 ग्राम मीठा/बेकिंग सोडा दिन में 2-3 बार दें। डॉ रामावत https://www.youtube.com/watch?v=GR0HEn14TDA।
2. कदम्ब (Neolamarckia cadamba) के पत्तों / छाल के 100 मिलीलीटर रस को अजवाइन और हींग के 10 ग्राम पाउडर के साथ मिलाएं, दिन में एक बार 3 दिनों के लिए दें । या,
3. हींग, काली मिर्च, पिप्पली प्रत्येक 10 ग्राम और अदरक और गुड प्रत्येक 25 ग्राम को मिलाएं, बोलस बनाएं और दिन में दो बार 2-3 दिनों के लिए खिलाएं।

** **अल्कलोसिस (क्षारीय अपच):** यह स्थिति मुख्य रूप से जुगाली करने वालों में देखी जाती है जब जुगाली करने वालों में रुमेन पीएच 7 से अधिक हो जाता है, जो प्रोटीन समृद्ध चारा जैसे कि बरसीम, सोयाबीन, खल्ली, यूरिया उपचारित पुआल आदि के अचानक सेवन के कारण होता है। लक्षण: भूख न लगना (एनोरेक्सिया), लार टपकना, दाईं ओर के पेट में पानी के संचय के कारण ढाब-ढाब ध्वनि, कम जुगाली आदि।
उमेश सर द्वारा राहत के लिए पेट की नली का उपयोग: https://youtu.be/Waiw3oGeBts

59. ट्रॉमेटिक रेटिकुलो-पेरिटोनिटिस (टी.आर.पी.)

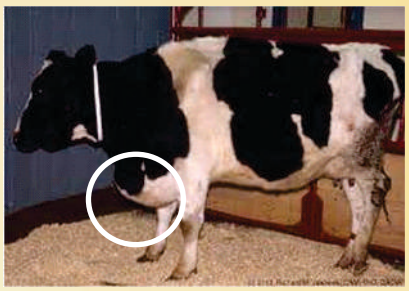

एक तेज विदेशी बस्तु जैसे पिन, कांटा, सुई आदि जानबर खाने से रुमेन (पहला पेट) के माध्यम से रेटिकुलम (दुसरे पेट) में छेद करता है और आगे ह्रदय के बाहरी आवरण में प्रवेश करता है। विदेशी बस्तु की उपस्थिति के कारण बार-बार अफारा/ब्लोट होता है, जो को ट्रॉमेटिक रेटिकुलो-पेरिटोनिटिस कहा जाता है।

लक्षण:

1. बार-बार अफारा/ब्लोट होता है, जानवर अपने शरीर एंठन करता है, अपने सिर को झुकाता है, दर्द में बिलाप करता है
2. मुश्किल साँस लेना, कब्ज, वजन घटना, हल चल न होना, खड़े रहना आदि
3. गर्दन के निचले हिस्सों और छाती के सामने के पैरों के बीच (dewlap) में एडिमा (सूजन) विशेष रूप से होना आदि

Animal kingdom : https://www.youtube.com/watch?v=mUtDoMoCEQo

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

शारीर में खनिज और विटामिन की कमी से पीड़ित जानवर आमतौर पर मज़बूरी से धातु की वस्तुओं को खाते हैं या चाटते हैं। इसलिए सुनिश्चित करें कि जानवर के पास एक संतुलित आहार हो, जो खनिजों और विटामिन से भरपूर है। इलाज- सर्जरी के अलावा कोई उपचार नहीं है। डॉ. उमर https://youtu.be/YWssxYjt-eI

60. खाद्य विषाक्तता (Food poisoning)

जानवरों में विषाक्तता के प्रमुख कारण हैं, i) रासायनिक और भारी-धातु विषाक्तता ii) पौधे की विषाक्तता (फंगल, मशरूम, फर्न जैसे ब्रैकेन फर्न, लैंटाना कैमरा, स्ट्रिचनीन) । ज्वार के नयी/अपरिपक्व पत्तियों को खाने से एच.सी.एन. विषाक्तता के परिणाम स्वरूप अफरा होती है।

लक्षण:

अत्यधिक लार टपकना, मुंह से झाग आना, अचानक पतन, ठंडे छोर (जैसे कान, थूथन की युक्तियां), कान और चेहरे की सूजन, आंखें अन्दर लुढ़कना, विभिन्न छिद्रों से खून बहना, अफारा, दस्त, अपच, कब्ज आदि

डॉ रामावत द्वारा एसिडोसिस (खाद्य विषाक्तता) में अंतिम चरण: https://youtu.be/HaNdoeNyBC4

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. 1 चम्मच सामान्य नमक को 1 चम्मच हल्दी के साथ मिला कर जीभ पर रगड़ें और, तुरंत 250 मिलीलीटर खाद्य तेल के साथ जानवरों को पिलाएं। या,
2. इमली के 50 ग्राम गूदे को 250 मिलीलीटर पानी में निचोड़ लें और दिन में दो बार पिलाएं। या,
3. 20 ग्राम जटरोफा या अर्का (कैलोट्रोपिस प्रोसेरा) पत्तियों को खिलाएं, दिन में 2-3 बार.
4. 2 से 3 अर्का के पत्तों को पीसकर बोलस बना लें और दिन में दो बार खिलाएं। या,
5. 50 ग्राम पाउडर चारकोल के साथ पानी मिलाएं और पिलाएं।

61. गैर-संक्रामक दस्त (पोषण संबंधी विकार और विषाक्त पदार्थों के कारण)

आहार में अचानक परिवर्तन, बड़ी मात्रा में हरे चारे का सेवन और दूषित पानी का सेवन करने पर छोटी आंतें बिगड़ जाती हैं।

भोजन में विषाक्त पदार्थों के होने पर भी छोटी आंतें बिगड़जाती हैं। विषाक्त पदार्थों से छुटकारा पाने के लिए, आंतें पचे हुए भोजन को अवशोषित नहीं करती हैं, बल्कि दस्त के रूप में निष्कासित करती हैं। विषाक्त पदार्थों के उन्मूलन के साथ-साथ बहुत सारा पानी शारीर से निकल जाती है जिसके परिणामस्वरूप निर्जलीकरण और मृत्यु की ओर जानबरजाता है।

कारण: 1. पोषण संबंधी विकार (यदि पेट पानी से भरा हुआ है और हरे दस्त) 2. संक्रमण (यदि खून या श्लेष्मा, मल में आ रहे हैं)।

PD: https://www.youtube.com/watch?v=6q-d_3D26wc&feature=youtu.be

लक्षण:

i. **पोषण संबंधी विकार के कारण:** हरा, पानी दस्त, बार-बार मल त्यागना आदि
ii. **विषाक्त दस्त:** खूनी, बदबूदार अक्सर सड़े हुए अंडे या लहसुन की तरह, झागदार दस्त, मुंह पर झाग, ऐंठन, लड़ खड़ाना आदि होता है.

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

गैर-संक्रामक दस्त पोषण संबंधी विकार:

1. बारिश के मौसम के दौरान अधिक चराई से बचें; सुनिश्चित करें कि जानवरों को ताजा घास चराई से पहले कुछ सूखा चारा खिलाया जाये, चारा में बदलाब धीरे-धीरे करें। और,
2. आधा बाल्टी पानी में 25 ग्राम नमक, 10 ग्राम बेकिंग सोडा और 100 ग्राम गुड़ मिलाएँ और भरपूर पिलाएँ। या, 1 गिलास छानच + 1 चम्मच हल्दी पाउडर मिलके पिलाएं। और,
3. 50 ग्राम हर्रा (Terminalia chebula) पाउडर को 50 ग्राम दही के साथ मिलाएं और 2 दिनों के लिए दिन में दो बार खिलाएं। यह सभी प्रकार के दस्तों के खिलाफबहुत प्रभावी है। या,
4. 1 कप चाय (दूध के बिना) बनाएं, 2 चुटकी हल्दी और मंजुअति (हिना) पाउडर डालें और बिना छाने पिलाएं।
   डॉ रामावत https://www.youtube.com/watch?v=D3mGAETJ5-s या,
5. 2 मुट्ठी भर बबूल के पत्ते लें, इसे कुट्लें और 250 मिलीलीटर पानी के साथ उबालें। इसमें 1-1 चम्मच जीरा और हल्दी पाउडर मिलाएं और उबालें। फिर ठंडा होने पर इसे छान लें। इसे दिन में दो बार पिलाएं।
   डॉ रामावत https://youtu.be/_jzlHjQ40cc या,
6. 1 मुट्ठी नीम के पत्तों से रस निकालें, 50 ग्राम दही के साथ मिलाएं और दिन में एकबार, 3 दिनों के लिए पिलाएं। या,
7. दो मुट्ठी अमरूद के पत्ते को पीसकर 200 मिलीलीटर पानी के साथ मिलाएं और दिन में दो बार, तीन दिनों के लिए पिलाएं। या,
8. बेल (Aegle marmelos) पेड़ की पत्तियों, फलों, छाल आदि को एक मुट्ठी भर कुट्लें। इन सामग्रियों को एक लीटर पानी में 30 मिनट के लिए उबालें। इसे ठंडा करें और दिन में दो बार, 3 दिनों के लिए पिलाएं। या,
9. सेमल (Bombax ceiba) पेड़ के 25 ग्राम तने की छाल पीसें और 250 मिलीलीटर पानी के साथ मिलाकर दिन में दो बार, 3 दिनों के लिए पिलाएं।

गैर-संक्रामक विषाक्त दस्त:

1. तुरंत 250 मिलीलीटर खानेबाला तेल जानवरों को पिलाएं। या,
2. लकड़ी का कोयला पाउडर पानी में घोलकर जानवर को पिलाएं। या,
3. नेब्लॉन 10 ग्राम पाउडर, 50 मिलीलीटर चावल के पानी/ दही के साथ मिलाएं, दिन में दो बार 2 दिनों के लिए दें। या,
4. बेक्नॉर आधा बोलस, दिन में दो बार 2 दिनों के लिए दें।

62. संक्रामक दस्त और क्रीमी के कारण दस्त

कभी-कभी जब आंतों की दीवारें, जीवाणु संक्रमण के कारण, पंचर हो कर अल्सर बन जाती हैं तब दस्त में खून होता है। अल्सर से निकलने वाला खून जब छोटी आंत में एसिड के साथ जुड़ जाता है, तो मल गहरा-भूरा रंग का हो जाता है।

लक्षण:

I) **खूनी / संक्रामक सफेद दस्त (Goat/Calf Scour):** इसमें बलगम और खून, गहरा रंग, बदबूदार गंध, पानी पिचकारी जैसा दस्त, ई-कोलाई जिबाणु संक्रमण के मामले में सफेद रंग हो सकता है जिसे Goat Scour कहा जाता है, पिछले भाग गंदे हो सकते हैं, क्रोनिक डायरिया के परिणामस्वरूप कमजोर, क्षीण और एनीमिक आदि जानवर हो जाता है
ii) **परजीवी से दस्त:** दस्त में क्रीमी/ अंडे पाए जाते हैं, कभी कब्ज और कभी दस्त, बदबूदार गंध, जानवर एनीमिक और कमजोर हो जाता है आदि

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

खूनी / संक्रामक सफेद दस्त (Goat/Calf Scour):

1. कारण जो भी हो सकते हैं, आधा बाल्टी पानी में 25 ग्राम नमक, 10 ग्राम बेकिंग सोडा और 100 ग्राम गुड़ मिलाएँ और भरपूर पिलाएँ। या, 1 गिलास छानच + 1 चम्मच हल्दी पाउडर मिलके पिलाएं। और,
2. 50 ग्राम हर्रा (Terminalia chebula) पाउडर को 50 ग्राम दही के साथ मिलाएं और 2 दिनों के लिए दिन में दो बार खिलाएं । यह सभी प्रकार के दस्तों के खिलाफ बहुत प्रभावी है। या,
3. गुड़मार (Gemnyma Silvestre) को पीसकर 25 ग्राम के पत्ते, 10 ग्राम जीरा और 100 ग्राम दही घोलकर 3 दिनों के लिए दिन में दो बार पिलाएं । या,
4. कुटाजा (Holarrhena antidysenterica) और महुआ (Madhuca indica) के पेड़ की 20-20 ग्राम ताजा छाल को पीस लें, 20 ग्राम हल्दी के साथ मिलाएं और बोलस बनाएं, 3 दिनों के लिए दिन में दो बार खिलाएं।

परजीवी से दस्त:

1. बकरी का बच्चा: यदि 2-3 दिन का बच्चा है तो सरसों के तेल की 5 बूंदों और 1 चुटकी हल्दी पाउडर का पेस्ट बनाएं और 2 दिनों के लिए दिन में दो बार चाटने के लिए दें। अगर 5 से 14 दिन का बच्चा है तो 1 कप चाय बना लें, इसमें बैबूल की 2 पत्तियां डालें और पिलाएं। यदि 14 दिनों से अधिक है, तो 1 मिलीलीटर प्रति 4 किलोग्राम शरीर के वजन पर अल्बेंडाजोल के साथ डीवर्म करें और चाय के फार्मूले का भी पालन करें।
   डॉ रामावत: https://youtu.be/9NxsCgnOblg
   ** वयस्क बकरियों के लिए नियमित रूप से एक वर्ष में 4 बार डीवर्म करें
2. 25 ग्राम चिरैता/भुइनीम (Andrographics paniculata) पाउडर या कुटाजा (Holarrhena antidysenterica) छाल, 10 ग्राम कच्ची हल्दी और काली मिर्च के 10 पिस के साथ मिलाएं, बोलस बनाएं और 3 दिनों के लिए दिन में एक बार खाली पेट खिलाएं।

63. कोलिबासिलोसिस (ई कोलाई, Goat/Calf Scour)

यह एक जीवाणु रोग है जो मुख्य रूप से सभी प्रजातियों के सूअरों, बकरियों, भेड़ों और गाय, बैल के नवजात जानवरों को प्रभावित करता है। नवजात जानवर जिन्हें कोलोस्ट्रम को ठीक से और समय पर नहीं खिलाया जाता है, वे इस बीमारी के लिए अतिसंवेदनशील होते हैं। कम जगह पर अत्यधिक जानबर, जलवायु की स्थिति जैसे बहुत गर्म या बहुत ठंडी आदि इस बीमारी की कारण बनतीं है।

लक्षण:

1. पीले-सफेद रंग के बदबूदार, पानी जैसा दस्त नवजात जानवर में ज्यादा प्रभावित करता है और ज्यादातर मामलों में खून और श्लेष्म, गंदे पूंछ/ गुदा क्षेत्र होते हैं; गंभीर निर्जलीकरण 2-6 घंटे आदि के भीतर मौत की ओर जाता है
2. पेट दर्द, पीठ टेढी होना आदि

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. कारण जो भी हो सकते हैं, आधा बाल्टी पानी में 25 ग्राम नमक, 10 ग्राम बेकिंग सोडा और 100 ग्राम गुड़ मिलाएँ और भरपूर पिलाएँ। या, 1 गिलास छानच + 1 चम्मच हल्दी पाउडर मिलके पिलाएं। और,
2. 50 ग्राम हर्रा (Terminalia chebula) पाउडर को 50 ग्राम दही के साथ मिलाएं और 2 दिनों के लिए दिन में दो बार खिलाएं। यह सभी प्रकार के दस्तों के खिलाफ बहुत प्रभावी है । या,
3. गुड़मार (Gemnyma Silvestre) को पीसकर 25 ग्राम के पत्ते, 10 ग्राम जीरा और 100 ग्राम दही मिलाकर, 3 दिनों के लिए दिन में दो बार पिलाएं । या,
4. कुटाजा (Holarrhena antidysenterica) और महुआ (Madhuca indica) के पेड़ की 20-20 ग्राम ताजा छाल को पीस लें, 20 ग्राम हल्दी के साथ मिलाएं और बोलस बनाएं, 3 दिनों के लिए दिन में दो बार खिलाएं।

64. डिहाइड्रेशन / निर्जलीकरण

खुन में पानी और खनिजों की अत्यधिक कमी को निर्जलीकरण कहा जाता है । यह निम्नलिखित कारणों से हो सकता है, a) अत्यधिक गर्मी और पसीना b) दस्त c) एसिडोसिस और अल्कलोसिस । जो भी कारण हो, शरीर द्वारा खोए गए पानी और खनिजों को प्रतिस्थापित करना बहुत आवश्यक है, पशु को बिंदु a और b के मामले में अधिक पानी पीने के लिए देना है और बिंदु c के मामले में पानी नहीं देकर, बोतल चढ़ाया जाता है।

Dr Ramawat: https://youtu.be/myTrehBNFw0

लक्षण: सूखी त्वचा, डी-हाइड्रेटेड कमजोर शरीर

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. एसिडोसिस की वजह को छोड़कर बाकि सब कारण केलिए लागु- चावल के पानी में नमक और गुड डालकर दिन में दो बार दें
2. 5 लीटर साफ्पानी में 20 ग्राम नमक और 100 ग्राम गुड डालें और जितना जानवर पी सकता है उतना दें.

** यदि निर्जलीकरण एसिडोसिस के कारण होता है, तो पीने के लिए पानी न दें।

भाग 10 : श्वसन प्रणाली के रोग

65. सर्दी, खांसी और जुकाम (राइनाइटिस) / निमोनिया / सीसीपीपी

सर्दी और खांसी सभी प्रजातियों को किसी भी मौसम में प्रभावित करती है। लेकिन बारिश और सर्दियों में अधिक बार देखी जाती है। कारण- मौसम में परिवर्तन, फेफड़ों के कीड़े से प्रभावित, उचित वेंटिलेशन और प्रकाश व्यवस्था की कमी, प्रदूषण, धूल, भीड़-भाड़ शेड और शेड में नमी, एलर्जी प्रतिक्रियाओं आदि के कारण होता है। इसके अलावा, पीपीआर, बकरी/भेड़ पॉक्स, एचएस, सीसीपीपी जैसे संक्रामक रोग सर्दी / खांसी का कारण बनते हैं। डॉ रामावत: https://youtu.be/xH8jDrCGe64

लक्षण:

छींकना, खांसना, हल्का बुखार, सांस लेने में कठिनाई, पीले रंग के नाक से पानी का स्राव, आंखों में पानी आना, भूख की कमी आदि। यदि सर्दी और खांसी के साथ तेज बुखार, गर्दन लम्बी और सिर जमीन के समानांतर होना, अत्यधिक अवसाद आदि होते हैं, तो यह निमोनिया / सीसीपीपी हो सकता है। गर्म और आर्द्र जलवायु CCPP रोग के प्रसार में मदद करती है। CCPP बकरी और भेड़ की एक माइकोप्लाज्मल बीमारी है। जबकि सीबीपीपी गोजातीय का एक माइकोप्लाज्मल रोग है।

** CCPP के लक्षण - नीली जीभ, फेफड़ों की कीड़ा, बकरी पॉक्स, पीपीआर, एच एस बीमारी से मिलता है।

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. शेड में उचित वेंटिलेशन बनाए रखें, शेड को साफ़रखें, बारिश और खराब मौसम आदि के संपर्क में आने से बचें। और,
2. वयस्क जानवरों को हर 3 महीने में एक बार डीवर्म, बच्चे/ बछड़ों को महीने में एक बार करें।
3. **बुखार के लिए इलाज:** 5 ग्राम हल्दी पाउडर, 10 ग्राम अदरक और 1 मुट्ठी ताजा तुलसी (Ocinum sanctum) के पत्तों को एक साथ पीस लें और 3 दिनों के लिए दिन में एक बार पिलाएं।
4. **मिक्स ऑयल:** 1 लीटर सरसों का तेल + 100 ग्राम लहसुन + 30 ग्राम कलौंजी (काला जीरा) + 30 ग्राम अजवाइन लें। उपरोक्त सामग्री को सरसों के तेल में साबुत डाला जाना चाहिए और सामग्री को चॉकलेट या कॉफी रंग में बदलने तक सबसे कम आंच में लगभग 30-45 मिनट तक पकाया जाना चाहिए। आम तौर पर इसे 2-3 दिनों के लिए प्रति दिन 5-10 मिलीलीटर पिलाना चाहिए । इसको लगभग 3-4 सप्ताह तक रख कर उपयोग किया जा सकता है। https://www.youtube.com/watch?v=DiSiKXXkU50 या,
5. लहसुन की 5 पंखुड़ियों के साथ 10 ग्राम अजवाइन कुट्लें और बोलस बनाने के लिए 100 ग्राम गुड मिलाएं, 3 दिनों के लिए दैनिक रूप से एक बार खिलाएं । या,
6. 5 ग्राम हिंगू के साथ 25 ग्राम अजवाइन लें और 25 ग्राम गुड के साथ मिलाएं, छोटी-छोटी बोलस बनाकर 10 ग्राम दिन में दो बार 3 दिन तक दें। या,
7. अपामार्ग (Achyranthes aspera) के 20 ग्राम ताजा पत्ते लें और 5 मिलीलीटर तिल (Sesamum) तेल जोड़ें और 3 दिनों के लिए दिन में दो बार पिलाएं । या,
8. **आयुर्वेदिक उपचार:** 10 ग्राम गुड के साथ 10 ग्राम कैफेलॉन पाउडर मिलाएं, बोलस बनाएं और 3 दिनों के लिए दिन में दो बार खिलाएं

66. ड्रेन्चिंग निमोनिया (Drenching Pneumonia)

जबरदस्ती और गलत तरीका से पिलाने से, तरल पदार्थ श्वासनली और फेफड़ों में जा सकता है। इसके परिणामस्वरूप ड्रेंचिंग निमोनिया हो सकता है।

लक्षण: खांसी, शरीर के तापमान कम होना

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. गर्म पानी में आधा चम्मच विक्स डालकर गर्म ह्वा का उपचार (भांप) दें। डॉ रामावत https://youtu.be/ZcNNMgg7RDA
2. यदि पशु आराम से खा पा रहा है, तो 100 ग्राम प्याज + 5 पिस इलाइची को 50 ग्राम गुड के साथ पीस लें। दैनिक रूप से दो बार, 2 दिनों के लिए खिलाएं।

67. Infectious Bovine Rhino Tracheitis (IBR, आईबीआर)

यह एक वायरल बीमारी है जो मुख्य रूप से बारिश और गीले मौसम के दौरान छींकने के माध्यम से संक्रमण के कारण होती है। केवल गाय, बैल और भैंस प्रभावित होते हैं।

लक्षण:

तेज बुखार, सांस लेने में कठिनाई, खुले मुंह से सांस लेना, नाक से स्राव, नाक और आंख की लाल पड़ जाना, तंत्रिका तंत्र प्रभावित, गर्भपात आदि

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. **बुखार के लिए इलाज:** तुलसी के पत्तों (Ocium sanctum) के 20 ग्राम, काली मिर्च के 2 ग्राम, 50 ग्राम प्याज सभी को एक साथ पीस लें और एक बोलस बनाएं, और दिन में एक बार, तीन दिनों के लिए खिलाएं। और,
   आयुर्वेदिक उपचार: 10 ग्राम कैफेलॉन पाउडर + 10 ग्राम हिमालय बातीसा + 10 ग्राम गुड मिलाएं, बोलस बनाएं और 3 दिनों के लिए दिन में दो बार खिलाएं।
2. **मिक्स ऑयल:** 1 लीटर सरसों का तेल + 100 ग्राम लहसुन + 30 ग्राम कलौंजी (काला जीरा) + 30 ग्राम अजवाइन लें। उपरोक्त सामग्री को सरसों के तेल में साबुत डाला जाना चाहिए और सामग्री को चॉकलेट या कॉफी रंग में बदलने तक, सबसे कम आंच में लगभग 30-45 मिनट तक पकाया जाना चाहिए। आम तौर पर इसे 2-3 दिनों के लिए प्रति दिन 5-10 मिलीलीटर पिलाएं।

https://www.youtube.com/watch?v=DiSiKXXkUz0

भाग 11 : प्रजनन और मूत्र प्रणाली के रोग

68. गर्मी में न आना (Anoestrus)

कारण - गर्भाशय की बीमारी, भारी कृमि संक्रमण, उचित पोषण/ विटामिन/ खनिजों की कमी, अधिक वजन, जन्म दोष आदि

लक्षण:

यह एक ऐसी स्थिति है जहां मादा-जानवर गर्मी में वापस नहीं आते हैं। यह स्थिति गायों में आमतौर पर ज्यादा दिखती है।

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. पशु को कृमिमुक्त करना और खनिज मिश्रण सहित संतुलन चारा देना। और,
2. 1-2 जायफल को कुचलें और केले या गुड के साथ मिलाएं और एक बार खिलाएं। या,
3. 1 कप एलोवेरा जूस और 25 ग्राम गुड के साथ 1 चम्मच हल्दी मिलाएं, 7 दिनों तक रोजाना खिलाएं। या,
4. आयुर्वेदिक उपचार: प्रजाना कैप्सूल - 3 दिनों के लिए एक समय में दैनिक दो कैप्सूल दें। अगर गर्मी में न आए तो 12 दिनों के बाद उसी तरह से दोहराएं। अन्य गोलियों जैसे HITALI, HIMFERTIN आदि का भी उपयोग किया जा सकता है।
   Dr Ramawat: https://www.youtube.com/watch?v=cPxe0otedrA

&
https://youtu.be/tciu2y1EQZQ

69. रिपीट ब्रीडिंग (Repeat Breeding)

जानवर लगभग सामान्य मद-चक्र दिखा रहा हो और समय पर क्रसिंग भी हो रहा हो, ऐसा कम से कम दो-बार होने के बाबजूद भी गर्भ न ठहरता हो और फिर हिट में आजाता है। यह जननांग पथ के किसी भी संक्रमण, निषेचन की विफलता, प्रारंभिक भ्रूण मृत्यु आदि के कारण हो सकता है।

लक्षण:

जानवर बार-बार क्रासिंग के बाद भी गर्मी में लौटता है; अक्सर सफेद मवाद, लाल, खूनी, योनि से बदबूदार निर्वहन आदि

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. खनिज मिश्रण को 20 दिनों के लिए प्रति दिन 10 ग्राम दें। और, काली मिर्च की 10 पीस, 5 ग्राम हल्दी पाउडर + 10 ग्राम गुड के साथ दैनिक रूप से मिलाएं और 10 दिनों के लिए खिलाएं। उसके बाद 5 ग्राम हल्दी पाउडर के साथ 10 ग्राम एलोवेरा का रस दैनिक मिलाएं और 10 दिनों के लिए दें। डॉ रामावत: https://youtu.be/VYKv-LzP1GM या,
2. 2 दिनों के लिए दिन में एक बार कांटकारी (Solanum &anthocarpum) के 2-3 ताजे फल खिलाएं। या,
3. केले की 200 ग्राम ताजा तने की छाल, 15-20 दिनों के लिए दिन में एक बार खिलाएं।

** उपचार के तुरंत बाद जानवरों को क्रसिंग न करबाकर, एक गर्मी जाने के बाद करबाएँ।

70. गर्भाशय की सूजन (Metritis)

सभी प्रजातियों के गर्भाशय का संक्रमण, प्रसव के बाद होता है जो गर्भपात, भ्रूण संक्रमण, डिस्टोकिया, जेर/ प्लेसेंटा न गिरना आदि से जुड़ा हो सकता है। यह जीवाणु, वायरस और प्रोटोजोआ के कारण भी हो सकता है।

लक्षण:

अक्सर योनि से एक बदबूदार-सफेद मवाद निर्वहन होता है और ओस्ट्रम साफ पारदर्शी के बजाय सफ़ेद या दूधिया हो सकता है; डिस्चार्ज में मवाद के गुच्छे; ज्वर आदि

डॉ रामावत: https://youtu.be/GW3mAHyph4M

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. प्रसव के दौरान और बाद में स्वच्छता का पालन किया जाना चाहिए। और,
2. दैनिक एक मुलि लागातर चार दिन तक दें । दस दिन बाद इसे और एक बार रिपीट करें। या,
3. 2 दिनों के लिए दिन में एक बार कांटकारी (Solanum &anthocarpum) के 2-3 ताजे फल खिलाएं। या,
4. केले की 200 ग्राम ताजा तने की छाल, 15-20 दिनों के लिए दिन में एक बार खिलाएं।

** उपचार के तुरंत बाद जानवरों को क्रसिंग न करबाकर, एक गर्मी जाने के बाद करबाएँ।

71. गर्भपात - प्रारंभिक चरण, गैर संक्रामक

गर्भावस्था के दौरान गर्भपात किसी भी चरण में हो सकता है। प्रारंभिक अवस्था में गर्भपात का कारण- वाइब्रियोसिस या ट्राइकोमोनिएसिस के संक्रमण, दुर्घटनाओं/ चोटों, पोषण संबंधी कमियों, गर्भाशय के रोगों, जानवरों में संक्रामक रोगों, ब्रीडर की बीमारी, गर्भावस्था के शुरुआती या शेस चरणों के दौरान टीकाकरण आदि के कारण हो सकता है।

पोषण संबंधी समस्याएं: स्वस्थ बच्चों के लिए, माँ को उचित पोषण आवश्यक है। ऊर्जा और प्रोटीन की एक साथ कमी गर्भावस्था में भ्रूण के गर्भपात का कारण बन सकती है। तांबे और आयोडीन जैसे कुछ ट्रेस खनिजों की कमी भी गर्भपात का कारण हो सकती है। इसके अलावा, एक लम्बी अवधि के लिए अत्यधिक सेलेनियम गर्भपात का कारण बन सकता है।

लक्षण:

अत्यधिक खूनस्राव, मृत भ्रूण का निष्कासन, गर्भाशय से डिस्चार्ज, जानवर अनियमित अंतराल पर गर्मी में लौटना आदि

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. अमरबेल (Cuscuta reflexa) के पूरे पौधे को कुट्लें और 25 मिलीलीटर रस निकालें, दिन में एक बार 5 दिनों के लिए पिलाएं ।

या,

2. 2 दिनों के लिए दिन में एक बार कांटकारी (Solanum xanthocarpum) के 2-3 ताजे फल खिलाएं। या,
3. केले की 200 ग्राम ताजा तने की छाल, 15-20 दिनों के लिए दिन में एक बार खिलाएं।

** उपचार के तुरंत बाद जानवरों को क्रस्सिंग न करबाकर, एक गर्मी जाने के बाद करबाएँ।

72. देर-चरण में गर्भपात: संक्रमण केलिए (मृत-बच्चा का जन्म)

लक्षण:

गर्भपात, गर्भावस्था के अंतिम 2 महीनों में मृत-बच्चा का जन्म आदि

संक्रामक समस्याएँ

आपके झुंड में एक या अधिक बकरियों द्वारा गर्भपात एक संक्रामक बीमारी का संकेत दे सकता है जिसे समग्र प्रबंधन की आवश्यकता होती है। समस्या पैदा करने वाले संक्रमण निम्नके प्रकार हो सकता है।

- **क्लैमाइडिओसिस** - एक इंट्रासेल्युलर जीव के कारण होता है। गर्भपात आमतौर पर गर्भावस्था के अंतिम 2 महीनों में होता है और विशेष रूप से आखरी 2 सप्ताह में होता है। इंट्रामस्क्युलर रूट द्वारा टेट्रासाइक्लिन इंजेक्ट करने पर विचार करना चाहिए ताकि उन्हें गर्भपात करने से रोका जा सके।
- **टोक्सोप्लाज्मोसिस** - यह बिल्लियों के एक कोक्सिडियम के साथ जुड़ा हुआ है। बिल्लियों बिना पके हुए मांस टुकड़ा, प्लेसेंटा और छोटे चूहों का सेवन करके संक्रमित हो जाते हैं। बिल्ली के मल से दूषित घास खाने से बकरियां संक्रमित हो जाती हैं। इसके परिणामस्वरूप गर्भपात, स्टिलबर्थ और कमजोर बच्चे हो सकते हैं।
- **क्यू फीवर** - एक जीवाणु रोग जो जानवरों से लोगों को प्रेषित होने में सक्षम है। यह जिबाणु भेड़, गाय, बैल, बकरियों, बिल्लियों, कुत्तों, कुछ जंगली जानवरों, पक्षियों और टिक में पाया जा सकता है। जानवर अपने मूत्र, मल, दूध, और विशेष रूप से प्रसब समय निर्गत डिस्चार्ज के माध्यम से इस जिबाणु को फैलाते हैं।
- **ब्रूसेलोसिस** - Brucella जीव, बकरी के प्लेसेंटा और थन को संक्रमित करके, गर्भपात और थैनेला का कारण बनता है ।जब बकरियों एक तनावपूर्ण वातावरण में हैं और प्रबंधन पोषण और परजीवी रोगों को नियंत्रित करने के लिए पर्याप्त नहीं होता है, तो गर्भावस्था के अंतिम 2 महीनों में गर्भपात होता है।
- Listeriosis - लिस्टेरिया monocytogenes, एक सर्वव्यापी जीव है। वह मिट्टी, पानी, पौधे के कूड़े और जुगाली करने वालों जानबर के पाचन तंत्र में पाया जाता है। गर्भपात आखिरी 2 महीनों में होता है। टेट्रासाइक्लिन का उपयोग कर सकते है।

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. 10 ग्राम मंजूआति (हीना) पाउडर + 10 ग्राम गुलकंद को 3 महीने के लिए महीने में 10 दिनों के लिए रोजाना दें।

डॉ रामावत द्वारा: https://youtu.be/FuLfsaaDOjk

73. ब्रुसेलोसिस

यह गर्भपात एक जीवाणु संक्रामक बीमारी है। मादा में, आखिरी समय पर गर्भपात, जेर न गिराना अदि और नर जानवरों में अंडकोष की सूजन, प्रजनन अंग के संक्रमण आदि विशेष लक्षण दिखती है। गर्भपात किए गए भ्रूणों, भ्रूण झिल्ली और गर्भाशय स्राव आदि के संपर्क में आने से जानवरों में यह प्रकट होता है।

लक्षण:

मादा में: गर्भावस्था के अंतिम दो महीनों में गर्भपात, जेर न गिराना, मृत बच्चा का जन्म, कमजोर बछड़ों / मेमने का जन्म, बांझपन, कम दूध आदि

नर में: अंडकोष की सूजन, शरीर की स्थिति का नुकसान, जोड़ों का दर्द

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. यह एक ज़ोनोटिक बीमारी है। ब्रुसेलोसिस से प्रभावित होने पर पुरुष नपुंसक हो सकते हैं। हाथों पर प्लास्टिक कवर का उपयोग करके गर्भपात किए गए भ्रूणों, भ्रूण झिल्ली और गर्भाशय स्राव आदि को मिट्टी में दफ़न करें या जला दें।
   डॉ रामावत: https://www.youtube.com/watch?v=Oq7ADFQzIIQ और
2. Brucella टीकाकरण करें।

74. फूल पाठा दिखाना / गर्भाशय के प्रोलैप्स

जब जानवर में क्रीमी होते हैं, तो अक्सर कब्ज हो जाता है। केवल सूखा चारा और दाना मिश्रण खिलने से भी जानवर को कब्ज हो जाते हैं। पशु मल त्यागने के लिए जोर लगता है जो प्रोलैप्स का कारण बनता है । यह पोषण और खनिज / विटामिन की कमी के कारण होता है, विशेष रूप से कैल्शियम की।

लक्षण:

प्रसव से पहले प्रोलैप्स: योनि के भीतरी हिस्से दिखाई देना

प्रसव के बाद प्रोलैप्स: प्रसव के बाद पूरा गर्भाशय योनि से बाहर निकलता है। विशाल मांसपिंड गर्भाशय से बाहर लटकता दिखाई देता है।

Dr Umer https://youtu.be/OF3bc5y4H9w

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. हरा चारा, खनिज मिश्रण और ढेर सारा पानी दें। गर्भावस्था के अंतिम चरणों की ओर सूखे चारे को कम करें। और,
2. यदि जानवर लेटा हुआ है, तो एक साफ़कपड़ा लें और निकली हुई गर्भाशय के नीचे रखें, फिर धीरे से पिछकरी के पानी (1 चम्मच + 1 लीटर) या 2 मुट्ठीभर के छुईमुई (Mimosa pudica) पत्तियों के रस से धोकर गर्भाशय को साफ़करें। यह गर्भाशय को आकार में कम करने में मदद करता है। फिर धीरे से गर्भाशय को अन्दर वापस धकेलें। और,
3. 100 ग्राम घी और काली मिर्च का 1 ग्राम पाउडर लें और 2 दिनों के लिए दिन में एक बार खिलाएं। और,
4. 100 ग्राम एलोवेरा का रस लें, 1 चम्मच हल्दी के साथ मिलाएं फिर इसे 500 मिलीलीटर पानी के साथ उबालें । यह पानी से फूल/prolapsed को धोएं और सूखने के लिए छोड़ दें। फिर 2 मुट्ठी लजबंती के पत्ते (Mimosa pudica) पीस लें, एक पेस्ट बनाएं और फूल/prolapsed में दिन में 2 बार लगाएं। NDDB: https://youtu.be/qbo60St-AFg

75. डिस्टोकिया / Dystokia (प्रसब में कठिनाई)

बाहरी मदद से जन्म और प्रसब में कठिनाई को डिस्टोकिया कहा जाता है। यह उन कारणों के कारण होता है - जैसे जानवर का पहली डिलीवरी, कमजोरी, बछड़ा बहुत बड़ा (एक छोटी स्थानीय गाय के गर्भाशय में बड़े क्रॉसब्रीड बछड़े), प्रसव के दौरान बछड़े की गलत स्थिति आदि।

लक्षण:

पशु लंबे समय तक जोर बहुत लगता है लेकिन बच्चा निकलने में असमर्थ, बछड़े के शरीर का हिस्सा दिखाई दे रहा हो लेकिन बाहर आने में असमर्थ, गर्भाशय के संकुचन बंद हो जाते हैं आदि

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. अपामार्ग (Achyranthes aspera) पौधे के शरीर के सभी भाग का 1 मुट्ठीभर पीस लें और केवल योनि के बाहरी हिस्से पर पेस्ट लागू करें यह बहुत प्रभावी है। या फिर योनी मार्ग के अंदर एलोवेरा का रस लगाएं। और,
2. कुचिला (Strychnus potatorum) और काजा (Bridelia retusa) पेड़ के प्रत्येक 25 ग्राम तने की छाल पीसें और 2-3 दिनों के लिए दिन में एक बार खिलाएं ताकि दर्द कम हो जाए।
3. सुचारू प्रसब के लिए; 200 मिलीलीटर गाय का दूध लें, 40 मिलीलीटर किसी भी खाद्य तेल को मिलाएं और बच्चा देने से 1-2 दिन पहले, 2-3 बार पिलाएं। डॉ रामावत https://youtu.be/GmgGIFH1PtI, या डिलीवरी के 7-10 दिनों से पहले प्रतिदिन 10 मिलीलीटर सरसों का तेल पिलाएं।

   डॉ रामावत https://youtu.be/wpDejHn4rPo
4. उमेश सर द्वारा प्रसव के बाद देखभाल: https://youtu.be/pjRPTEophYw

   मृत बच्चों पैदा होने से: इंजेक्शन Ceftriaxones और Tazibactam 250 मिलीग्राम IM, फिर Tolfenamic एसिड 3 मिलीलीटर आईएम इंजेक्ट करें, फिर मल्टीविटामिन + सीपीएम 3 मिलीलीटर प्रत्येक दें.

   डॉ रामावत द्वारा: https://youtu.be/89mGbPXmsH8 और डॉ उमर: https://youtu.be/Fk7XnnjByF4

76. जेर न गिराना (Retained placenta)

जेर/प्लेसेंटा, प्रसव के दो घंटे के भीतर गिर जाना चाहिए लेकिन यहां प्लेसेंटा पूरी तरह से बाहर नहीं आ जाता है। यह गर्भाशय में बीमारी, गर्भपात, कमजोरी आदि के कारण हो सकता है।

लक्षण:

प्रसव के 6-7 घंटों के भीतर प्लेसेंटा पूरी तरह से अपने आप बाहर नहीं गिरता है, लटकता रहता है

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. 200 ग्राम निर्मुली (Cuscuta) एक बार खिलायें। या,
2. अमलतास (Cassia fistula) की छाल को पीसें, और गुड मिलाकर एक बार खीलाएं। या,
3. 100 ग्राम गुड+ 20 ग्राम अजवाइन और 50 ग्राम अदरक को पीसकर 500 मिलीलीटर पानी में 20 मिनट तक उबालें, ठंडा करें और प्रसव के 2 घंटे के भीतर बकरी को दे। डॉ रामावत द्वारा: https://youtu.be/_vXROqGXbzo या,
4. कांटेदार बांस के 100 ग्राम पत्तों को 1 लीटर पानी में उबालें, जब तक कि पानी आधा न हो जाए। इसे ठंडा करें और 50 ग्राम गुड और 10 ग्राम अजवाइन पाउडर को मिलाएं और एक बार पिलाएं। डॉ रामावत https://youtu.be/r3nebKVZZmU या,
5. गाय/भैंस का 1 गिलास दूध लें और इसे 5 मिनट के लिए उबालें। फिर 1 कप सरसों का तेल + 1 चम्मच सोंठ (सूखा अदरक) डालें और 5 मिनट के लिए उबालें द इसे ठंडा करें और पिलाएं, दिन में तीन बार 1 दिन के लिए डॉ रामावत द्वारा: https://youtu.be/espTqdsSkM8 , या
6. किसी एक का गरम घोल बनाएं - रागी (मडुआ)/बाजरा/ज्वार, 50 ग्राम गुड और एक चुटकी नमक मिलाएं और एक बार खिलाएं। या,
7. आयुर्वेदिक उपचार: एक्सापार 10 मिलीलीटर के साथ 50 ग्राम गुड, दिन में एक बार 7 दिनों के लिए दें।

77. डिलीवरी के बाद खूनस्राव (PPH)

प्रसव के बाद अत्यधिक खूनस्राव; कमजोरी, डिस्टोकिया, प्रसव के दौरान चोटों आदि के कारण होता है.

लक्षण: प्रसव के बाद अत्यधिक खूनस्राव

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. 250 ग्राम अमरूद के पत्तों को 1 लीटर पानी के साथ तब तक उबालें जब तक कि यह आधा न हो जाए, फिर ठंडा करें और इस पानी से योनि को धीरे से धो लें। और,
2. बबूल (Acacia nilotica) पेड़ की 50 ग्राम छाल+ 25 ग्राम काला सरसों को पीसें और 50 ग्राम गुड के साथ दिन में एक बार 3 दिनों के लिए खिलाएं। या,
3. 400 ग्राम जटरोफा के पत्तों को कुट्लें और 600 मिलीलीटर पानी में उबालें जब तक कि यह आधा न हो जाए। इसे 3 भागों में विभाजित करें और 3 दिनों के लिए दिन में एक बार पिलाएं।

78. थनैला (Mastitis, चिर में दरार, थन में पानी/Udder edema)

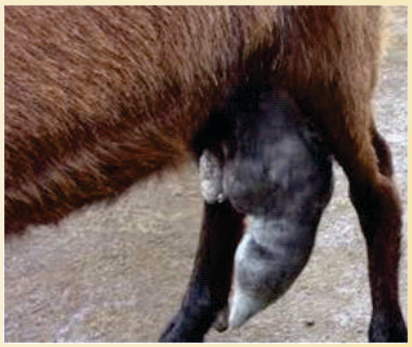

इस रोग में स्तन-ग्रंथि संक्रमित होती है जिसके कारण वह कठोर और सूज जाती है। कारण - दूध निकलने के आधे घंटे तक दूध-ग्रंथियों बंद न होने से, संक्रमण इस के माध्यम से चिर में प्रवेश करता है। गन्दगी भरी परिवेश, अनुचित दुहना, दूध देने के दौरान पूरी तरह से दूध न निकालना आदि समस्या को बढ़ाते हैं।

चिर में दरार - कभी-कभी चूसने के दौरान बछड़े के काटने, खनिज और विटामिन की कमी आदि के कारण चिर में दरारें पड़ जाती हैं। इसके अलावा, प्रसव के ठीक बाद थन में भरे गए पानी को **अडर एडिमा** कहा जाता है।

लक्षण:

फटा हुआ/दरार चिर, चिर में खटास, थन गर्म लगता है, थन में सूजन, जानवर दुहने की अनुमति नहीं देता है और लात मारता है, दूध पानी/मवाद की तरह हो जाता है, कभी-कभी दूध में खून पाया जाता है, थन में पानी भर जाना आदि

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. शेड को साफ रखें, नीम के पानी या पोटेशियम परमैंगनेट या फिटकिरी पानी से चिर और थन को धोएं। दूध निकालने समय स्वच्छता बनाए रखें। किसी भी दवा को लगाने से पहले हमेशा संक्रमित चिर से दूध निकाल लें। और,
2. पान के 4-5 पत्ते, इसे 50 ग्राम अरंडी के तेल के साथ मिलाएं। जानवरों को 3 भागों को खिलाएं और 1 भाग को थन में लगाएं, दिन में एक बार 2-3 दिनों के लिए । या,
3. 25 ग्राम एलोवेरा का गूदा, 2 मुट्ठीभर छुईमुई (Mimosa pudica) के पत्ते, 10 ग्राम हल्दी पोडर, 5 ग्राम चूना (पान बनाने में उपयोग किया जाता है) मिलाएं और 2 दिनों के लिए दिन में एक बार थन में लगाएं। या,
4. कपूर और हल्दी पाउडर बराबर लें, नारियल तेल या घी के साथ मिलाएं और थन पर लगाएं। या,
5. तुलसी या नीम के पत्तों से लगभग 10 मिलीलीटर रस निचोड़ लें, बराबर मात्रा में नारियल तेल या घी मिलाएं और लागू करें।
6. **फटे हुए/घाव वाले चिर के लिए:** 50 ग्राम काली सरसों के बीज लें और इसे भूनें ताकि इसे आसानी से पाउडर किया जा सके। पुराने साइकिल टायर ले लो और इसे जला दो । टायर की राख के 50 ग्राम को सरसों पाउडर और 25 ग्राम हल्दी पाउडर के साथ मिलाएं। इस मिश्रण में उतना सरसों का तेल मिलाएं, ताकि एक पेस्ट बन जाए। दूध निकालने के बाद इसे दिन में दो बार 4-5 दिनों के लिए लगाएं
   डॉ रामावत https://youtu.be/l2fEt8NTu24
7. **अड़र एडिमा**- थन में पानी भरा हुआ है तो, काली मिर्च के 10 पिस + 5 ग्राम काली जिरी पीस लें और इसे 10 ग्राम घी + 10 ग्राम गुड के साथ मिलाएं और 3 दिनों के लिए दिन में एक बार खिलाएं। और पान में इस्तेमाल होने वाले 5 ग्राम चुना, 50 मिलीलीटर एलोवेरा जूस+ + 5 ग्राम हल्दी पाउड़र का पेस्ट बना लें और 3 दिन तक रोजाना लगाएं।
   डॉ रामावत, https://www.youtube.com/watch?v=2hQcUav56IU

79. हठात दूध बंद हो जाना (Agalactia)

यह एक ऐसी स्थिति है जिसमें जानवर अचानक आंशिक रूप से या पूरी तरह से दूध देना बंद कर देता है। यह, किसी प्रकार की चोट या चिर-ग्रंथियों में रुकावट के लिए हो सकती है।

लक्षण:

थन सूजे हुए और दूध से भरा हुआ लगता है, लेकिन दूध नहीं निकलते है।

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. 25 ग्राम जीरा को बारीक पीसकर 25 ग्राम गुड के साथ मिला लें और 3 दिनों तक रोजाना एक बार खिलाएं । या,
2. आसन (Terminalia alata) पेड़ के कोमल पत्ते खिलाएं । या,
3. शतावरी (Asparagus reacemosa) की 50 ग्राम जड़ों को उबालें और 25 ग्राम गुड मिलायें 3-4 दिनों के लिए दैनिक रूप से एक बार खिलाएं।

80. दूध बुखार (Milk Fever, Hypocalcaemia)

स्तनपान की आरंभ होने से, खून में कैल्शियम की अचानक कमी होती है। यह आमतौर पर हाल ही में डेलिवरी (72 घंटे के भीतर) करने वाले अधिक उपज दुधारू पशुओं विशेष रूप से क्रॉसब्रीड गायों में पाया जाता है।

लक्षण:

चरण 1 - पशु अति-संवेदनशीलता और बेचैन के संकेत दिखाते हैं। तापमान कम या नर्मल रहता है लेकिन बाद में यह उत्तेजना के कारण ऊंचा हो सकता है। सिर और गर्दन को शारीर के ऊपर घुमाकर रखता है जो की एक विशिष्ट "एस" आकार देता है, जो दूध बुखार का खास पहचान है

चरण 2 - प्रसव के 72 घंटों के भीतर पैरालिसिस हो सकता है, खड़े होने में असमर्थ, सूखी थूथन, शरीर का तापमान कम जाना और ठंडे छोर, शरीर की दौरे जैसे स्थिति आदि। डॉ रामावत https://youtu.be/licoqSC8wR8

चरण 3 - पशु चेतना खो देते हैं और गिर जाते हैं

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. बकरी के लिए : 50-50 ग्राम मैग्नीशियम सल्फेट, कैल्शियम क्लोराइड और अमोनियम क्लोराइड (नौसादर) लें। प्रत्येक का 5 ग्राम, प्रसव से ठीक पहले 10 दिनों में दें। डॉ रामावत: https://youtu.be/Vs6knyaLuBY या,
2. किसी एक गरम घोल बना लें (300 ग्राम- मडुआ/बाजरा/ज्वार), प्रत्येक जीरा/अजवाईन/सौंफ / काली मिर्च/मेथी से 5-5 ग्राम पाउडर और 25 ग्राम गुड़ मिलाएं और हाल ही में डेलिवरी किए जानवर को दिन में एक बार 7 दिनों तक खिलाएं । या,
3. गर्भावस्था के दौरान आहार में पर्याप्त कैल्शियम दिया जाना चाहिए लेकिन अंतिम-तिमाही (शुष्क अवधि) को छोड़कर।

   घर पर बनाएं कैल्शियम: दीवार की सफेदी के लिए इस्तेमाल होने वाले 2 किलो चूने के पाउडर को प्लास्टिक के टब में लें, उसमें 3 लीटर पानी डालें और 3 घंटे के लिए छोड़ दें, फिर 8 लीटर अतिरिक्त पानी डालें। इसे अगले 3 दिनों के लिए दिन में एक बार केवल हिलाएँ और चौथा दिन ऊपर का साफ चूने के पानी (लगभग 8 लीटर) को निकालें। मैग्नीशियम सल्फेट और सोडियम एसिड फॉस्फेट का 1 किलो नमक खरीदें। प्रतिदिन बकरियों के पीने के पानी में 25 मिली चूने का पानी + 2.5 ग्राम प्रत्येक नमक मिलाएं।
   डॉ रामावत: https://youtu.be/VY-qBWDBH1E

Dr Umar (Allopathy) https://www.youtube.com/watch?v=5lsxr9DM41Q

81. गाय खड़े न हो पाना (Downer's cow syndrome)

यह एक ऐसी स्थिति है जहां जानवर खड़े होने में असमर्थ है, हालांकि अन्य शारीरिक प्रक्रिया जैसे खाना, मलत्यागना लगभग सामान्य रहता हैं। इसके कारण - पिछली बीमारी, जैसे दूध-बुखार, प्रसव के दौरान चोट लगना, जमीन पर गिरना आदि हो सकते हैं।

लक्षण:

बार-बार खड़े होने केलिए प्रयास करना लेकिन असफल होना एक महत्वपूर्ण लक्षण है, सिर वापस खींच कर शारीर के ऊपर रखना आदि Dr Ramawat https://youtu.be/RYnZ48uMzNw,

Dr Goat https://youtu.be/6QEmsjc1GB4

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

गाय के लिए: गाय लेटने केलिए नरम बेड तैयार करें। समय-समय पर साईड बदलें। 20 लीटर पानी में 1 चम्मच हल्दी और आधा चम्मच फिटकिरी मिलाएं। पानी को गर्म करके 4 टाँगों और जाँघों पर छिड़काब करें जिससे खून का प्रवाह बढ़ जाए। फिर सरसों के तेल (2 भाग) और आयोडेक्स 1 भाग का पेस्ट बनाकर दिन में एक बार मालिश करें। और, 50 ग्राम गुड़ प्रतिदिन अंकुरित मूंग 100 ग्राम के साथ 3 सप्ताह तक खिलाएं।

82. केटोसिस / Ketosis (एसिटोनेमिया, हाइपोग्लाइसीमिया) - चक्कर लक्षण

किटोसिस एक मेटाबोलिक रोग है जो अधिक उपज वाले दुधारू पशु के नेगेटिब ऊर्जा संतुलन (एन.ई.बी.) के कारण होता है। यह खून में ग्लूकोज के स्तर के कमी के कारण, प्रसव के कुछ दिनों या 1-3 सप्ताह के बाद होता है। यह वसा (फैट) के पिघलने से कीटोन बॉडी बनता है और खून के साथ मिश्रण होने से होता है। डॉ रामावत: https://youtu.be/3z7F1j6Pkks

लक्षण:

95% मामलों में शरीर का तापमान सामान्य या तो सामान्य रूप से कम रहता है। हालांकि, कुछ मामलों में केवल तापमान ज्यादा हो सकता है, जो अक्सर दूसरा संक्रमण के कारण होता है। इसके दो रूप हैं। दोनों रूपों में यह लक्षण पाया जाता हैं - मुंह / मूत्र / दूध से मीठी गंध (एसीटोन) आना और जानवर मल, प्लास्टिक आदि जैसी असामान्य चीजों को खाना शुरू कर देंगे।

1. **पाचन प्रक्रिया में विकार का रूप:** पशु सूखे चारे को खाना जारी रखेगा, लेकिन हरे चारे को कम कर देगा और दाना मिश्रन को पूरी तरह से खाना बंद कर देगा। मल में श्लेष्मा, वसा और मांसपेशियों के पिघलने के परिणाम स्वरूप शारीर कंकाल जैसा दिखाई देगा या पेट दर्द हो सकता है। डॉ रामावत: https://youtu.be/KXr2G2WOzS4
2. **तंत्रिका विकार रूप:** शेष चरण में होता है। शराबी की तरह लडखडा कर चलना, चक्कर लगाना, बार-बार जीभ को चाटना जैसे कि कुछ चबा रहा हो, अपनी त्वचा को चाटना, ड्रोलिंग, कंप-कम्पी, दौरे अदि। डॉ रामावत: https://www.youtube.com/watch?v=gt-mWAs6SnE और https://www.youtube.com/watch?v=vsDRKku_p3g

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. गुड 100 ग्राम को पानी के साथ मिलाकर खिलाएं, रोजाना 7-10 दिनों तक। इसके अलावा 7-10 दिनों के लिए सिरप हिमशक्ति या ग्लूकोबूस्ट 50 मिलीलीटर प्रति दिन दें।
   डॉ रामावत: https://www.youtube.com/watch?v=5D0rvSvQC4k

83. दूध की कमी

लक्षण:

दूध छुड़ाने की अवधि तक बच्चों के उचित विकास के लिए पर्याप्त दूध जानबर को न होना, जिसके चलते बच्चा कु-पोषित हो कर मर सकते हैं।

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

माँ को सीधे खिलाने के लिए प्रक्रियाएं:

1. पहले जानवर को कृमिमुक्त करें। और,
2. चावल के पानी या सादे पानी में 20 ग्राम गुड + 1 चम्मच खनिज मिश्रण + 1 नींबू का रस और आधा चम्मच नमक डालें और दैनिक रूप से खिलाया जाए। सेंधा नमक, काला नमक और फिटकिरी के ब्लॉक भी उपलब्ध कराए ताकि मां बकरी इसे समय-समय पर उतना ही चाट सके जितना उसे चाहिए। डॉ रामावत https://youtu.be/mIZL0q0JgYg
3. 25 ग्राम मसूर दाल, 25 ग्राम लाल चना और 50 ग्राम बाजरा लें। इसे इतना पीस लें ताकि यह पाउडर न बन जाए। इसे 25 मिनट तक उबालकर ठंडा कर लें। 25 ग्राम गुड़+ 25 मिली सरसों का तेल+ 10 ग्राम खनिज मिश्रण और 1/4 चम्मच नमक और 1/4 चम्मच बेकिंग सोडा मिलाएं । इस तैयारी करें और दैनिक खिलाएं। डॉ रामावत: https://youtu.be/TY03hfH52rw. या,
4. 25-25 ग्राम सफ़ेद मुसली, सतावरी, जीवंती और बड़ा इलाइची को अलग-अलग पीसकर मिलाएं। इस चूर्ण का 20 ग्राम लें, इसे 20 ग्राम गुड के साथ मिलाएं और 5 दिनों के लिए दैनिक रूप से एक बार खिलाएं। Vet Pet https://youtu.be/RK9C73ceiqI | या,
5. कद्दू 250 ग्राम काट लें, काला नमक 25 ग्राम और गुड 25 ग्राम दैनिक मिलाएं और 10-15 दिनों के लिए खिलाएं। या,
6. Di-calcium Phosphate (DCP) 5 ग्राम के साथ-साथ 20 gram गुड दैनिक खिलाएं। डॉ राजीब https://youtu.be/12xuqIauxqQ. या,

घर पर बनाएं कैल्शियम: दीवार की सफेदी के लिए इस्तेमाल होने वाले 2 किलो चूने के पाउडर को प्लास्टिक के टब में लें, उसमें 3 लीटर पानी डालें और 3 घंटे के लिए छोड़ दें, फिर 8 लीटर अतिरिक्त पानी डालें। इसे अगले 3 दिनों के लिए दिन में एक बार केवल हिलाएँ और चौथा दिन ऊपर का साफ चूने के पानी (लगभग 8 लीटर) को निकालें। मैग्नीशियम सल्फेट और सोडियम एसिड फॉस्फेट का 1 किलो नमक खरीदें। प्रतिदिन बकरियों के पीने के पानी में 25 मिली चूने का पानी + 2.5 ग्राम प्रत्येक नमक मिलाएं।
डॉ रामावत: https://youtu.be/VY-qBWDBH1E या,

7. Ostovet कैल्शियम पूरक के 1 लीटर के साथ Vimeral विटामिन के 60 मिलीलीटर मिश्रण करें और 10 मिलीलीटर दैनिक दे।

बच्चे को सीधे खिलाने के लिए प्रक्रियाएं:

8. आप गाय का दूध सीधे खिला सकते हैं या लैक्टोजेन-1 (1 महीने की उम्र तक) या लैक्टोजेन-2 (1 महीने से ऊपर) या 1 भाग दूध पाउडर के साथ 10 भाग गरम पानी मिलाकर पिलाएं। या,
9. **उमेश सर द्वारा कृत्रिम कोलोस्ट्रम बनाना:** https://youtu.be/Rb_4a67PVsU। 300 मिलीलीटर गाय के दूध के साथ 200 मिलीलीटर पानी मिलाएं। उबलते समय, 1 अंडे को क्रैक करें और उबलते दूध में अंडा को अच्छी तरह से मिलाएं। तिल और कलेजी के तेल के प्रत्येक 1 चम्मच मिलाएं। फिर, जब उबला हुआ दूध गुनगुने तापमान तक ठंडा हो जाता है, तो विटामिन ए 100 यूनिट और लिक्विड फेरामिन में से प्रत्येक में 10 मिलीलीटर मिलाएं। इसे एक समय में बच्चे के शरीर के वजन का 10% और दिन में 3-4 बार पिलाया जाना चाहिए। हर दिन फ्रेश बना कर दें।

10. Milk replacer 1 किलो तैयार करें- 330 ग्राम मिल्क पाउडर+ 150 ग्राम प्रोटीन (whey)+ सोयाबिन का आटा 350 ग्राम+ खनिज मिश्रण 50 ग्राम+ नमक 50 ग्राम+ टेट्रासाइक्लिन 20 ग्राम लें। इसका 100 ग्राम पाउडर में 50 मिली रीफ्राइन तेल और 700 मिलीलीटर गुनगुने पानी मिलाया जा सकता है और खिलाया जा सकता है।
डॉ Ali- https://youtu.be/UFUqnFoeJqE |

या PS बकरी फ़ीड के दूध पाउडर खरीदे:
https://youtu.be/3rqZPfGC0oU |

**मेमना को दूध पिलाना, उमेश सर: https://www.youtube.com/watch?v=ghZX78KZWZI

84. पथरी / पेशाब में कठिनाई (यूरोलिथियासिस)

यह आमतौर पर नर जानवरों में मूत्र पथ की शारीरिक संरचना के कारण होता है जो मूत्राशय में बनने वाले पत्थरों के कारण होता है। अन्य कारक हैं, मूत्राशय के बध्याकरण के कारण सूजन, गुर्दे के रोग आदि।

लक्षण:

मूत्र बूंद-बूंद गिरना, जानवर बेचैन है और दर्द में चिल्लाता है, अपने पेट को लात मार सकता है, कुछ दिनों के बाद यूरिया जैसी एक अजीब गंध इसके मुंह से आती है

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. खासतौर पर गर्मियों में पीने के लिए भरपूर पानी दें, सूखा चारा केबल खिलाते है तो, चौबीस घंटा पानी की व्यवस्था करें।
2. लेकिन अगर पथरी की वजह से समस्या हो तो ऐसी कोई दवा या इंजेक्शन न लगाएं जिससे मूत्राशय में अतिरिक्त मूत्र बन जाए अन्यथा इससे अधिक समस्या पैदा हो जाएगी। 1 सिस्टोन टैबलेट दिन में 3 बार, 2-3 दिनों के लिए दें। यदि समस्या गंभीर है, तो इसके अतिरिक्त 1 नीरी टैबलेट या सिरप दें, दिन में 3 बार 2-3 दिनों के लिए।
डॉ रामावत https://www.youtube.com/watch?v=krQLt-SoGdI या
3. 100 ग्राम बेल (एगल मैमेलोस) के पत्तों को पीस लें, 150 ग्राम इमली के गूदे और 50 मिलीलीटर तिल के तेल के साथ मिलाएं, और एक बार खिलाएं । या,
4. एलोवेरा का रस 100 मिलीलीटर, दिन में एक बार 3 दिनों के लिए दें। या,
5. 2 मूली का रस निकालें और दैनिक पिलाएं, 2-3 दिनों के लिए । या, नौसादर थेकरी, कलमी सौरा और मूली में से प्रत्येक में 50 ग्राम लें, इसे पीस लें और 25 ग्राम को दिन में दो बार 3 दिनों के लिए दें। विक्की- https://youtu.be/TOHZkVayoNg |
6. 1 प्याज और लहसुन की 5 पंखुड़ियों को पीस लें । इसे 1 नींबू के रस + 25 ग्राम चीनी + 50 लीटर पानी के साथ मिलाएं और 2 दिनों के लिए दिन में एक बार पिलाएं। डॉ रामावत: https://youtu.be/Drj1yXdeN4E
7. 25 ग्राम चाय पाउडर और 250 मिलीलीटर पानी लें, एक साथ उबालें, इसे ठंडा करें और एक बार खिलाएं । या,
8. 500 मिलीलीटर पानी के साथ 10 ग्राम बेकिंग/खाने का सोडा मिलाएं और 2 दिनों के लिए दिन में 2-3 बार खिलाएं ।

85. पेशाब में खून (Blood in Urine)

पेशाब में खून कई कारणों से हो सकता है। जैसा, चोटें: किसी भी दुर्घटना से आंतरिक खूनस्राव हो सकता है जो मूत्र (उज्ज्वल लाल रंग) में दिखाई देता है। संक्रमण: बेबिसयोसिस और लेप्टोस्पायरोसिस जैसे रोगों में एक महत्वपूर्ण लक्षण के रूप में खूनी मूत्र होता है। विषाक्तता: जहरीले पौधों को खाने या सांपों और कीड़ों के काटने से खूनी मूत्र हो सकता है।

लक्षण:

मूत्र लाल या कॉफी के रंग का होता है, उच्च तापमान हो तो बेबिसयोसिस रोग हो सकता है

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

यदि संक्रमण के कारण पेशाब में खून हो तो-

1. टिक नियंत्रण के लिए: शेड को साफ रखें।
   i) तुलसी + सीताफल + सूखे तम्बाकू के पत्तों के साथ शेड में धुंआ दें। साथ ही इन सभी पत्तियों को पीसकर जानवरों के शरीर पर पेस्ट करें। या,
   ii) तंबाकू के पत्तों को रात में 2 लीटर पानी के साथ 100 ग्राम पिलाएं, 20 ग्राम नमक मिलाएं और जानवरों के शरीर पर रगड़ें. शेष पानी का शेड में छिड़काव करें। या,
   iii) 100 मिलीलीटर करंज तेल+ 10 ग्राम कपूर + 10 ग्राम नमक मिलाएं और 3 दिनों के लिए दिन में दो बार जानवरों के शरीर पर लगाएं। और,
2. 10 ग्राम अजवाइन+ 10 ग्राम सूखा अदरक+ 25 ग्राम भुई नीम/चिरैता (एंडोग्राफिक्स पैनिकुलाटा) पाउडर + 10 पिस काली मिर्च को पीसकर 25 ग्राम गुड के साथ मिलाएं और दिन में एक बार 3 दिनों तक खिलाएं। या,
3. पलाश (Butea monosperma) की जड़ का आधा फुट लंबा टुकड़ा या दो मुट्ठी भर पलाश के फूल या 200 ग्राम केले के फूल लें, पानी के साथ पीस लें और रस निकालें, गुड और जीरा के 25 ग्राम मिलाएं और जानवरों को पीने के लिए दें। या,
4. 3 दिनों के लिए हर दिन 1 नारियल दें। इसके अलावा छांछ 200 मिलीलीटर + चीनी 50 मिलीलीटर दैनिक, 3-4 दिनों के लिए दें।

डॉ रामावत: https://youtu.be/Ve-bWuys0pY

भाग 12 : विटामिन / खनिजों की कमी से संबंधित रोग

86. पैका/Pica रोग (गैर-खाद्य पदार्थ खाना)

सामान्य खाना के अलावा अन्य अ-खाद्य बस्तु खाने को पैका बोला जाता है। आहार में विटामिन, खनिजों और प्रोटीन की कमी के कारण जानवरों में यह विकृत भूख उत्पन्न होती है। युवा जानवरों में कृमि संक्रमण भी इसका कारण बन सकता है।

लक्षण:

सामान्य खाना के अलावा अन्य अ-खाद्य बस्तु जैसे मिट्टी, प्लास्टिक, कागज, मल, कपड़े आदि खाना

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. **बच्चा मिट्टी खा रही है:** जब बच्चा पैदा होता है तो एक चुटकी सरसों का तेल और हल्दी पाउडर पेस्ट चटा दें, इसके बाद बच्चे को 15-20 दिनों में एल्बेंडाज़ोल (4 किलोग्राम शरीर के वजन के लिए 1 मिलीलीटर) के साथ डीवर्म करें। इसके अलावा विटामिन बी कॉम्प्लेक्स, कैल्शियम और फास्फोरस दें। माँ और बच्चे को खनिज मिश्रण दें जब यह 1 महीने का हो जाता है।

   डॉ रामावत: https://youtu.be/lrQwDU7kTjg और https://www.youtube.com/watch?v=-GtI_yVbFU8 या,

2. 25 ग्राम चिरैता/भुइनीम (Andrographics paniculata) पाउडर या कुजाता (Holarrhena antidysenterica) छाल, 10 ग्राम कच्ची हल्दी और काली मिर्च के 10 पिस के साथ मिलाएं, बोलस बनाएं और दिन में एक बार, 3 दिनों के लिए खाली पेट खिलाएं। नियमित रूप से विटामिन और खनिज मिश्रण दें।

87. रिकेट और एस्टोमैलेसिया (टेढ़ा पैर, विटामिन डी की कमी)

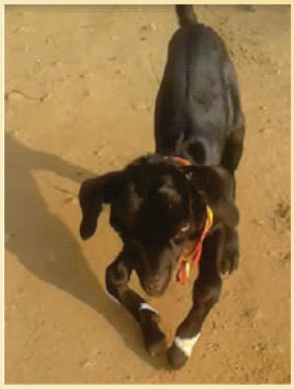

विटामिन डी सूर्य के प्रकाश की उपस्थिति में त्वचा में संश्लेषित होता है। यह कमी, युवा जानवरों में रिकेट्स और वयस्क जानवरों में एस्टोमेलेसिया का कारण बनती है।

लक्षण: जोड़ों में सूजन, पैर झुकना/टेढ़ा होना, लंगड़ापन अदि

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

1. एक वयस्क बकरी या भेड़ को 20 मिलीलीटर कैल्शियम सिरप और 50 ग्राम गुड़ रोजाना 15 दिनों तक खिलाएं। और,
2. विटामिन डी को 7-12 आईयू प्रति kg शरीर के वजन की दर से किया जाना है।

88. घेंघा / गोइटर रोग

लक्षण: गले में सुजन

निवारक, प्राथमिक चिकित्सा और घरेलू उपचार:

गाय, बैल के लिए: दिन में 2 बार @ 25 ग्राम की दर से इडोवेट पाउडर को एक महीने में 2 बार, निरंतर दें। इसे 1 महीने के अंतराल पर 2 गुना अधिक दोहराएं। या, पोटेशियम आयोडाइट 3 ग्राम प्रतिदिन 7 दिनों के लिए दें। इसे 1 महीने के अंतराल पर 2 गुना अधिक दोहराएं।

डॉ रामावत: https://youtu.be/dkP6rJKlAJ4

&
https://youtu.be/khniBYD-hCE

89. आयरन की कमी, एनीमिक डॉ Rmawat https://youtu.be/ATVP8dY7Amg

90. विटामिन ए कमी, अंधापन डॉ रामावत https://youtu.be/NTOdofR7yok

91. बकरी टीकाकरण विवरण डॉ रामावत: https://youtu.be/oeJ8P6cAVuQ

92. अन्य: Shievering डॉ रामावत: https://youtu.be/eXY5-x_PuXM

आंतों की रुकावट डॉ रामावत: https://youtu.be/6-KQeuKhhR0

नसों की समस्या डॉ रामावत: https://youtu.be/-F9MP5VmDks

भैंस गायों में गांठदार जबड़ा / डॉ रामावत द्वारा गाय, बैल में एक्टिनोमाइकोसिस: https://youtu.be/VpbBZbJ-fUg

उमेश सर द्वारा बध्याकरण: https://youtu.be/BVJ9FHq_S3U

बकरी कान सूजन उपचार, डॉ रामावत https://youtu.be/_MBTQDMhD14

गाय की नाक से खून बह रहा है डॉ रामावत https://youtu.be/EXa3qk6mRZI

IV डॉ रामावत https://www.youtube.com/watch?v=-8LMsOgD1aw

Dr. Ramawat द्वारा हल्दी: https://youtu.be/mNC5Zwaf6H0

प्रदान द्वारा
रंगीन तस्वीरों के साथ
मुर्गी रोगों का एक संकलन

प्रदान द्वारा रंगीन तस्वीरों के साथ मुर्गी रोगों का एक संकलन

इस भाग 13 में है...	पृष्ठ
A. मुर्गी शरीर की रचना और लक्षण–वार सम्भावित रोगों का नाम	57
B. पांच सबसे महत्वपूर्ण देशी–मुर्गी का रोग	60
C. एक नज़र में मुर्गी रोग (सूचि) :	61

वर्ग	क्र. स.	कारक (एजेंट)	नाम (वैज्ञानिक)	नाम (सामान्य)	मुख्य रूप से प्रभावित	लक्षण (बाहरी और पोस्ट मोरटम)	
1 बाहरी परजीवी	1.1	घुन और जूँ	बाहरी परजीवी	धर्म रोग	सब	गंभीर एनीमिया, वजन में कमी, बाल झड़ना, खुजली	61
2 आंतरिक परजीवी	2.1	कीड़े/ हैल्मिंथिक	एस्केरिडिओसिस	गोल–क्रमी	4 सप्ताह के ऊपर	दस्त में कीड़े, लगातार दस्त	61
	2.2	प्रोटोजोआ (रक्त क्रीमी)	कक्सिडीओसिस	दस्त में खून	चूजे	आंत की क्षति होने से पतला खूनी दस्त होता है और उच्च मृत्यु दर इस की विशेषता है।	62
3 फंगस	3.1	ऐस्परजिलस पैरासिटिकस	एफ्लाटॉक्सिकोसिस	खाद्य विषाक्तता	सब	पीला रंग का जिगर/कलेजी	63
	3.2	ऐस्परजिलस फ्यूमिगेटस	एस्परजिलोसिस	ब्रूडर निमोनिया	चूजे	फेफड़ों में फंगस संक्रमण और अन्य श्वसन समस्याओं बहती नाक, खुले मुंह के साथ सांस आदि	64
	3.3	कैंडिडा अल्बिकन्स	कैंडिडिआसिस	खाद्य अपच	सब	फंगस खाद्य–थैली पर बढ़ता है। वहां घावों होता है जो आमतौर पर ''टर्कीस तौलिया'' की तरह दिखता है	65
4 माइकोप्लाज्मा	4.1	माइकोप्लाज्मा गैलिसेप्टिकम (एम.जी.)	क्रोनिक श्वसन रोग	सी.आर.डी.	सब	नाक और आंखों से पीना का निर्वहन, छींकना, छाती से गर–गर आवाज आना	65
	4.2	माइकोप्लाज्मा सिनोविया	माइकोप्लाज्मा सिनोविया संक्रमण	गठिया	सब	जोड़ों का सुजन, लंगड़ापन, लेटजाना और मंद बुद्धि	66
	5.1	पैरामाइक्सोवायरस	रानी खेत रोग	(आर.डी. या एन.डी.)	मुख्य रूप से वयस्कों	नाक/आंखों से पानी बहना, गर्दन घूम जाना, पतला दस्त शुरू में हरा बाद में सफेद रंग बद्बू के साथ, प्रो.–वैंटिकुलर में रक्तस्त्राव	67
	5.2	ऑर्थोमाइक्सोविरिडी	एवियन इन्फ्लूएंजा	बर्ड फ्लू	सब	चुल का सूजन के साथ नीला / काला / बैंगनी रंग होना, पैर में काला धब्बा पड़ जाना	68

5 वायरल रोग	5.3	कोरोना वायरस	संक्रामक ब्रोंकाइटिस (IB)	श्वसन रोग	सभी लेकिन युवाओं में सबसे आम	युवा मुर्गियों : श्वसन – बहती नाक / मुंह और नेफ्रोटिक रूप – यूरिक एसिड क्रिस्टल के कारण शरीर के बाहरभीतर में गाउट (सफेद पाउडर)– वयस्क मुर्गी :– प्रजनन रूप – (अंडा न देना, अंडाशय और अंडवाहिनी अल्पविकसित हो जाते है, अंडे की गुणवत्ता खराब होना	69
	5.4	एडेनोवयरस (समूह III)	एग ड्रॉप सिंड्रोम	कम अंडे देना	अंडा देना वाली मुर्गी	अधिकतम उत्पादन तक पहुंचने में विफलता, अनियमित आकार के अंडे, नरम छिलके का अंडे आदि	70
	5.5	हर्पेस वायरस	लैरिंगट्रैकाइटिस (LT)	गर्दन खिंचना	वयस्कों	साँस अन्दर लेने के दौरान सिर और गर्दन को दृढ़ता से आगे और ऊपर की ओर बढ़ाया जाता है। एलटी के कंजंक्टिवल रूप में, गीली आंखें, स्त्रा, सूजन आदि	71
	5.6	एवियन–न्यूमों वायरस (APV)	स्वोलन हेड सिंड्रोम (एस.एच.एस.)	सिर में सूजन	4 सप्ताह से ऊपर	सूजन – सिर, जबड़े, चुल पर फैल जाती है, श्वसन लक्षणों में खांसी और छींकना, खर–खर और आंख से पानी शामिल है	72
	5.7	एवि पाक्स वायरस	पाक्स	चेचक	सब	त्वचा के ऊपर घाव, मस्से की तरह दानेदार, गहरे से भूरे रंग के होते हैं	73
	5.8	एंडरोवायरस	संक्रामक एन्सेफलोमाइलाइटिस	आई.ई.एम.	1 से 2 सप्ताह के चूजों	मांसपेशियों में कम्पन/असमन्वय, और विशेष रूप से सिर और गर्दन के झटके शामिल है। कांपने और हिलने के कारण, इसे कंपन महामारी भी कहा जाता है	74
	5.9	बिरनावायरस	संक्रामक बर्सल रोग IBD/गम्बोरो	गम्बोरो रोग	4 से 14 सप्ताह तक युवा मुर्गियां	बहुत उच्च तापमान 110डीफा, कांपना, सर झुका के, पंख फैला के बैठना, पतला दस्त के ऊपर सफेद पाउडर छिड़कने जैसा, सीना, जांघ पर रक्त स्ट्रिप्स, त्वचा के नीचे की मांसपेशियों में रक्तस्त्राव, बर्सा का आकार काफी बढ़ जाना आदि	75
	5.10	अल्फारेट्रोवायरस	लिम्फोइड ल्यूकोसिस (एल.एल.)	ट्यूमर रोग	वयस्क मुर्गी	यह मुर्गियों की एक कैंसर बीमारी है। लिम्फोइड ल्यूकोसिस में जिगर/कलेजी का आकार ज्यादा बढ़ जाता है।	76
	5.11	मारेक्स रोग वायरस	मारेक्स रोग (एम.डी.)	पैर में पक्षाघात	सभी लेकिन मुख्य रुप से चूजों	तंत्रिकाओं, पंख और गर्दन में पक्षाघात। तीव्र मारेक्स बीमारी से जिगर/कलेजी, प्लीहा, गुर्दे, फेफड़ों, अंडाशय, प्रो वैट्रिकुलस और हृदय का फैलाव हो जाना	76
	5.12	एडेनोवायरस	आइ.बी.एच.	लीची रोग	वयस्क	जिगर/कलेजी, फेफड़े और दिल काम करना बंद कर देते हैं, दिल में पानी जमा हो जाता है और लीची के फलों की तरह हो जाता है, अंडवाहिनी प्रभावित होता है	77
	5.13	DVE	बतख प्लेग	बतख प्लेग	मुख्य रूप से वयस्क बतख में	धमनियों और नसों के टूटने के कारण शरीर के आंतरिक अंगों पर रक्त स्ट्रिप्स / रक्तस्त्राव	78
	6.1	हीमोफिलस पैरागैलिनरस	संक्रामक कोरेजा		दो माह से ऊपर	ऊपरी श्वसन पथ, सिर में सूजन और आँखों का बंद होना	78
	6.2	एस्चेरिया कोलाई	कोलिबालोसिस	ई कोलाई	14 सप्ताह तक चूजों मुख्य रूप से वयस्कों भी	पतला दस्त – बलगम और रक्तयुक्त, युवा मुर्गियों में योल्क साक संक्रमण सबसे आम है, अंडे पेरिटोनिटिस और आंत में ट्यूमर, दिल और जिगर / कलेजी पर एक पॉलिथीन जैसी परत	79

6 बैंक्टीरिया	6.3	साल्मोनेला पुलोरम	पुलोरम रोग	चुना दस्त (साल्मोनेलोसिस)	चूजों में मुख्य रूप से	यूवा चूजों में मोटी और चिपचिपा बासिलारी दस्त वयस्क विभिन्न आकार के अंडे देता है	82
	6.4	साल्मोनेला गैलिनारम	फाउल टाइफाइड	टाफाइड	केवल वयस्क	जिगर/कलेजी का बढ़ा हुआ और कांस्य हरा (ब्रॉज) रंग होना	83
	6.5	पास्तुराला मुल्टोसिडा	फाउल कलेरा	हैजा	बढ़ते हुए मुर्गी एवं मुर्गा	वाटल गुवारे के जैसा फूलना, दिल में रक्त श्राव, हरे पीले से पीला–सल्फर रंग का दस्त, डी–हाइड्रेटेड शरीर	84
	6.6	पास्तुराला मुल्टोसिडा	डक कलेरा	बतख हैजा	मुख्य रुप से बतख चूजों में	उच्च तापमान, दस्त, पक्षाघात, अचानक मृत्यु	84
	6.7	स्टेफिलोकोकस ऑरियस	स्टफिलोकिस ओसिस	स्टफिलोकौसिओसिस	सब	लक्षणों में बिखरा हुआ पंख, एक पैर पर लंगड़ाना, एक या दोनों पंखों को नीचे लटकना और बुखार शामिल हैं	85
	6.8	स्टेफिलोकोकल बैक्टीरिया	बम्बल फुट	पैर में फोड़ा/छाले	वयस्कों	वयस्क मुर्गियों में पैर में फोड़ा/छाले	85
	6.9	क्लोस्ट्रीडियम परफ्रिंजेन्स	नेक्रोटिक एन्टेराइटीस	परिगलित एंटराइटिस	सभी लेकिन वयस्को में सबसे आम	रोग अक्सर कक्सिडीओसिस के आउट ब्रेक के बाद पाया जाता है	86
	6.10	क्लोस्ट्रीडियम बोटुलिनम	बोटुलिज़्म	खाद्य विषाक्तता	सब	परालिसिस, निचे गिरजाना	87
	6.11	क्लोस्ट्रिडिया स्टेफिलोकोसी और ई.कोलाई	गैंग्रेनस डर्मटाइटीस	विंग रॉट (पंख सइन. घाव)	सब	त्वचा में घाव, हरे रंग के बदबूदार पंख सइन	87
	6.12	क्लोस्ट्रीडियम कॉलिनम	अल्सरेटिव एन्टेराइटीस	बटेर रोग	मुर्गी के साथ–साथ वयस्क बटेर	बिखरा पंख, दस्त और एनीमिया	88
7 विटामिन की कमी	7.1	विटामिन ए	पोषण संबंधी	अंधापन	चूजों को अधिक प्रभावित करता है	भूख की कमी, मंद विकास, बिखरा हुआ पंख, कमजोरी	89
	7.2	विटामिन बी –1	थायमिन की कमी	आसमान की तरफ देखना (गर्दन घूम जाना)		सिर को पीछे और ऊपर की ओर खींचना	89
	7.3	विटामिन बी –2	राइबोफ्लेविन की कमी	टेढ़ी उंगलियों		मुड़ी हुई पैर की उंगलियां	89
	7.4	विटामिन ई की कमी	एन्सेफलोमैलेसिया	क्रेजी चिक्स		पैर उपर कर लेट जाना	90

8 चयापचय/ मेटाबोलिक रोग	8.1	विटामिन डी3 कैल्शियम और फासफरस की कमी	रिकेट रोग	हड्डियां सुख/ कमजोर होना	चूजों को अधिक प्रभावित करता है	हड्डियां अचानक तेज आवाज के साथ नहीं टूटती हैं, मंद विकास, मांसपेशियों के असमन्वय के लक्षण जकड़न पैर वाली चाल और लंगड़ापन	90
	8.2	मैंगनीज की कमी	पेरोसिस			युवा मुर्गियों में पैर की हड्डियों का विरूपण	91
	8.3		लिबर में रक्तस्त्राव	फैटी जिगर/ कलेजी	अंडा देने वाली मुर्गी	रक्तस्त्राव के साथ फैटी लीवर	91
	8.4		गठिया	गठिया	सब	सतहों पर सफेद चॉकपौडर जैसा जमा (दिल के साथ शुरू और फिर यकृत, गुर्दे, प्रो–वेंटिकुलस और फेफड़ों में फैलना)	92
	8.5		यूरोलोथियासिस	पथरी	अंडा देने वाली मुर्गी	मूत्र पथ में पथरी	93
	8.6		एसाइटीस	पेट में पानी	सब	मुर्गी मुर्गीघर में अमोनिया बढ़ने कारण पेट में पानी	94
	8.7		कनिबालिजम	घायल करना	सब	पंख, त्वचा, मलद्वार आदि को चोंचमारना या खींचना	95
9 अन्य बीमारियां	9.1		मलद्वार जाम होना	मलद्वार जाम होना	चूजों	बिट मलद्वार में फंस जाना	95
	9.2		अमोनिया एक्सपोजर	अमोनिया एक्सपोजर	सब	मुर्गी अपनी आँखें बंद रखते हैं, बिखा हुआ पंखों के साथ निराशाजनक रूप से खड़े रहते है	96
	9.3		डी–हाइड्रेशन	निर्जलीकरण	सब	आकार और उम्र के अनुपात चूजों का अपर्याप्त वजन, निर्जलित और झुर्रीदार त्वचा	96
	9.4		अतिरिक्त गर्मी	हीट स्ट्रोक	सब	हाफना, चूंकि मुर्गी में पसीने की ग्रंथि नहीं होती है, इसलिए वे हीट स्ट्रोक के लिए अतिसंवेदनशील होते है	97
	9.5					मुर्गी क्रिमी और टीकाकरण कलेन्डर	98
	9.6					बकरी क्रिमी और टीकाकरण कलेन्डर	99

A. मुर्गी शरीर की रचना और लक्षण–वार सम्भावित रोगों का नाम

एक मुर्गी की एनाटॉमी: मुर्गी के पाचन तंत्र हिन्दी में https://youtu.be/lqfB2lQe7W0

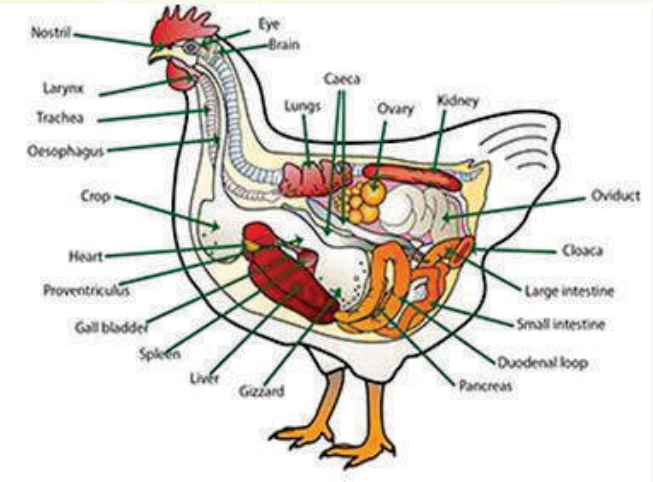

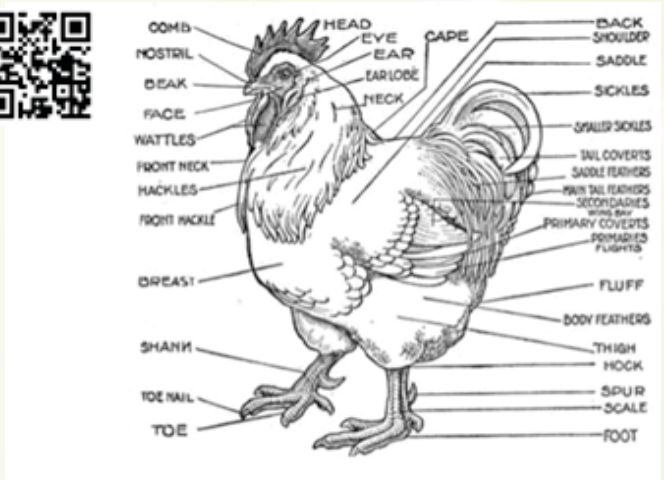

मुर्गी की उचित पोस्टमॉर्टम तकनीक https://youtu.be/XOlrqKczBn0

इस नोट में सभी प्रकार के मुर्गी (ब्रॉयलर, लेयर्स और देशी) के लिए बीमारियों को सूचीबद्ध किया गया है। हालांकि, जैसा कि निचे चर्चा की गई है, देशी मुर्गी में कुछ 5–6 बीमारियां हैं जो लगभग 75% मृत्यु दर का कारण बनती हैं। इसके अलावा, यह ध्यान देना चाहिए कि, 2 महीने तक के चूजा, वयस्कों की तुलना में अधिक प्रभावित होती हैं, क्योंकि उनकी प्रतिरक्षा प्रणाली अभी पूरी तरह से विकसित नहीं हुई होती है। यह श्रेणी भी शिकारी से अधिक मरते है। इसलिए, मुर्गी की 2 महीने तक विशेष देखभाल और ध्यान देने की आवश्यकता है।

प्रभावित स्थान / समस्याऐं	लक्षण (बाहरी और पोस्ट–मोरटम)	सम्भावित रोग
वजन में कमी, एनीमिक	एनीमिक, त्वचा संक्रमण, मृत्यु	बाहरी परजीवी
		आंतरिक परजीवी, क्रीमी, कक्सिडीओसिस
त्वचा में घाव	त्वचा में घाव	गैंग्रनियस डर्मेटाइटिस
		कानिबलिजम (घायल करना)
	शरीर के बाहरी या अंदर के हिस्से में फफोले	मुर्गी चेचक (चेचक)
पैरों और पैरों में समस्याएं	जोड़ों में सूजन, गठिया	माइकोप्लाज्मा सिनोविया संक्रमण
	पैर में सूजन/फोड़ा/छाले	बम्बल फुट Stphylococeosis
	पैर की हड्डियां की कमजोरी और जकड़न जिसके परिणामस्वरूप लंगड़ापन होता है	रिकेट्स विटामिन डी (3 पेरोसिस) मैंगनीज की कमी
	अंडा देनेवाली मुर्गी खड़े होने में असमर्थ, थकान	केज लेअर (विटामिन डी की कमी)
	पपड़ीदार पैर	पपड़ीदार पैर (जस्ता की कमी)
पैरों और पंखों के संचालन में असमन्वय लकवाग्रस्त	ब्रॉयलर मुर्गी के पैर पक्षाघात	Aflatoxiciosis खाद्य बिशाक्तता
	पैर ऊपर शरीर नीचे	विटामिन ई की कमी– एन्सेफलोमेलेसिया, क्रेजी चिक्स रोग
	पैर की अंगुली टेढ़ी हो जाना, सिंकुड जाना	विटामिन B2 की कमी – कर्ल टो बीमारी

गर्दन को प्रभावित करना (झुकना / घुम जाना / लम्बी / खिंचाव आदि)	गर्दन पीछे तरफ घूमना, पैर पक्षाघात	रानी खेत, रानी खेत **ND**
	गर्दन ऊपर कर आकाश की और देखना	(Thiamine) विटामिन B1 की कमी – स्टार गेजिंग
	गर्दन नीचे के तरफ मुड़ना/घूम जाना	विटामिन ई की कमी – एन्सेफेलोमालेसिया
	गर्दन और सिर को जमीं पर पटक कर कोमा में चले जना	बोटुलिज़्म
	गर्दन ऊपर खिंच कर लम्बी / विस्तारित करना	लैरिंगोट्रैकाइटिस (LT)
कांपना सिर और गर्दन	कांपना, मांसपेशियों में असमन्वय (ataxia) गर्दन झटकना	गम्बोरो IBD
	सर और गर्दन में कंपन बहुत कम उम्र के चूजों	संक्रामक एन्सेफलोमाइलेटिस आईईएम
सांस लेने में समस्याएं, रानी खेत, छींक, जुकाम	नाक, मुंह, आंखों से स्त्राव	वायरस, आर.डी., आईबी, एलटी, चेचक के डिप्थेरिक रूप, (बैक्टीरिया) संक्रामक कोरिजा आदि
	खुले मुंह सांस लेना, खुली चोंच, हाफना	ब्रूडर निमोनिया यदि चूजे, गर्मी तनाव यदि वयस्क आईबी, लैरिंगोट्रैकाइटिस (LT) आदि
	गर–गर और सीटी जैसा आवाज, खुले मुंह से सांस लेना, सर झटकना	माइकोप्लाज्मा गैलिसेप्टिकम एमजी, रानी खेत
सूजे हुए चेहरे और सिर, बंद आंखें	सूजे हुए चेहरे / सिर, बंद, आंख	ई कोलाई, कौरेजा, गम्बोरो, आर डी, बर्ड फ्लू, एलटी, नेक्रोटिक एन्टेराइटीस, चेचक, एस.एच.एस. आदि
	चूल Wattle, गुब्बारे की तरह सूची हुई	फ़ाउल कलेरा (हैजा)
मुंह से बलगम स्त्राव	मुंह से बलगम/पानी टपकना	फ़ाउल कलेरा (हैजा)
अंडे उत्पादन में समस्याएं	झुर्रीदार अंडे, नरम खोल अंडे, एल्बुमेन अपनी चिपचिपाहट खो देता है, पतला हो जाता है	संक्रामक ब्रॉकाइटिस (आईबी, आर.डी.)
	अंडे देना कम होना, नरम खोल और विकृत अंडे अन्दर की एल्बुमेन अपनी चिपचिपाहट नहीं खोली	एग ड्राप सिंड्रोम
	अंडा – अंडवाहिनी में फंस/अटक जाना	ई कोलाई
	अंडे के माध्यम से फैलने वाली बीमारी	IEM, LL पुलौरम रोग, रानी खेत, मुर्गी टाइफाइड, ई कोलाई
गुर्दे को प्रभावित करना	बढ़ी हुई, पीला रंग और सूजन वाले गुर्दे	आईबीएच, आईबी, गाउट, पथरी
पेट फूल जाना	पानी पेट में जमा होता है, नरम महसूस	एसाइटीस, आईबीएच
	जिगरकलेजी/ का बढ़ना, कठिन महसूस	लिम्फोइड ल्युकोसिस, एलएल
जिगरकलेजी/ की समस्या	जिगरकलेजी/ पीला पड़ना, जिगरकलेजी/ के आकार में अप्रत्याशित वृद्धि	एमडी, लिम्फोइड ल्यूकोसिस, आईबीएच, मुर्गी टाइफाइड, एफ्लाटॉक्सिकोसिस, पीला जिगर/कलेजी
	जिगरकलेजी/ के ऊपर सफेद / पीले रंग की पॉलिथीन की तरह कोटिंग	ई कोलाई, फाउल कलेरा, रानी खेत, क्लैमाइडिओसिस
	जिगरकलेजी/ में नोडुलर ट्यूमर	एमडी, लिम्फोइड ल्यूकोसिस

आंत्र पथ को प्रभावित करना	आंतों की नली में सूजन और रक्त	नेक्रोटिक एन्टेराइटीस, कक्सिडीओसिस
असामान्य बुर्सा	बढ़े/सिंकुडते हुए बुर्सा	IBD/गम्बोरो, IBH, खाद्य बिशाक्तता
प्रो. वेंटिकुलंस रक्तस्त्राव	ग्रंथि की नोक पर रक्तस्त्राव	रानी खेत
	ग्रंथि के बीच में रक्तस्त्राव	स्पिरोकेटोसिस
	सेरोसल हेमरेज	बर्ड फ्लू
मांसपेशियों में रक्तस्त्राव	मांसपेशियों में रक्तस्त्राव	आईबीडी, आईबीएच, बर्ड फ्लू
रोग प्रतिरोधी शक्ति को कमजोर कर देना	एड्स की तरही	IBD/गम्बोरो, एमडी, एलएल, आईबीएच, एनीमिया आर.डी., स्पिरोकेटोसिस, एफ्लाटॉक्सिकोसिस
दस्त	काला / कॉफी / लाल रंग	कक्सिडीओसिस
	बलगम युक्त बदबूदार दस्त	ई कोलाई
	पतला दस्त के ऊपर सफेद पाउडर छिड़कने जैसा	IBD/गम्बोरो
	चूजों का चिपचिपा सफेद BACILLARY दस्त (choona dast)	पुलोरम रोग, पेस्टेड भेंट
	गाढ़ा–पिला रंग	IBH

B. देशी मुर्गी मृत्यु दर में 5 सबसे महत्वपूर्ण बीमारियों का योगदान (एक मूल्यांकन)

मुर्गी रोगों की एक बहुत बड़ी सूची है।
https://www.thepoultrysite.com/publications/diseases-of-poultry/wvy/candidiasis
हालांकि, 5–6 महत्वपूर्ण बीमारियां लगभग 75% मृत्यु दर का कारण बनती हैं। और हमारा तात्कालिक उद्देश्य, प्राथमिकता के आधार पर उनकी पहचान करना और उन्हें नियंत्रित करना होना चाहिए।

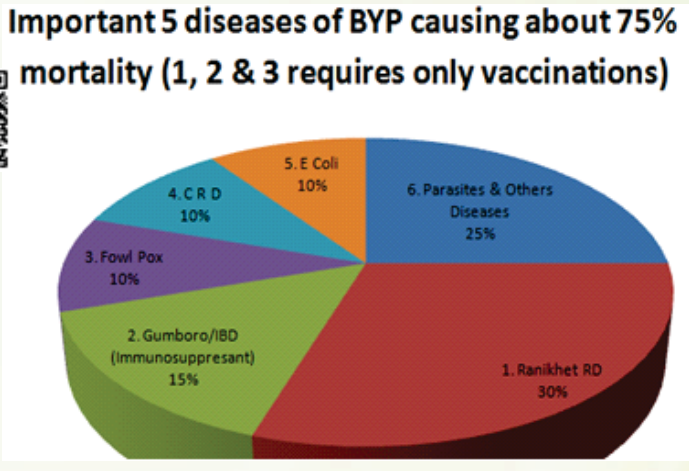

C . मुर्गी रोगों के बारे में बिस्तृत जानकारी

1 . बाहरी परजीवी रोग

1.1 बाहरी परजीवी रोग :

जूँ और घुन जैसे बाहरी परजीवी होते हैं, जो रक्त चूसते हैं और मुर्गी एनीमिक (त्वचा और चूल पीला रंग) हो जाते हैं। इसके अलावा, प्रभावित मुर्गी ने खुजली के कारण फ़ीड परेशान रहते हैं और फीड का सेवन कम कर देते है । प्रभावित मुर्गी, हैचिंग में भी ध्यान केंद्रित नहीं कर सकती है और यह हैचिंग प्रतिशत को प्रभावित करता है। यहां तक कि कुछ चूजों के बाहर आने के बाद, वे तुरंत प्रभावित होते हैं और एनीमिक स्थिति के कारण मृत्यु हो जाती है। यह मानव के लिए भी एक बड़ी समस्या बन जाती है और संपर्क में आने वाला कोई भी व्यक्ति प्रभावित होता है। पशु सखी इन मुर्गी के टीकाकरण और कृमिकरण के लिए तैयार नहीं होते हैं। बाहरी–परजीवी होने से कनिबिलिजम (चोंच से दुसरे को घायल करना) के कारण त्वचा में चोट/घाव अधिक होता है।

हर्बल उपचार : तम्बाकू के पत्तों को रात भर भिगोएं और पानी का घोल बनाएं और प्रभावित मुर्गी को 1–2 मिनट के लिए एक–एक करके डुबोएं। या, **एलोपैथी उपचार :** ब्यूटेक्स या क्लीनर (@ 1.5 मिली प्रति लीटर पानी) का 10 लीटर घोल बनाएं और आंखों, नाक और मुंह को छोड़कर मुर्गी को 2 मिनट तक डुबोएं। नहलाना पूरी होने के बाद, मुर्गी घर के अंदर और बाहर को भी छिड़काव करें (3 मिली दबा प्रति लीटर पानी) । सुनिश्चित करें कि, यह किसी भी जमीन में गिरी हुई खाद्य पदार्थों या अनाज पर छिड़काव नहीं किया जाता है, अन्यथा बाद में मुर्गी खाने से मर सकते है।

** बाहरी परजीवी से बचाब के लिए, 4–6 महिना अन्तराल में साल में 2–3 बार मुर्गियों को नहलाना चाहिए । जब भी यह करें, पर्याप्त धुप होनी चाहिए ताकि, नहलाना के बाद मुर्गी का शारीर आसानी से सुख जाए ।

2 भीतरी (आंतरिक) परजीवी रोग

2.1 गोल क्रीमी/कीड़े :

गोलकृमि मुर्गी पालन के सबसे महत्वपूर्ण कीड़े हैं। उनमें से, राउंडवर्म एस्करिडिया गैली सबसे आम है। वयस्क कीड़े छोटी आंत के लुमेन में रहते हैं और आंत पर आक्रमण करते हैं। यह संक्रमण, शरीर की खराब स्थिति और वजन घटने का कारण बनता है। गंभीर संक्रमणों में आंतों में रुकावट हो सकती है। इससे मौतें हो सकती हैं, खासकर छोटे मुर्गी में। बड़ी संख्या में कीड़े से संक्रमित मुर्गियां रक्त की हानि, मंद वृद्धि, एंटराइटिस (आंत की सूजन) से पीड़ित होती हैं, और मृत्यु दर में बहुत वृद्धि होती है।

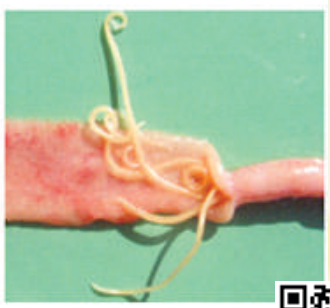

कीड़े आसानी से छोटी आंत में पोस्टमॉर्टम परीक्षा पर देखा जाता है। MQ: https://youtu.be/KQdx0cv7wXY

नियंत्रण :

1. मुर्गी को विशेष रूप से विटामिन ए और विटामिन बी पर्याप्त मात्रा में मिलना चाहि । इन विटामिनों की कमी, मुर्गी को कृमि संक्रमण के लिए अतिसंवेदनशील बना देता है।
2. बिछाबन का उचित प्रबंधन जैसा बिछाबन को बार–बार उलटफेरकर यथासंभव सूखा रखें। बिछाबन को उपयुक्त कीटाणुनाशक (बी९०४, खोर्सोलिन TH) के साथ भी कीटाणु मुक्त किया जा सकता है।
3. भीड़–भाड़ से बचें। अत्यधिक भीड़ संक्रमण की संभावना को बढ़ाकर क्रीमी के विकास के लिए अधिक अनुकूल परिस्थितियों पैदा करती है। अत्यधिक भीड़, अधिक गर्मी और नमी प्रदान करती है और यह दोनों स्थिति क्रीमी के अंडे के विकास में सहायक होते हैं।
4. फ़ीड और पानी दूषित न हों, यह सुनिश्चित करने के लिए अत्यधिक सावधानी बरती जानी चाहिए।

एलोपैथी उपचार :

1 पिप्रजैन कृमिनाशक (Piperazine) व्यापक रूप से गोलकृमि संक्रमण के खिलाफइस्तेमाल किया जाता है। नहीं तो,

2. Albendazole / Fenbendazole भी प्रभावी है। खुराक : 2 महीने तक 2 से 4 बूँदें (0.25 मिली) और वयस्क मुर्गी के लिए 5 से 8 बूँदें (0.5 मिली)। इसे तीन महीने के अंतराल पर दोहराएं (साल में 4 बार)। इसे सुबह खाली पेट दें।

हर्बल उपचार : बीच माह में चिरैता / भुई नीम का रस 10 से 12 बूंदें, एक वर्ष में 8 बार दें। कुल 12 बार कृमिनाशक करें, हर महीने एक बार । चिरैता/भुई नीम को पीसकर रात भर पानी में भिगोया जा सकता है और फिर अगले दिन सुबह खाली पेट रस को पिलाएं । अन्यथा, 20 मुर्गी के लिए, 5 ग्राम चिरैता /भुई नीम पाउडर में 50 मिली पानी मिलाकर, 200 ग्राम चावल में डालकर रातभर भिगो दें और सुबह दें ।

2.2 कक्सिडीओसिस (रक्त कीड़ा, प्रोटोजोआ)

अन्नदाता – https://youtu.be/vAGTl0dbKPo
https://youtu.be/&HzwlzUdKWo

कक्सिडीओसिस ज्यादातर नमी के कारण, बारिश के मौसम में होता है । गाढे रंग या खूनी दस्त और उच्च मृत्यु दर इस की विशेषता है । यह ज्यादातर युवा मुर्गी की एक बीमारी है क्योंकि इन में प्रतिरोधी शक्ति ठीक से विकसित नहीं होती है। कक्सिडीओसिस उसी मुर्गियों में भारी मृत्यु दर लाता है जो घर के अन्दर बिछाबन पर पाले जाते हैं। यह मुख्य रूप से भीड़–भाड़, बिछाबन गिला अदि की स्थिति में होता है। प्रकोप 3 से 6 सप्ताह की उम्र के बीच आम हैं ।

फैलना

1. संक्रमित Oocysts का शारीर में प्रबेश, प्रसार का एकमात्र तरीका है। यह अति गर्मी या ठण्ड मौसम और कीटाणुशोधन से नहीं मरती हैं।
2. जानवरों, कीटों, दूषित उपकरण, और धूल द्वारा फैल सकता है।

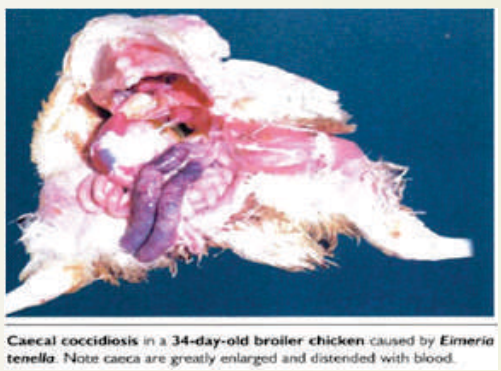

Caecal coccidiosis in a 34-day-old broiler chicken caused by *Eimeria tenella*. Note caeca are greatly enlarged and distended with blood.

लक्षण : कक्सिडीओसिस दो रूपों में होता है :

(1) केकल कोकिडियोसिस : मल/दस्त में खून के अंश पाएजाना । उच्च मृत्यु दर और वजन घटना । अधिकांश मृत्यु दर संक्रमण के 5 वें और 6 वें दिन के बाद होती है।

(2) आंत्र कक्सिडीओसिस :
इस में, छोटी आंत के मध्य भाग, आमतौर पर अपने सामान्य आकार से दोगुना फूल जाता है और लुमेन रक्त से भर जाता है ।

नियंत्रण :

1. मुर्गीघर की सूखापन, पीने और फीडिंग ट्रे की सफाई बनाए रखें।
2. बिछाबन को बदलें और B409 या खोर्सोलिन टीएच जैसा कीटाणुनाशक, @ 50 मिली प्रति 15 लीटर पानी में मिलाकर, मुर्गीघर का छिड़काव करें।

एलोपैथी उपचार :

कक्सिडीओसिस के इलाज निम्नलिखित दवाओं के साथ किया जाता है, जैसे sulphonamides, amprolium diclazuril और toltrazuril अदि । 1 ग्राम दबा को 1 ली पानी के साथ मिलाकर, 5 मुर्गी को 24 घंटेके पानी में 3 से 4 दिन दें। इसके बाद मल्टीविटामिन भी देते हैं 3 दिनों के लिए ।

MQ: कॉक्सिडियोसिस का इलाज, खूनी दस्त https://youtu.be/JDXpVw|K2Tw

हर्बल उपचार :

अमरूद और पुदीना के पत्तों के 50–50 ग्राम और इमली के गूदे के 50 ग्राम को एक साथ पीसे । इसे 2 ली पानी में बहुत अच्छी तरह से मिलाएं । इसे फ़िल्टर करें और इस पानी को 20 मुर्गी को परोसें। इसे 4 से 5 दिनों तक जारी रखें।

3 . फंगस रोग

3 .1 खाद्य विषाक्तता AFLATOXICOSIS डॉ अरशद https://youtu.be/lFwRgiDD6YM

बढ़ते फंगस (मोल्ड्स), बड़ी संख्या में विषाक्त रसायनों का उत्पादन करते हैं । इन को 'मायकोटॉक्सिन' या 'फंगल विषाक्त पदार्थ' कहा जाता है। उनमें से, एफ्लाटॉक्सिन सबसे आम है और मुर्गी द्वारा खाए जाने वाले सबसे महत्वपूर्ण मायकोटॉक्सिन भी है। एफ्लाटॉक्सिन फंगस एस्परजिलस की विभिन्न प्रजातियों द्वारा उत्पादित अत्यधिक विषाक्त मायकोटॉक्सिन हैं। फंगस गर्म, उच्च आर्द्रता की स्थिति में एफ्लाटॉक्सिन का उत्पादन करता है, जैसे कि बारिश का मौसम। एफ्लाटॉक्सिन अत्यधिक गर्मी/ठण्ड आदि परिस्थितियों का सामना कर सकते हैं और मरते नहीं हैं। इसलिए एफ्लाटॉक्सिन–संक्रमण, हमारे जैसे उष्णकटिबंधीय देश में अनाज में अधिक आम है। युवा मुर्गी, वयस्कों की तुलना में एफ्लाटॉक्सिन के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं।

एफ्लाटॉक्सिन के हानिकारक प्रभाव और लक्षण–

1 . वजन बृद्धि को प्रभावित करता है 2 फ़ीड सेवन को प्रभावित करता है
3 . फ़ीड रूपांतरण दक्षता को प्रभावित करता है, 4 . अंडे के उत्पादन को प्रभावित करता है 5 नर और मादा का प्रजनन क्षमता को प्रभावित करता है
6 . Immunosuppresant (प्रतिरक्षा) का दमन के कारण संक्रामक रोगों जैसे कक्सिडीओसिस और गम्बोरो के लिए संवेदनशीलता बढ़ जाती है
7 . अंडे का आकार, जर्दी का वजन कम हो जाते हैं। 8 . पक्षाघात

पोस्टमॉर्टम निष्कर्ष

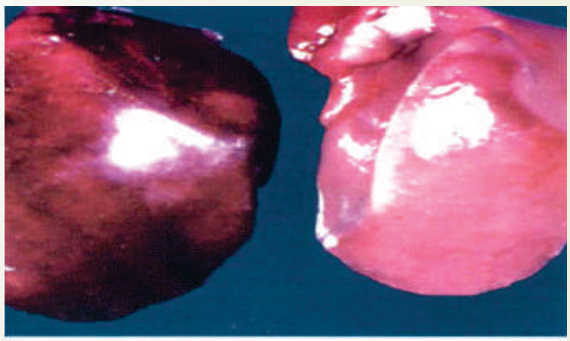

Aflatoxicosis: Note pale liver of a chicken (on right) receiving 200 ppb aflatoxin in feed. Compare it with the normal liver on the left.

1 . जिगर/कलेजी बहुत बड़ा, पीला और आसानी से टूटना (friable) हो जाता है
2 छोटेरक्त वाहिकाओं की नाजुकता में वृद्धि के कारण रक्तस्राव हो सकता है, यह एक ऐसी स्थिति की ओर जाता है जिसे 'खूनी जांघ सिंड्रोम' के रूप में जाना जाता है।

उपचार

1 विषाक्त फ़ीड को हटा दिया जाना चाहिए ।
2 . प्रोटीन के आहार के स्तर में वृद्धि, विटामिन सप्लीमेंट भी बढ़ाएं।
3 . मेथिओनिन और अन्य सल्फ़र युक्त अमीनो एसिड की आपूर्ति में वृद्धि की जानी चाहिए।
4 . खराब प्रबंधन, यदि मौजूद है, तो सुधार किया जाना चाहिए।
5 . लीवर टॉनिक दिया जा सकता है.
6 . विटामिन ई और सेलेनियम के पूरक में भी वृद्धि करें

नियंत्रण

1 . अनाज की नमी 12 % से कम रखें।
2 मोल्ड विकास को रोकने के लिए धुप में सुखाना सबसे अच्छा तरीका है, हालांकि यह विष को नष्ट नहीं करता है।
3 . अधिकतम 15 दिनों तक अच्छी तरह से सूखी जगह में फ़ीड सामग्री को स्टोर करें।
4 . बारिश के मौसम में एक सप्ताह से अधिक के लिए फ़ीड के भंडारण से बचें।
5 . इस को नियंत्रित करने का सबसे व्यावहारिक तरीका, मोल्ड अवरोधकों (टाक्सिन बाइंडर्स) के उपयोग के माध्यम से है ।

3 .2 ब्रूडर निमोनिया यानि Aspergilosis

अभिषेक : https://4outu.be/G7Wl4G1-aNg

एस्परजिलोसिस युवा चूजों की एक बीमारी है जो 'ब्रूडर निमोनिया' के रूप में भी जाना जाता है । यह एक श्वसन प्रणाली का बीमारी है । संक्रमण दूषित फ़ीड या बिछाबन से बीजाणुओं के साँस लेने से होता है। नया हैच किए गए चूजे इस संक्रमण के लिए अतिसंवेदनशील होते हैं। ठंडे, उच्च अमोनिया, और धूल भरे तनावपूर्ण वातावरण इस बीमारी की गंभीरता में वृद्धि कराती है ।

कारण

यह रोग एस्परजिलस फ्यूमिगेटस नामक फंगस के कारण होता है। यह फंगस बहुत कठिन और प्रतिरोधी है और इसलिए इसे नष्ट करना मुश्किल है। दूषित–बिछाबन आमतौर पर संक्रमण का स्रोत है । चूजे आने के पहले भुसी के उपर अखबर न बिच्छना और बिछाबन को स्पे करके कीटाणुरहित न करना । गंदे बिछाबन, वेंटिलेशन की कमी, फ़ीड में नमी और मोल्ड आदि अन्य महत्वपूर्ण कारण हैं। इसलिए ताजा 15 दिन के भीतर तैयार फ़ीड खिलाना चाहिए । यह न करने से, चूजे हैचिंग के दौरान या ब्रूडर घर में पहले दिन या दो के दौरान संक्रमित हो जाते हैं, इसलिए इसका नाम 'ब्रूडर निमोनिया' रखा गया है।

लक्षण

– प्रभावित चूजे खाना बंद कर सकते हैं और वायुमार्ग में अवरोध के कारण खुला मुंह कस्ट से स्वास लेने के लक्षण दिखा सकते हैं (फ़ोटो बाएं)

– गर्दन की सूजन, कांपना

पोस्टमॉर्टम निष्कर्ष

फेफड़े मुख्य रुप से प्रभावित होते हैं। वे छोटे नोड्यूल दिखाते हैं जो कठोर और पीले रंग के होते है । श्वासनली और एयरसैक में नोड्यूल्स भी देखे जाते हैं।

** यह सीआर .डी . से भिन्न है, जहां सफेद पानी जैसा दस्त, श्वसन ट्रैक का चोकिंग और गार–गार ध्वनि पाई जाती है। Aspergilosis में आमतौर पर कोई ध्वनि नहीं है, लेकिन IB और LT बीमारी में गर–गर ध्वनि के साथ संक्रमण पाई जाती है ।

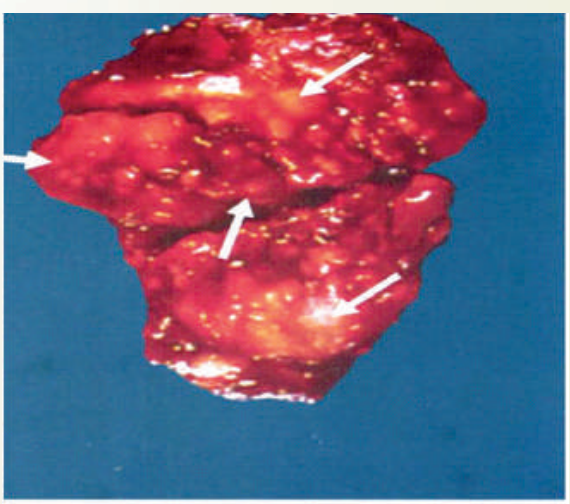

Aspergillosis in a chick-showing severe lung infection. Note the presence of numerous nodular lesions (arrows). They tend to merge together.

नियंत्रण

1 . प्रभावित मुर्गीको अलग फ़ीड दें , और

2 . किसी भी फफूंदी फ़ीड को हटा दिया जाना चाहिए , फ़ीड ट्रे और पीने का बर्तन को साफकिया जाना चाहिए , पुराने बिछाबन को घर से हटाकर नए के साथ बदल दिया जाना चाहिए।

उपचार :

1. ब्रूडिंग परिसर की पूरी तरह से सफाई आनेबाले संक्रमण के स्रोत को समाप्त कर देगी। संक्रमित बिछाबन सामग्री को सुरक्षित रूप से निपटाएं। नए बिछाबन तैयार करें और चूजों, फ़ीड ट्रे और पानी की ट्रे के साथ उचित कीटाणुशोधक़ का प्रयोग करें (केवल कूपर सल्फेट 15 ली पानी में 25 ग्राम)। अन्य जैसा खोर्सोलिन टीएच, बी409 आदि का उपयोग नहीं करें ।
2. 100 चूजों के लिए 2 ली पानी में 1 ग्राम कॉपर सल्फेट मिलाएं और पीने के लिए दें। और,
3. पर्याप्त वेंटिलेशन प्रदान करने के अलावा, प्रभावित मुर्गी के लिए कोई उपचार नहीं है।

3.3 कैंडिडिआसिस

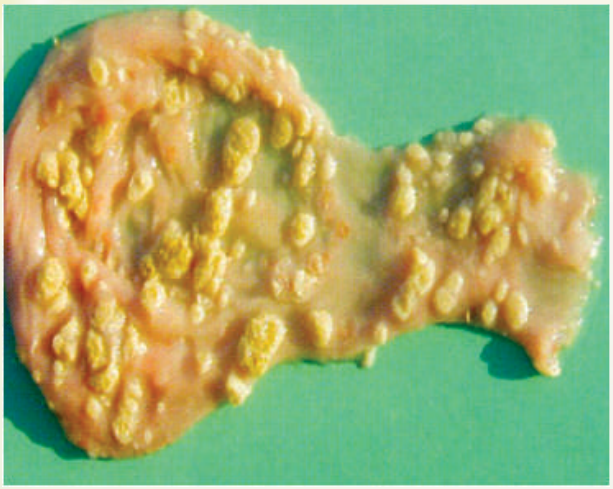

कैंडिडिआसिस एक आहार पथ का रोग है, जो फंगस Candida albicans के कारण आमतौर पर एक दुसरे संक्रमण से होता है। जैसा, अच्छी स्वच्छता की कमी, लंबे समय तक एंटीबायोटिक का उपचार, विटामिन की कमी, गंभीर परजीवी संक्रमण और immunodeficiencies आदि।

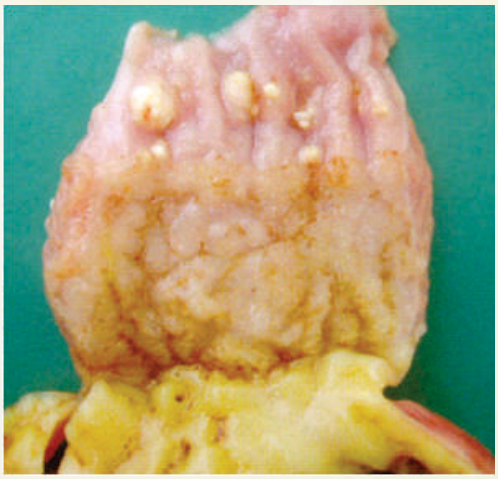

घावों, आमतौर पर आहार थैली (crop), होंठ, आहार पथ में पाया जाता है, लेकिन प्रोवेंट्रिकुलस और शायद ही कभी, आंतों को प्रभावित कर सकता है। प्रभावित म्यूकोसा एक झुर्रीदार, सफेद, तौलिया (turkish towel) जैसा दिखता है।

उपचार: 100 चूजों के लिए 2 ली पानी में 1 ग्राम कॉपर सल्फेट मिलाएं और पीने के लिए दें।

4 माइकोप्लाज्मोसिस

4.1 माइकोप्लाज्मा गैलिसेप्टिकम संक्रमण (MG) यानि सी.आर.डी, क्रोनिक श्वसन रोग जिसे एयरसैक रोग के रूप में भी जाना जाता है

3 महत्वपूर्ण श्वसन रोग अंग्रेजी: https://4outu.be/n_oRUkmnB2

CRD का कारण और उपचार

पहला भाग https://4outu.be/lIQBR2dT5c0

दूसरा भाग– https://4outu.be/QS1JVQhVXSM

एम गैलिसेप्टिकम एक श्वसन रोग का कारण बनता है, जो पूरे श्वसन पथ को प्रभावित करता है, विशेष रूप से एयरसैक जो बलगम (पीला रंग और चीज जैसा पदार्थ) से भर जाता है।

आमतौर पर यह 'क्रोनिक श्वसन रोग' या 'सीआर.डी.' के रूप में जाना जाता है। सर्दियों के दौरान और संबंधित संक्रमणों के मामलों में बीमारी अधिक गंभीर होता है। अक्सर, नेत्रश्लेष्मला, चेहरस फुलजाना और प्रचुर मात्रा में आंसू स्राव देखा जा सकता है।

लक्षण आमतौर पर धीमी गति से विकसित होते हैं। 'जटिल सीआर.डी. (सी.सी.आर.डी.), जिसे 'एयरसैक रोग' के रूप में भी जाना जाता है, एक गंभीर एयरसैक की सूजन है, वह तब होता है जब सीआर.डी. का इलाज नहीं किया जाता है और 3 दिन बीत जाते हैं। एम गैलिसेप्टिकम संक्रमण, ई.कोलाई द्वारा जटिल हो जाता है। और कुछ श्वसन वायरस संक्रमण जैसे आर.डी., आईबी आदि मूल रूप से, आर.डी. का आरएनए वायरस जिसे टीकाकरण के रूप में इंजेक्ट किया गया है, सीआर.डी. जटिलताओं से ट्रिगर हो जाता है।

फैलना

1. आमतौर पर यह एक महत्वपूर्ण अंडा द्वारा–संचारित बीमारी है। हैचिंग अंडे के माध्यम से प्रेषित होता है।
2. वाहक मुर्गी यानी, मुर्गी जो लक्षण दिखाए बिना संक्रमण ले जाते हैं और रोग को प्रसारित करने के लिए जिम्मेदार हैं। संक्रमित वाहक मुर्गियों के साथ अतिसंवेदनशील मुर्गी का सीधा संपर्क बीमारी के प्रकोप का कारण बनता है।
3. प्रसार दूषित धूल, बूंदों, या हवा के माध्यम से भी हो सकता है।
4. अचानक मौसम परिवर्तन प्रसार के लिए एक महत्वपूर्ण कारक है।

लक्षण

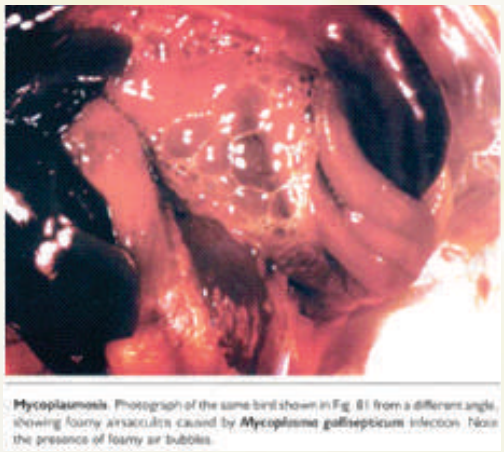

Mycoplasmosis. Photograph of the same bird shown in Fig. 81 from a different angle, showing foamy airsacculitis caused by *Mycoplasma gallisepticum* infection. Note the presence of foamy air bubbles.

1. असामान्य गर–गर आवाज, खांसी, छींकने, नाक के निर्वहन, चेहरे की सूजन, आंखों का सिकुड़ना, खुली चोंच के माध्यम से साँस लेना और सफेद पतला दस्त इस बीमारी की विशेषता है।
2. नरम अंडे के खोल, अंडे का उत्पादन कम हो जाता है, और रोग आमतौर पर सर्दियों के दौरान अधिक गंभीर है।
3. फ़ीड की खपत कम हो जाती है और मुर्गी का वजन कम हो जाता है।

पोस्टमॉर्टम निष्कर्ष

1. श्वासनली, ब्रांकाई, और एयरसैक में आमतौर पर पनीर/चीज जैसी सामग्री होती है। कुछ हद तक निमोनिया (फेफड़ों की सूजन) देखी जा सकती है।
2. एयरसैक रोग के गंभीर मामलों में, पोलीथिन जैसा पतली सफेद/पिला परत हृदय, यकृत और एयरसैक को कवर करती है। ये सीसीआर .डी. के मामले हैं।

उपचार (एलोपैथी):

संक्रमण को जड़ से हटाना नियंत्रण का सबसे संतोषजनक साधन है।

एम गैलिसेप्टिकम कई एंटीबायोटिक दवाओं के लिए अतिसंवेदनशील है। इनमें एनरोफ्लोक्सासिन, सिप्रोफ्लोक्सासिन, फार्मासिन–100 सीआर .डी.–चेक शामिल हैं। मात्रा: पहला हफ्ता 0.5 मिली प्रति किलो शरीर का वजन, दुसरे हफ्ता 1 मिली, तीसरे हफ्ता 1.5 मिली पिने का पानी में दें। इसके लिए प्रति सप्ताह 3 दिनों की दर से 3 सप्ताह देने की आवश्यकता होती है।

MQ https://youtu.be/zTm6u×KA07E

हर्बल उपचार (100 मुर्गी के लिए):

1. 300 ग्राम लहसुन को पीसकर 5 ली पानी के साथ मिलाकर सुबह बिना पर्दे को खोले मुर्गीघर के पूरे अंदरूनी हिस्से, मुर्गी, ट्रे और दीवारों पर बहुत बारीक छिड़काव पर कर दें। MQ हर्बल https://youtu.be/v8kmGieZrWo और,
2. 100 ग्राम लहसुन, 100 ग्राम अदरक, 50 ग्राम अजवाइन, काली मिर्च के 20 टुकड़े, लंबी काली मिर्च की 10 टुकड़े, 5 ग्राम हल्दी पाउडर और 50 ग्राम गुड़ पीस लें। 500 मिली पानी के साथ मिलाएं और इसे 15 मिनट तक उबालें जब तक कि यह 400 मिली न हो जाए। इसे फ़िल्टर किए बिना, 1 दिन के 100 मुर्गी जितना पानी पिटे हैं उतना में मिलाएं और पीने दें। यदि पहले से ही सीआर .डी. से प्रभावित है, तो इस तैयारी को 3–4 दिन दें अन्यथा एक बार हफ्ता में दें। और,
3. प्रति सप्ताह 200 ग्राम लहसुन खिलाएं।

4.2 माइकोप्लाज्मा सिनोविया (एमएस संक्रमण)

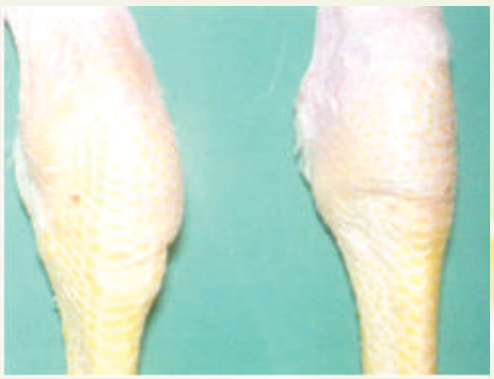

शुरुआती संकेत लंगड़ापन, जोड़ों का सुजन गिरजाना और मंद वृद्धि हैं। 4 से 12 सप्ताह की उम्र में युवा मुर्गियां अतिसंवेदनशील होते हैं।

यह बीमारी पुरे बर्ष पाया जाता हैं, लेकिन हैं ठंडे, आर्द्र मौसम या बिछाबन गीला होने के दौरान ज्यादा पाया जाता है।

5. वायरल रोग

5.1 रानी खेत रोग (आर.डी. या निउ कास्टेल एन.डी. रोग)

यह एक बहुत ही गंभीर, अचानक, और तेजी से फैलने वाली बीमारी है; और 6 वें से 7 वें दिन के बाद से देखा जा सकता है। यह पूरे वर्ष में होता है , लेकिन सर्दियों और गर्मियों में सबसे आम है।

कारण

एक आर.एन.ए. वायरस जिसे पैरामाइक्सोवायरस कहा जाता है। ये वायरस अलग–अलग तरह के होते हैं। कुछ अत्यधिक शक्तिशाली हैं और बीमारी के सबसे गंभीर रूप का कारण बनते हैं; अन्य मध्यम हैं, जबकि एक निश्चित समूह केवल हल्के से हानिकारक है। इसके अलावा कुछ वायरस ऐसे भी होते हैं जो बिना किसी लक्षण के संक्रमण का कारण बनते हैं।

फैलना

1. वायरस हवा, दूषित फ़ीड और पानी के माध्यम से फैलता है और संक्रमण मुख्य रूप से साँस के माध्यम से होता है । लोगों और उपकरणों की आवाजाही भी संक्रमण फैलाती है।
2. बिना मुर्गी का, मुर्गीघर में भी वायरस हफ्तों के लिए जीवित रह सकता है । हालांकि, मृत मुर्गी या मल में, वायरस कई महीनों तक जीवित रहता है।

लक्षण

वायरस की शक्ति के आधार पर, लक्षण अलग–अलग होते हैं।

1. बहुत हानिकारक वायरस : सुस्त पड़जाना, कमजोरी, गिर जाना, हरे–पतली दस्त, चेहरे की सूजन, चूल के मुरझा जाना, और तंत्रिका–गड़बड़ी जैसे लक्षण दिखाई दे सकते हैं, थकावट और अचानक मृत्यु में समाप्त हो सकते हैं। अन्य संकेतों में गर्दन का मुड़ना, पैरों का पक्षाघात, लड–खडा कर चलना और शरीर की धनुषाकार स्थिति शामिल है। चूजों में मृत्यु दर 100त्न तक हो सकती है। अंडा देनेबाले मुर्गी में, प्रारंभिक लक्षण नरम–खोल वाले अंडे होते हैं ।
2. मामूली हानिकारक वायरस : आमतौर पर गंभीर श्वसन रोग और श्वसन लक्षणों का कारण बनते हैं। वयस्क मुर्गी में कई महीनों के लिए अंडे के उत्पादन में उल्लेखनीय गिरावट आती है।
3. हल्के हानिकारक वायरस : केवल एक हल्के श्वसन समस्या का कारण बन सकता है ।

पोस्टमॉर्टम निष्कर्ष

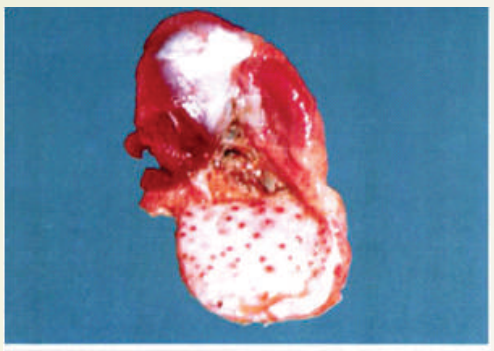

Ranikhet disease in a 63-week-old layer chicken. Note prominent haemorrhages on the tips of glands in the proventriculus.

1. Proventriculus का ग्रंथियों में pinpoint रक्तस्राव

2. आंतों की दीवार में रक्तस्रावी घावों

Highly powerful (virulent) form of Ranikhet disease (intestinal form) from the same 36-day-old broiler chicken shown in Fig. 4. Note pinpoint haemorrhages in the proventriculus (black arrow); and one well-defined almost circular haemorrhagic lesion (white arrow) and other diffuse haemorrhages (yellow arrow) in the small intestine. These lesions are characteristic of highly powerful disease-producing Ranikhet disease viruses (viscerotropic velogenic).

उपचार : रानीखेत का इलाज MQ:https://youtu.be/qs_YKvFEBnA

1. जब मुर्गी स्वस्थ होता है, तब 7 वें दिन पर एफ–1 स्ट्रेन, 21 वें दिन पर बी–1 लासोटा और 52 दिन पर आर2 बी टीकाकरण करें। इसके बाद हर 3 महीने में आर2 बी को दोहराएं। एंटीबॉडी विकसित करने के लिए, सभी टीकाकरण निर्धारित रूप में किए जाने की आवश्यकता है। और,

2. अगर बीमार आगई है तो, जितना संभव हो उतना बेचें दें । आर .डी . से प्रभावित मुर्गी को खाना अच्छी तरह से उबलाकर कहना सुरक्षित है । और,

3. बिछाबन को बदलें । दोपहर 12 बजे, लगातार 7 दिनों के लिए खोर्सोलिन टीएच या B409 के साथ पूरे मुर्गीघर को कीटाणुरहित करें । 15 ली पानी में 50 मिली खोर्सोलिन टीएच मिलाएं । और,

4. 100 मुर्गी के लिए: "इम्यूनो केयर" 15मिली दे (एक दिन में जितना पीने पिएगा उतना पानी के साथ मिलाएं) । इसे 3 दिनों तक दोहराएं । इसके अलावा, 3 दिनों के लिए 1 ली पानी में 1 मिली Vircons दवा मिलाएं । इसके अलावा 5 दिनों के लिए विटामिन–ई और कैल्शियम भी दें । या,

5. 100 मुर्गी के लिए : एक दिन में पिनेबाला पानी के साथ Duaprim एंटीबायोटिक्स को मिलाएं (1 ग्राम प्रति लीटर पानी), इसे 4 से 5 दिनों के लिए दें ।

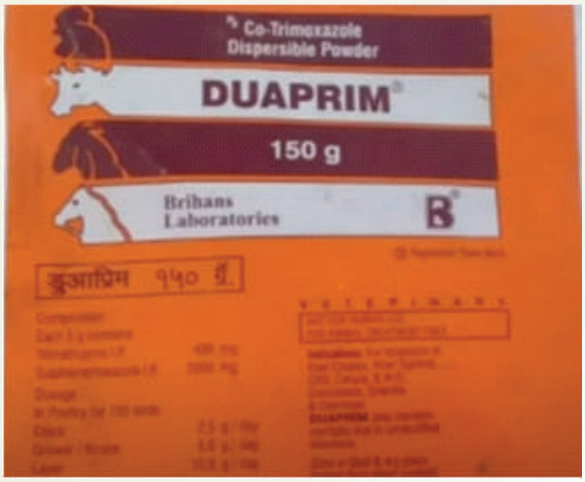

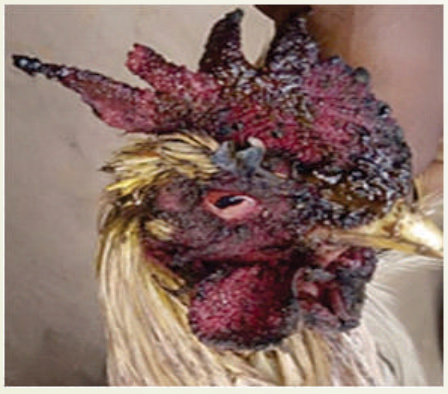

5 .2 बर्ड फ्लू / एवियन इन्फ्लूएंजा

तरल पदार्थ के संचय, आंखों के निर्वहन आदि के कारण सिर की सूजन के साथ वाटल्स , चुल और पैर की उंगलियों के साथ नीली / काला / बैंगनी रंग और अचानक मृत्यु ।

त्वचा के नीचे खून बह रहा है (ज्यादातर पैरों और shanks पर रक्तस्राव)

पोस्टमार्टम निष्कर्ष :
गिज़ार्ड (बाए और) अंडाशय (दाएं ओर) रक्तस्राव

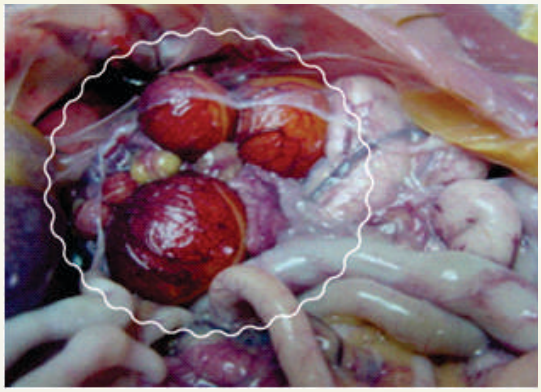

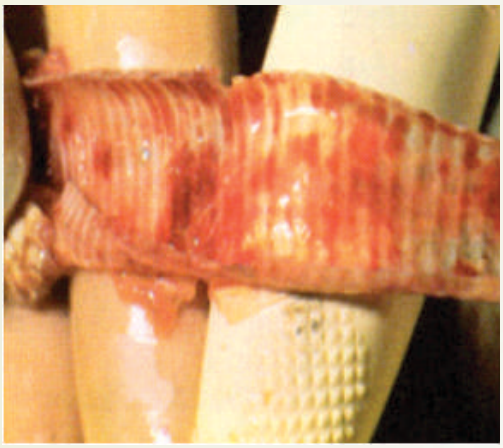

श्वासनली में खून बह रहा है (बाएं और)
मांसपेशियों और दिल के चारों ओर वसा में (दाएं ओर)

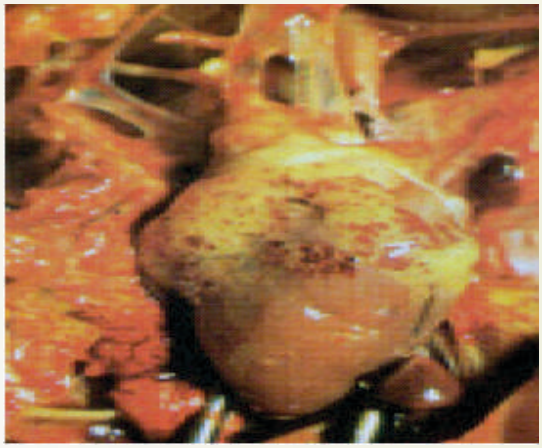

उपचार : रानीखेत रोग के समान।

5.3 इन्फेसिअस ब्रोंकाइटिस (IB)

डॉ संजीव : https://youtu.be/Ql8MgGlKrPw

सभी उम्र के मुर्गी अतिसंवेदनशील होते हैं, लेकिन युवा मुर्गी में यह बीमारी सबसे आम है ।

लक्षण

1. **श्वसन रूप :** सभी उम्र के मुर्गी में सबसे आम है, लेकिन छोटे में सबसे आम है। लक्षणों में, असामान्य श्वसन आवाज़, खांसी और छींकना, गंभीर श्वसन समस्या, खुली चोंचसाँस लेना, पानी का नाक/आंखों से निर्वहन, और चेहरे की सूजन शामिल हैं।

2. **वयस्क मुर्गी :** कम अंडे का उत्पादन, कभी–कभी 50% से कम हो सकती है। अंडे की गुणवत्ता में गिरावट आई हो। अंडे छोटे, विकृत, शेल–कम हो सकते हैं, या सतह पर कैल्शियम जमा हो सकते हैं । अंदर, एल्बुमेन (सफ़ेद अंश) पतला और पानी जैसा होकर अपनी चिपचिपाहट खो देता है।

** यह एग ड्रॉप्स सिंड्रोम रोग से अंतर है, जहां एल्बुमेन सही रहता है।

कारण

एक वायरस – जिसे कोरोनोवायरस कहा जाता है। वायरस हफ्तों से महीनों तक मुर्गी के शारीर के बाहर जीवित रहसकता है। हालांकि, यह आम कीटाणुनाशकों द्वारा तेजी से मारा जाता है ।

फैलना

1. चूंकि वायरस आसानी से हवा से फैलता है, इसलिए संक्रमित हवा को साँस लेना, फैलने का सबसे महत्वपूर्ण जरिया है । हालांकि, संक्रमित मल के माध्यम से फैलना भी महत्वपूर्ण हो सकता है।
2. वाहक–मुर्गी जो लक्षण दिखाए बिना संक्रमित होते है, वह भी बीमारी फैलाते हैं । मुर्गी ठीक होने के बाद भी 4 सप्ताह तक वायरस का बाहक हो सकते हैं ।

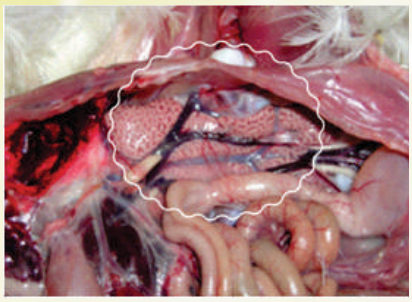

पोस्टमॉर्टम निष्कर्ष

श्वसन पथ में अतिरिक्त बलगम, श्वासनली की सूजन आदि होता है । गुर्दे सूजन और पीला होते हैं। कुछ मुर्गी में आंत का गाउट (सफेद दानेदार सामग्री) होता है ।

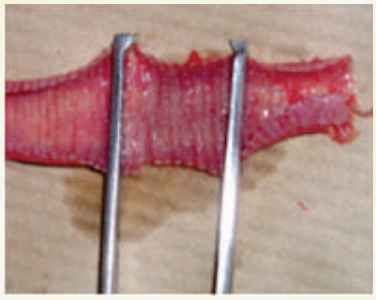

उपचार : संक्रामक ब्रोंकाइटिस के लिए कोई विशिष्ट उपचार नहीं है। MQ: https://youtu.be/ydK7K9vsOvo

1. एलोपैथी– तीन से पांच दिनों के लिए एंटीबायोटिक दवाओं मदद कर सकता है। 100 मुर्गी के लिए : दिन के समय में वाईरो–सेफदबा और इम्मुनेट प्रत्येक 5 मिली उतना पानी में दे जो 2 घंटे के भीतर पिने के लिए पर्याप्त है । और शाम के समय में 100 मुर्गी के लिए यूरो–ब्रैड और मक्लिव पाउडर प्रत्येक 5 मिली उतना पानी में दे जो 2 घंटे के भीतर पिने के लिए पर्याप्त है ।
   या, सिस्टोन टैबलेट, 1 गोली प्रति 40 किलोग्राम शरीर के वजन पर, उतना पानी में दे जो 2 घंटे के भीतर पिने के लिए पर्याप्त है । यदि गोली उपलब्ध नहीं है, तो पर्याप्त पानी में 5 मिली सिरप मिलाएं जिसे दिन में दो बार, 2 घंटे में पिया जा सकता है। या,

2. हर्बल :, 100 ग्राम लहसुन, 100 ग्राम अदरक, 50 ग्राम अजवाइन, काली मिर्च के20 पिस, पिपली के 10 पिस, 5 ग्राम हल्दी पाउडर और 50 ग्राम गुड़ को साथ पीस लें । 500 मिली पानी के साथ मिलाएं और इसे 15 मिनट तक उबालें जब तक कि यह 400 मिली न हो जाए। इसे फ़िल्टर किए बिना 1 दिन के पीने के पानी में मिलाकर दें। यदि पहले से ही प्रभावित है, तो इस 3 से 4 दिन दें अन्यथा एक हफ्ता में एक बार दें। और
3. 100 मुर्गी को प्रति सप्ताह 200 ग्राम लहसुन खिलाएं।

आर .डी . और कोरैजा से भिन्न :

संक्रामक ब्रोंकाइटिस को रानीखेत रोग और कोरिजा से अलग किया जाना चाहिए। रानीखेत रोग अधिक गंभीर है, और अंडे के उत्पादन में कमी, संक्रामक ब्रोंकाइटिस की तुलना में अधिक है। आर .डी . में पक्षाघात के लक्षण होते हैं। संक्रामक कोरिजा को चेहरे की सूजन के आधार पर पहचान किया जा सकता है जो संक्रामक ब्रोंकाइटिस में नहीं होता है।

5 .4 एग ड्रॉप सिंड्रोम (ई .डी .एस .)

एग ड्रॉप सिंड्रोम मुर्गियों में एक संक्रामक रोग है जो अंडे के उत्पादन में एक गिरावट, अनियमित आकार के अंडे, नरम या कम अंडे और डी–पिगमेंटेशन अदि का कारन है ।

उपचार : फ़ीड में कैल्शियम और खनिज मिश्रण दें ।

5 .5 लैरिंगोट्रैचाइटिस (एल .टी .)

एल .टी . एक हरपीजवायरस के कारण होता है जो प्रतिरोधी होता है और दबा से मरता नहीं है । यह मुर्गियों, बटेर और मोरों में एक वायरल संक्रमण है जो श्वसन पथ की सूजन के लिए दायी है। यह (ए) लैरिंगोट्रेकियल और (बी) कंजंक्टिवल रूप में प्रकट होता है। स्वरयंत्रिक रूप में, दम घुटने, गर–गर आवाज और खांसी देखी जाती है। साँस के दौरान सिर और गर्दन को दृढ़ता से आगे और ऊपर की ओर खिचता है ।

स्वरयंत्र और श्वासनली के श्लेष्म कोट की सूजन। अधिकांश प्रकोपों का सामना 4 से 14 सप्ताह की उम्र के बीच पाया जाता है, हालांकि बीमारी किसी भी उम्र के मुर्गी को प्रभावित करती है ।

एल .टी . कंजंक्टिवल रूप में; गीली आंखें, आंसू स्राव और इन्फ्राऑर्बिटल साइनस की सुजन देखी जाती है जो विशेष रूप से एक जटिल संक्रमण में।

** एल .टी . रोग आईबी, एस .एच .एस, ई .कोलाई और सिनोविया संक्रमण आदि से अलग है ।

उपचार :

एल .टी . के खिलाफकोई उपचार प्रभावी नहीं है, लेकिन गंभीर मामलों में दुसरे संक्रमण को नियंत्रित करने के लिए एंटीबायोटिक दवाओं का उपयोग किया जा सकता है। मुर्गी को शांत रखने और धूल के स्तर को कम करने से कुछ राहत प्राप्त होती है ।

1. हर्बल :, 100 ग्राम लहसुन, 100 ग्राम अदरक, 50 ग्राम अजवाइन, काली मिर्च के20 पिस, पिपली के 10 पिस, 5 ग्राम हल्दी पाउडर और 50 ग्राम गुड़ को साथ पीस लें । 500 मिली पानी के साथ मिलाएं और इसे 15 मिनट तक उबालें जब तक कि यह 400 मिली न हो जाए। इसे फ़िल्टर किए बिना 1 दिन के पीने के पानी में मिलाकर दें। यदि पहले से ही प्रभावित है, तो इस 3 से 4 दिन दें अन्यथा एक हप्ता में एक बार दें। और,
2. 100 मुर्गी को प्रति सप्ताह 200 ग्राम लहसुन खिलाएं।

5.6 स्वोलेन हेड सिंड्रोम (एस.एच.एस.)

Swollen head syndrome in a broiler chicken showing inflammation of the face and head, with closed eyes.

सूजी हुई सिर एक ऐसी स्थिति है जो सभी प्रकार की मुर्गियों को प्रभावित करती है, लेकिन मुख्य रूप से ब्रॉयलर। इसमें आंखें और सिर के आसपास के अंग शामिल हैं। एस.एच.एस. आमतौर पर चौथे सप्ताह के बाद देखा जाता है।

कारण

प्राथमिक एजेंट एक एवियन न्यूमोवायरस (एपीवी) और दूसरी एजेंट, आमतौर पर ई कोलाई है। यह श्वसन और तंत्रिकायों में गड़बड़ी पैदा करती है। यह ऊपरी श्वसन–प्रणाली को वायरल संक्रमण करने के बाद त्वचा के नीचे के अंगों को संक्रमित करता है। अमोनिया गैस यह रोग को बढ़ाता है। प्रवेश का मार्ग नाक या श्लेष्म झिल्ली है। यहां से बैक्टीरिया त्वचा के नीचे के तरफतक पहुंच प्राप्त करते हैं।

लक्षण

मुख्य लक्षण सिर की सूजन है जो बैक्टीरिया (आमतौर पर ई.कोलाई) के कारण जबड़े,वाटल्स के बीच नीचे, आंखों के चारों ओर त्वचा के नीचे तरल पदार्थ के संचय के कारण होता ह। श्वसन लक्षणों में खांसी और छींकना, गर–गर आवाज़ और कंजंक्टिवाइट शामिल हैं।

यह वायरस खराब वेंटिलेशन, धूल और अमोनिया का स्तर आदि के कारण होता है।

एलॉपथी उपचार :

पानी के माध्यम से एंटीबायोटिक दवाओं का प्रयोग किआ जा सकता है जो ई. कोलाई संक्रमण केलिए बताया गया है।

हर्बल उपचार :

1. 100 ग्राम लहसुन, 100 ग्राम अदरक, 50 ग्राम अजवाइन, काली मिर्च के20 पिस, पिपली के 10 पिस, 5 ग्राम हल्दी पाउडर और 50 ग्राम गुड़ को साथ पीस लें। 500 मिली पानी के साथ मिलाएं और इसे 15 मिनट तक उबालें जब तक कि यह 400 मिली न हो जाए। इसे फ़िल्टर किए बिना 1 दिन के पीने के पानी में मिलाकर दें। यदि पहले से ही प्रभावित है, तो इस 3 से 4 दिन दें अन्यथा एक हप्ता में एक बार दें। और,
2. 100 मुर्गी को प्रति सप्ताह 200 ग्राम लहसुन खिलाएं।

5.7 चेचक (Fowl Pox)

मुर्गी चेचक आमतौर पर कमजोरी और खराब वजन बढ़ाने का कारण बनता है। मृत्यु दर कम है, लेकिन वयस्कों के मामले में डिप्थीरिटिक रूप के साथ 50त्न से अधिक हो सकती है, और विशेष रूप से चूजों के मामले में ओर ज्यादा हो सकती है।

लक्षण

मुर्गी चेचक रोग के दो रूप हैं: (1) त्वचा या त्वचीय रूप (ड्राई चेचक) त्वचा के उपर घाव (सिर, गर्दन, चूल, वाटल्स, पलकें, पैर, और पैरों पर दिखाई देते हैं। सिर, चूल और वाटल्स पर घाव आमतौर पर दिखने में मस्से की तरह दानेदार और पीले से गहरे भूरे रंग के होते हैं।

(2) डिप्थीरिटिक रूप (गीला रूप): इस मामले में, ऊपरी श्वसननाल और पाचन तंत्र में छोटे सफेद नोड्यूल देखे जाते हैं। ये नोड्यूल्स अधिकांश मुंह में पाए जाते हैं, लेकिन स्वरयंत्र, श्वासनली और अन्नप्रणाली में भी मौजूद हो सकते हैं। इन घावों से सांस लेने में कठिनाई होती है। नाक में घाव, नाक के निर्वहन को ओर नेत्रश्लेष्मला पर घाब, आंखों के निर्वहन को जन्म देते हैं।

कारण

एक विषाणु जिसे एविचेचकवायरस कहा जाता है। मुर्गी चेचक वायरस सभी उम्र और नस्लों के मुर्गी को संक्रमित करता है।

फैलना

1. सीधे संपर्क से एक मुर्गी से दूसरे मुर्गी में वायरस का फैलना प्रसार का मुख्य तरीका है। वायरस को कोशिकाओं में प्रवेश करने, बढ़ने और बीमारी का कारण बनने के लिए त्वचा में कुछ ब्रेक की वश्यकता होती है। मुर्गी आपस में लड़ने या एक–दूसरे को खरोंचने से त्वचा पर वायरस प्रबेश करता है।
2. मच्छरों से बीमारी प्रसारित होता है और आंखों के संक्रमण को बढ़ाता है। मच्छर, चेचक वायरस से संक्रमित मुर्गी का रक्त पिने के बाद अन्य कई मुर्गी को संक्रमित कर सकते हैं।
3. खराब स्वच्छता और स्वच्छ स्थिति बीमारी के प्रसार में मदद करती है।
4. एक दूषित वातावरण में, पंखों से हवा में वायरस की उपस्थिति और मुर्गी चेचक वायरस युक्त सूखे फफोले, त्वचा और श्वसन पथ के संक्रमण का कारण बन सकते हैं। वायरस महीनों या यहां तक कि वर्षों तक सूखे फफोले में जीवित रह सकता है।

उपचार : चेचक का इलाज MQ: https://youtu.be/oDtA7zkSk9s

1. 42 दिनों पर 0.2 मिली सब–कट पहली बार मुर्गी को टीका/इंजेक्शन और 100 दिनों में दूसरी खुराक लगाएं। फिर इसे 6 महीने के अंतराल पर दोहराएं।
2. पोटेशियम परमैंगनेट पानी के साथ फफोले को धोएं। और
3. हर्बल– 2 भाग एलोवेरा जूस और 1 भाग हल्दी पाउडर को मिलाकर एक जेल बनाएं और लगाएं। या, नीम की पत्तियों का एक पेस्ट सरसों के तेल की 10–15 बूंदों के साथ मिलाएं और लागू करें। नहीं तो
4. होम्योपैथी – 50 वयस्क मुर्गी एक दिन में पिने के लिए पर्याप्त पानी के साथ 10 मिली Thuja 200 CH मिलाएं। 5–7 दिन के लिए दें। नहीं तो,

5 .8 इन्फ़ेक्सिअस एन्सेफ्लोमाइलाइटिस (आई .ई .एम)

लक्षण

1. लक्षणों में अवसाद, मांसपेशियों की असमन्वय (ATAXIA) और विशेष रूप से सिर और गर्दन के झटके शामिल हैं। कांपने और झटकों के कारण, इसे ' कंपन महामारी ' भी कहा जाता है। कंपकंपी अस्पष्ट हो सकती है, लेकिन अक्सर स्पष्ट होती है जब मुर्गीको हाथ से धीरे से पकड़ा जाता है और ध्यान से देखा जाता है।

https: //www.youtube.com/watch?v=0_2qPi6gge0

2. मांसपेशियों की असमन्वयता मामूली असमन्वय से लेकर सोफे पर बैठने जैसा, या एक तरफलेट जाना आदि होती है। मुर्गी हिलने–डुलने में असमर्थ हैं। ऐसी स्थिति में, फ़ीड तक नहीं पहुंचने से भुखमरी से मौत होती है, या
झुंड के अन्य सदस्यों द्वारा कुचल दिया जाता है। हैचिंग के तुरंत बाद नर्वस लक्षण देखे जा सकते हैं, लेकिन आमतौर पर एक सप्ताह की उम्र में देखे जाते हैं। यह रोग आमतौर पर तब होता है जब चूजे 1 से 2 सप्ताह की उम्र के होते हैं।

https://youtu.be/VjgDzMlXqLM

कारण

एंटरोवायरस नामक एक विषाणु

फैलना

1. हैचिंग अंडे के माध्यम से संचरण प्रसार का एक बहुत ही महत्वपूर्ण साधन है ।
2. दूषित पानी और फ़ीड फैलने के स्त्रोत हैं। वायरस युक्त मल से दूषित उपकरणों द्वारा फैल सकता है ।

** विटामिन–ई की कमी ओर आई .ई .एम के देखने में सामंजस्य होते हैं ।

उपचार

उपचार का कोई मूल्य नहीं है।

5.9 इन्फ़ेक्सिअस बुर्साल रोग (IBD/गम्बोरो)

डॉ संजीव कुमार https://youtu.be/WZAGFdVyq_Y

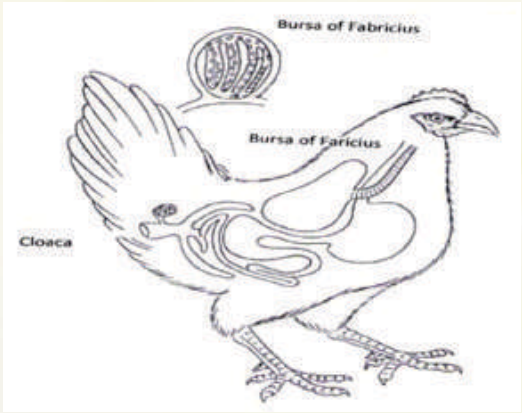

गम्बोरो रोग, पूरे वर्ष में होता है, युवा मुर्गियों (18 से 40 दिनों की उम्र के बीच) का एक अचानक और गंभीर, अत्यधिक संक्रामक वायरल संक्रमण है । रानीखेत के बाद, यह मुर्गी की दूसरी सबसे महत्वपूर्ण बीमारी है । यह बीमारी बहुत आर्थिक महत्व की है क्योंकि, भारी मृत्यु दर का कारण बनने के अलावा, यह शारीर का प्रतिरोध–शक्ति को लंबे समय तक दमन करदेती है। प्रतिरोध–शक्ति दमन हो से टीकाकरण विफ्लताओ, ई.कोलाई संक्रमण, और रोग बढ़ जाते हैं। कई मामलों में इन अन्य बीमारियों से होने वाली मौतें गंबोरो रोग से भी अधिक होती हैं।

कारण

एक वायरस – जिसे बिरनावायरस कहा जाता है ।वायरस में बर्सा की कोशिकाओं के लिए एक आकर्षण होता है और इस अंग को नष्ट करने की कारण बनता है ।

फैलना

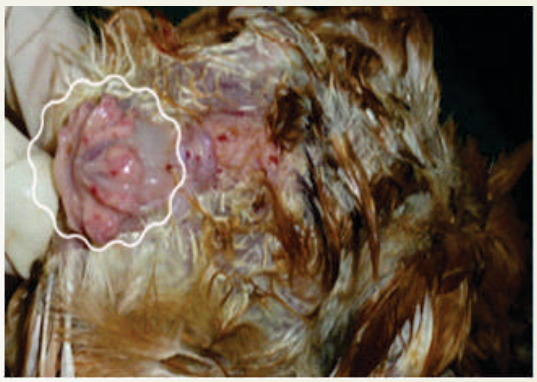

संक्रमण का सबसे आम मार्ग मुंह से है। वायरस गर्मी और कीटाणुनाशकों के लिए प्रतिरोधी होने के नाते जीबित रहता है, और मुर्गी घर पर एक बार होने के बाद 122 दिनों तक संक्रामक रहते हैं।
यह बहुत स्थिर है और कई महीनों तक वातावरण में भी अत्यधिक संक्रामक रहता है।

लक्षण : इंडिया टीवी https://youtu.be/d×f0cEzKrKo

वायरस की रोग–उत्पादक शक्ति के आधार पर लक्षण अलग–अलग होते है ।1 से 6 सप्ताह की उम्र के बीच चूजों में गंभीर रूप देखा जाता है। शुरुआती लक्षणों में से, अपने स्वयं के मलद्वार को नोचने की प्रवृत्ति होती है। अन्य लक्षणों में अवसाद, सफेद–पीले पानी के दस्त, गंदे मलद्वार, भूख की कमी, बिखराहुआ पंख, सर झुककर बैठ जाना, कांपना, बंद आंखें, थकावट में लेटना और अंत में मृत्यु शामिल हैं।
हल्के रूप में, मंद बृद्धि को छोड़कर अम्य कोई लक्षण नहीं दिखा सकता है।

पोस्टमॉर्टम निष्कर्ष

1. शुरुआती चरणों में बुर्सा का सूजन, 4 वें दिन तक अपने आकार और वजन में दोगुना हो सकता है ।
2. कभी–कभी बड़े पैमाने पर रक्तस्राव पूरे बर्सा में मौजूद होते हैं। यह गम्बोरो रोग की विशेषता है।
3. जांघ और स्तन की मांसपेशियों में रक्तस्राव, यह भी गम्बोरो रोग की विशेषता है ।

नियंत्रण

1. 14 और 28 दिनों में युवा मुर्गीका टीकाकरण नियंत्रण का सबसे अच्छा तरीका है।
2. स्वच्छता और सावधानियां गम्बोरो रोग के मामले में भी सख्ती से पालन किया जाना चाहिए।

उपचार गमबोरो का इलाज MQ,https://youtu.be/ VlsFErPqkmQ

1. एलोपैथी – संक्रमित मुर्गी को अलग–थलग करें। 24 घंटे के लिए पर्याप्त पानी लें और 1 ग्राम **Virkons** प्रति लीटर पानी में दें ।2 दिनों के लिए जारी रखें। इसके अलावा अगले 2 दिनों के लिए इमुन–केयर दबा 1 मिली प्रति लीटर पीने के पानी में दे ।
2. हर्बल – 100 ग्राम एलोवेरा जूस निकालें और 100 मुर्गी के लिए पीने के पानी के साथ मिलाएं। 3 दिनों तक जारी रखें। या, 100 मुर्गी के पीने के पानी में 100 ग्राम गुड़ और 100 मिली दूध मिलाएं और 3 दिनों तक जारी रखें।

5.10 लिम्फोइड ल्यूकोसिस (एल.एल.)

लिम्फोइड ल्यूकोसिस मुर्गियों की एक ट्यूमर–उत्पादक वायरल बीमारी है। लिम्फोइड ल्यूकोसिस में जिगर/कलेजी बहुत बड़ा होना इस की विशेषता है। यह बीमारी 16 सप्ताह की उम्र के बाद किसी भी समय होती है। लिम्फोइड ल्यूकोसिस और मारेक्स की बीमारी में जिगर/कलेजी और अन्य अंगों की लक्षण एक–दूसरे से मिलती–जुलती है।

फैलना

लिम्फोइड ल्यूकोसिस वायरस अंडे के माध्यम से मुर्गी से संतान तक प्रेषित होता है ।

लक्षण

1. चूल, पीला, मुरझाया, और नीले रंग के मलिनकिरण (cyanotic) के हो सकता है ।
2. डायरिया हो सकता है।
3. पेट आमतौर पर बड़े पैमाने पर बढ़ी हुई जिगर/कलेजी की वजह से बहुत बड़ा और कठिन हो जाता है।

पोस्टमॉर्टम निष्कर्ष

1. जिगर/कलेजी बहुत बड़ा हो जाना
2. जिगर/कलेजी, प्लीहा, फैब्रिसियस, गुर्दे, और अंडाशय के बुर्सा आमतौर पर नोड्यूलर / ट्यूमर का गठन

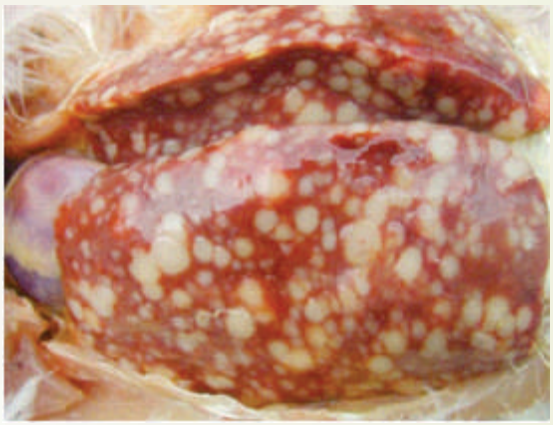

नियंत्रण

1. पर्यावरण से संक्रमण को कम करने के लिए स्वच्छता और झुंड प्रबंधन के उच्च मानकों पर नियंत्रण होना चाहिए।

उपचार – कोई उपचार या टीका उपलब्ध नहीं है।

5.11 मरेक्स रोग

मारेक्स की बीमारी 6 सप्ताह से अधिक उम्र के मुर्गियों को प्रभावित करती है, जहां एल.एल. यौन परिपक्वता के बाद होता है(12 से 24 सप्ताह की उम्र)। एलएल मामले एमडी की तुलना में कम होते हैं । यह रोग मुख्य रूप से दो रूपों में होता है: (ए) क्लासिकल मारेक की बीमारी, और (बी) तीव्र मारेक की बीमारी।

(A) क्लासिकल मरेक्स रोग

लक्षण इस बात पर निर्भर करते हैं कि कौन सी तंत्रिका प्रभावित होती है। क्लासिकल मारेक की बीमारी में एक या अधिक नसों के विस्तार आमतौर पर पाया जाता है। प्रभावित तंत्रिकाएं सामान्य मोटाई से 2–3 गुना तक होती हैं।

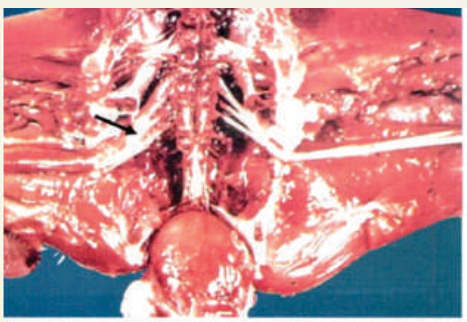

Marek's disease (classical form). Note enlargement of nerves in the left sciatic plexus (network) in a **hen** (arrow). **This is characteristic of the classical form.** The right sciatic plexus is normal.

ब्रैचियल और कटिस्नायुशूल नसों की कमजोरी आम है, और पंखों और पैरों के पक्षाघात का कारण बनती है। एक विशेष मुद्रा वह है, जिसमें मुर्गी पैर तंत्रिका भागीदारी के परिणामस्वरूप एक पैर को आगे और दूसरे को पीछे की ओर फैलाए जाने के लक्षण पाये जाते है।

(B) तीव्र मरेक्स रोग

इस रूप में मृत्यु दर आमतौर पर क्लासिकल रूप की तुलना में बहुत अधिक होती है। कई मुर्गी पूर्ववर्ती लक्षणों के बिना अचानक मर जाते हैं। अन्य, मृत्यु से पहले उदास दिखाई देते हैं, और कुछ क्लासिकल रूप में देखे गए के समान लकवाग्रस्त लक्षण (पंख को लकवा मारना, पंख निचे लटकना, गर्दन झुकजाना आदि) दिखाते हैं। वजन घटना, पीलापन, सिकुड़ी हुई चूल, भूख में कमी और दस्त जैसे संकेत देखे जा सकते हैं ।

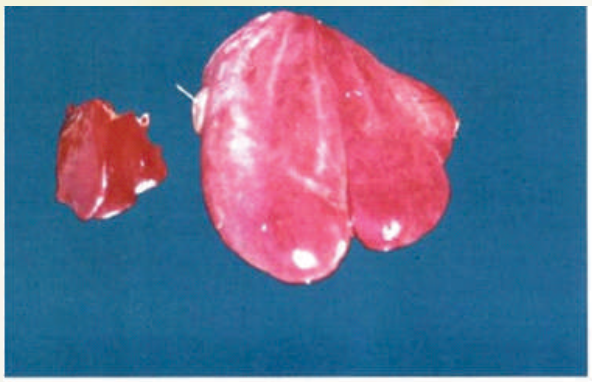

Marek's disease (acute form) in a different **29-week-old layer chicken.** Note the affected liver (right) is enlarged to several times its normal size. Compare it with a normal liver on the left, from a different bird of the same age. Note also the presence of a distinct tumour on the left border of the affected liver (arrow).

तीव्र मरेक्स रोग जिगर/कलेजी, तिल्ली, गुर्दे, फेफड़ों और दिल के चिह्नित वृद्धि की विशेषता है। छोटे मुर्गी में, जिगर/कलेजी इज़ाफ़ा मध्यम है, लेकिन में वयस्क मुर्गी में जिगर/कलेजी बहुत बड़ा हो जाता है, जो लिम्फोइड ल्यूकोसिस के समान होता है। एलएल के मामले में, ट्यूमर अक्सर बर्सा में पाया जाता है, लेकिन एमडी के मामले में नहीं। इसी तरह, एमडी के मामले ट्यूमर त्वचा में पाए जाते हैं लेकिन एलएल के मामले में नहीं।

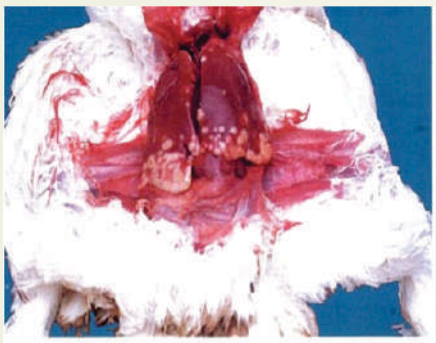

Marek's disease (acute form) in a **27-week-old layer chicken.** Note liver shows numerous tumour lesions at its lower end (yellowish areas).

अंडाशय की विशिष्ट फूलगोभी जैसी उपस्थिति, एमडी रोग

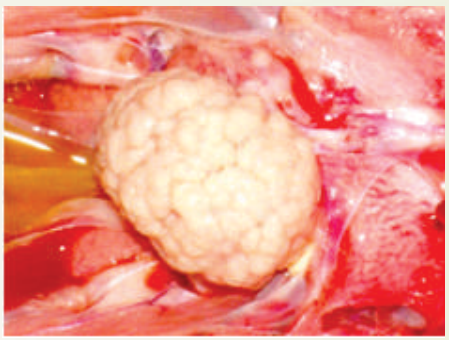

नियंत्रण :

नियंत्रण प्रबंधन विधियों पर आधारित है, जिसमें शामिल हैं: (1) संक्रमण के स्त्रोतों से बढ़ती मुर्गियों का अलगाव, (2) जन्म के समय पर टीकाकरण (3) आनुवंशिक रूप से प्रतिरोधी स्टॉक का उपयोग।

5 .12 इनक्लुजोन बड़ी हेपेटाइटिस (IBH)

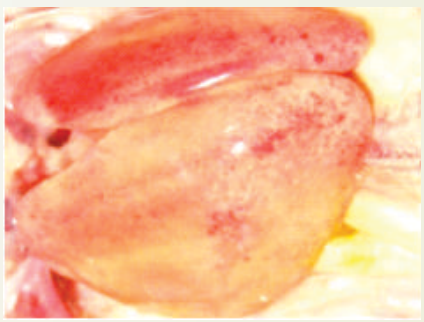

आई .बी .एच . एक एडेनोवायरस संक्रमण है। आई .बी .एच . प्रकोप मुख्य रूप से 3 से 8 सप्ताह की उम्र में मांस प्रकार के मुर्गियों में पाया जाता है । आईबीएच अक्सर अन्य बीमारियों जैसे आईबीडी के परिणामस्वरूप इम्यूनोडेफिशिएंसी के लिए एक दुसरे संक्रमण के रूप में होता है।

लक्षण

पीला चूल और वाटल्स, उदासीनता और कडबरी चॉकलेट रंग बिट अदि । आईबीडी की तरह पेर दबाकर बैठना, पीठ कछुआ का तरह घुमाबदार होना।, पंख खाडे हो जाना, जिगर फीका पद जाना और सुजन हो जाएगा और बिस्किट की तरह क्रंची हो जाएगा ।

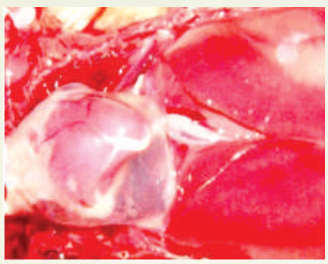

पोस्टमार्टम के लक्षण

आईबीएच के कई उदाहरणों में, पेरिकार्डियल द्रव की मात्रा बढ़ जाती है (दिल पानी से भरा होता है और लीची आकार बन जाता है । गुर्दे बढ़े हुए, पीले और रक्तस्राव ।

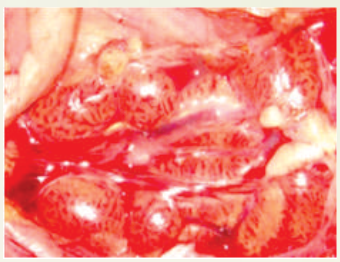

पीली गाढा बीट (IBH) का इलाज MQ: https://youtu.be/I2rWLpGvABs

इस वायरस को आग में भी नष्ट नहीं किया जा सकता है और इसलिए कीटाणुशोधन प्रभावी नहीं है।

एलोपैथी ट्रेटमेंट – मुर्गी को 1 घंटे से पहले प्यासा रखें और फिर 2 घंटे के भीतर पिने के लिए पर्याप्त पानी में प्रति 5 किलोग्राम शरीर के वजन पर 1 मिली की दर से वैरो–सेफदें। इसके बाद, मैकलिव पाउडर को 1 ग्राम प्रति 4 किलोग्राम शरीर के वजन के हिसाब में दें, अगले 2 घंटों के भीतर पिने के लिए पर्याप्त पानी में। इन पूरे 5 घंटे की अवधि के लिए फ़ीड न दें ।इसे 3–4 दिनों तक दोहराएं।

5.13 बतख प्लेग

वयस्क बतख ज्यादातर वायरस रोग से प्रभावित होते हैं। यह ऊतक रक्तस्राव और शरीर के गुहाओं में मुक्त रक्त के साथ संवहनी क्षति की विशेषता है। आंत और गिज़ार्ड की ल्यूमिना रक्त से भरी होती है। बीमारी का कोई इलाज नहीं है। मुर्गी को डक प्लेग वैक्सीन द्वारा संरक्षित किया जा सकता है, जो देश में उपलब्ध है, जो 8–12 सप्ताह की उम्र में दिया जाता है। टीकाकरण द्वारा बतख प्लेग को रोका जा सकता है, हालांकि, इन वायरल बीमारियों के लिए कोई उपचार मौजूद नहीं है और माध्यमिक संक्रमण को रोका जाना चाहिए।

6 जीवाणु रोग

6.1 इन्फ़ेक्सिअस कोरिज़ा

कोराइजा का इलाज MQ:https://youtu.be/txe××AjFx8c

यह 'मुर्गी कोरिज़ा' के रूप में भी जाना जाता है, कोरिज़ा मुर्गियों की अचानक और गंभीर श्वसन बीमारी है। चेहरे की सूजन और आंखों और नथुने से निर्वहन की विशेषता है । सबसे बड़ा आर्थिक नुकसान बढ़ते मुर्गी में खराब विकास से होता है, और अंडे के उत्पादन में एक उल्लेखनीय गिरावट आती है। सभी उम्र के मुर्गियां अतिसंवेदनशील होती हैं, लेकिन बयस्क मुर्गी को अधिक गंभीर रूप से पीड़ित होते है।

कारण

हेमोफिलस पैरागैलिनरम नामक एक नाजुक जीवाणु है । और मुर्गी के शारीर के बाहर जल्दी से मर जाता है (48 घंटे के अन्दर) ।

फैलना

1. नाक का डिस्चार्ज से, दूषित पानी पीने से संक्रमण फैल सकता है।
2. संक्रमण भी हवा से एक छोटी दूरी पर फैल सकता है ।
3. पार्श्व प्रसार सीधे संपर्क द्वारा आसानी से होता है ।

लक्षण

1. पहले लक्षण छींकने, नाक और आंखों से बलगम की तरह निर्वहन , और चेहरे पर सूजन आदि शामिल हैं।
2. गंभीर मामलों में, बंद आंखों के साथ त्वचा के नीचे तरल पदार्थ के संचय के कारण चेहरे और वाटल की सूजन चिह्नित की जाती है । सूजन वाटल्स, और सांस लेने में कठिनाई देखी जा सकती है ।
3. फ़ीड और पानी की खपत आमतौर पर कम हो जाती है। इसके परिणामस्वरूप अंडे के उत्पादन में गिरावट आती है ।

नियंत्रण

1. बेहतर प्रबंधन प्रथाओं, अच्छी स्वच्छता, और कई अलग–अलग उम्र के मुर्गी को अलग रखने से, रोग चक्र को तोड़ने में मदद मिलती है। एकसाथ, एक ही उम्र के मुर्गी को ही रखें।
2. संक्रमित मुर्गी को अलग करना आवश्यक है क्योंकि ऐसे मुर्गी जीवाणु के भंडार होते हैं। सफ़ाई और कीटाणुशोधन के बाद, घर को 2 से 3 सप्ताह तक खाली रखनी चाहिए।

एलोपैथी उपचार

1. आंख खोलने के लिए, थोड़ा गर्म सरसों का तेल लगाएं। फिर gentamycin और Betnosol 3 से 4 दिनों के लिए प्रत्येक 1 ड्रॉप दैनिक लगाएँ (दोनों मानव उपयोग के लिए होता है)। और
2. 100 मुर्गी के लिए 2 ली पानी में 5 मिली रेस्पिरॉन दबा को 2 से 3 दिनों के लिए दें। या दैनिक 2 ली पानी में 50 किलोग्राम वजन के लिए एज़िथ्रोमाइसिन 1 गोली दें, 2 से 3 दिनों के लिए।

** विभिन्न सल्फा दवाएं और एंटीबायोटिक्स कोरिज़ा रोग के इलाज में उपयोगी हैं। सल्फा दवा trimethoprim, tetracyclines, और enroflo&sacin के संयोजन का उपयोग किया जा सकता है। एरिथ्रोमाइसिन और ऑक्सीटेट्रासाइक्लिन भी आमतौर पर उपयोग किए जाने वाले एंटीबायोटिक्स हैं।

हर्बल उपचार

2 प्याज, 20 पिस लोंगपिपर, लहसुन की 10 पंखुड़ियों को पीसकर 500 मिली पानी में 10 मिनट के लिए उबालें। इसे 5 से 7 दिनों के लिए प्रतिदिन 100 मुर्गी को दें।

6.2 ई.कोलाई संक्रमण (कोलिबासिलीसीस)

ई. कोलाई संक्रमण या कोलिबासिलीसीस सबसे व्यापक रूप से प्रचलित रोग है, और आर्थिक रूप से हमारे देश में मुर्गी की सबसे घातक जीवाणु रोग है। यह एक दिन के चूजे में "योल्क साक संक्रमण" के रूप से वयस्क मुर्गी तक में "अंडे के पेरिटोनिटिस" के रूप में देखा जा सकता है। यह पूरे वर्ष में होता है। सामूहिक रूप से, ई.कोलाई के कारण होने वाले संक्रमण, किसानों को भारी आर्थिक नुकसान के लिए जिम्मेदार हैं।

कारण

एक जीवाणु जिसे एस्चेरिचिया कोलाई कहा जाता है। ई.कोलाई आमतौर पर मुर्गी के पाचन तंत्र में रहता है, लेकिन अधिकांश प्रकार बीमारी पैदा नही करते। हालांकि, कुछ उपभेदों से मुर्गी में बीमारी हो सकती है। इन बीमारियों में युवा मुर्गियों में योल्क साक संक्रमण, रक्त संक्रमण (कोलिसेप्टिसेमिया) और वयस्क मुर्गियों में अंडा पेरिटोनिटिस (पेरिटोनियम की सूजन, पेट की गुहा में एक झिल्ली) शामिल हैं। सभी स्थितियों को सामूहिक रूप से 'कोलिबेसिलोसिसरोग" कहा जाता है।

ई.कोलाई केवल तभी बीमारी का कारण बनता है जब एक गंभीर प्रबंधनीय दोष जैसा फार्म में अमोनिया गैस का संचय होता है, या माइकोप्लाज्मा जैसे कुछ अन्य अंतर्निहित रोग उत्पादक जीव मौजूद होते हैं। इस प्रकार, ई. कोलाई संक्रमण तब होता है जब मुर्गी की रोग–प्रतिरोधी शक्ति क्षतिग्रस्त या पराजित हो गया है। यह एक अवसरवादी जीवाणु है।

A. योल्क साक संक्रमण (Omphalitis) या नाभी संक्रमण या Mushy चिक्स रोग डॉ अली: https://youtu.be/6Xsqciw11ws

योल्क साक संक्रमण पहले सप्ताह के दौरान चूजों में मृत्यु दर का सबसे आम कारण है। अंडों का मल द्वारा संक्रमित होना इस का सबसे महत्वपूर्ण स्त्रोत है। बैक्टीरिया अंडा का शेल में प्रवेश करने के बाद हैचिंग अंडे में बैक्टीरिया बढ़ सकते हैं। अन्य स्त्रोत अंडाशय का संक्रमण और ओविडक्ट की सूजन हो सकते हैं। हैचिंग के तुरंत बाद संक्रमण की घटनाएं बढ़ जाती हैं और लगभग 6 दिनों के बाद कम हो जाती हैं। ई. कोलाई क्षतिग्रस्त नाभि के माध्यम से प्रवेश करता है। चूजों की जर्दी/योल्क, संक्रमण की जगह है। योल्क साक संक्रमण जीवन के पहले सप्ताह के दौरान चूजों में 100% तक मृत्यु दर का कारण बन सकता है, लेकिन मृत्यु आमतौर पर 5 से 10% के बीच होती है।

लक्षण

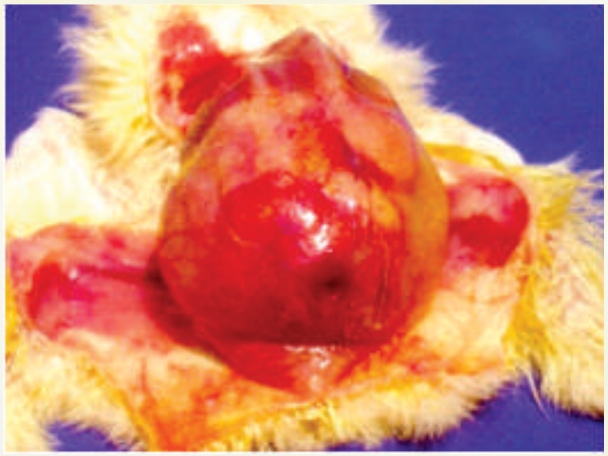

प्रभावित चूजों के पेट में सूजन होती है, वे उदास होते हैं, खड़े रहते हैं और एक साथ भीड़ करने की प्रवृत्ति दिखाते हैं।

पोस्टमॉर्टम निष्कर्ष

योल्क साक रक्त वाहिकाओं को फैलाकर रक्त से भर देता है। फेफड़े जमाबट वाले होते हैं और यकृत और गुर्दे कालेरंग और सूजे हुए होते हैं। एक सूजन unabsorbed जर्दी जो असामान्य रंग और आकार में पाया जाता है। यह आमतौर पर बहुत बदबूदार होता है। आंत की सतह पर पेरिटोनिटिस और रक्तस्राव सबसे आम हैं।

उपचार :

100 चूजों : कोलिस्टिन दबा को दिनभर पिने बाले पानी (1 ग्राम प्रति लीटर पानी) में मिलाकर, 2 से 3 दिनों के लिए दें।

B. रक्त संक्रमण (Colisepticaemia)

रक्त संक्रमण युवा मुर्गियों में सबसे आम है, और ई .कोलाई संक्रमण का एक बहुत ही गंभीर रूप है।

संक्रमण के स्रोत और कारण :

a. श्वसन पथ के माध्यम से दूषित धूल, यह सबसे महत्वपूर्ण संक्रमण का स्रोत है। ई कोलाई धूल भरी परिस्थितियों में मुर्गी के शरीर के बाहर लंबे समय तक बनी रहती है। दूषित पेयजल और आहार के अंतर्ग्रहण के माध्यम से।

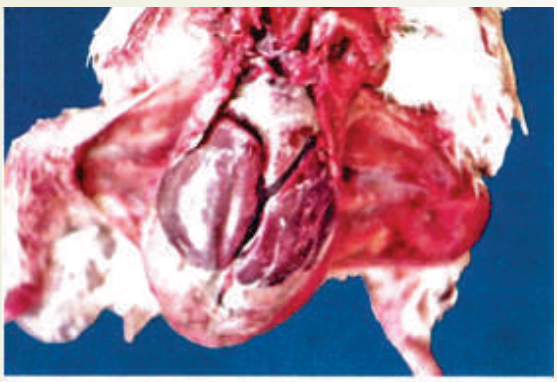

b. ई .कोलाई बिछाबन और मल पदार्थ में पाया जा सकता है। कम जगह पर ज्यादा मुर्गी ठहरना, खराब वेंटिलेशन, बिछाबन में गन्दगी की स्थिति, अमोनिया गैस का बनना से संपर्क में आना अदि

c. तापमान चरम सीमाओं (बहुत गर्म या बहुत ठंडा), तनाव आदि

d. इम्यूनोसप्रेशन : कुछ कारक इम्यूनोसप्रेशन का कारण बनते हैं। वे प्राकृतिक प्रतिरक्षा प्रणाली को दबाते हैं। इसलिए मुर्गी ई .कोलाई से लड़ने में असमर्थ होता है और संक्रमण के कारण दम तोड़ देता है। उदाहरण के लिए, वायरल संक्रमण और विषाक्त पदार्थ जैसे कि मायकोटॉक्सिन, इम्यूनोसप्रेशन का कारण बनते हैं और मुर्गी को कोलीबैसिलोसिस के लिए उकसाया करते हैं।

E. coli infection (Colisepticaemia) in another 30-day-old broiler chicken. A thick layer of white fibrin covers heart and liver. This is characteristic of *E. coli* infection.

पोस्टमॉर्टम निष्कर्ष

1. सफेद/पिला पोलिथिनजैसा की एक परत/शीट, दिल (पेरिकार्डिटिस) और कलेजी को ढक देती है। यह ई .कोलाई द्वारा रक्त संक्रमण रोग की विशेषता है। यह आंत गाउट रोग (जहां सफेद चॉक पाउडर कोटिंग/छिडकाब) जैसा दीखता है और कुछ समय के लिए भ्रमित कर सकता है।
2. संक्रमित एयर–साक में आमतौर पर गाढ़ा और पनीर की तरह सामग्री होते हैं।

C. एग पेरिटोनिटिस

एग पेरिटोनिटिस उदर गुहा में एक टूटे हुए अंडे की उपस्थिति के कारण पेरिटोनियम की सूजन है । पोस्टमॉर्टम निष्कर्षों में पेट की गुहा में गाढ़ी जर्दी, पनीर जैसी सामग्री, या दूधिया तरल पदार्थ के बिखरे हुए टुकड़ों की उपस्थिति शामिल है । अंडाशय और ओविडक्ट की सूजन भी होती है। एक पूर्ण, या आंशिक रूप से गठित अंडा, ओविडक्ट में अटका पाया जा सकता है।

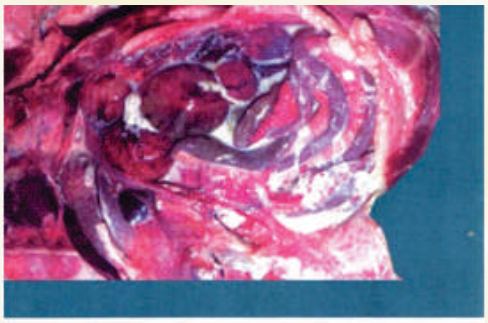

Egg peritonitis in a hen. Note the presence of whitish-pale yolk in the abdominal cavity. Almost always egg peritonitis is caused by *E. coli* infection.

एग बाउंड कंडीसन रोग https://youtu.be/6t&EYxEw96c

यह एक ऐसी स्थिति है जिसमें एक अंडा क्लोआका/ ओविडक्ट में अटक जाता है, और निकलता नहीं है। क्लोआका, मुर्गी में, आहार पथ के अंत में एक आम कक्ष है जिसमें पाचन, मूत्र और प्रजनन पथ खुलते हैं।

Egg-bound condition in a 65-week-old layer chicken. Note that egg is lodged in the oviduct/cloaca, but could not be laid (arrow).

कारण

1. ओविडक्ट की सूजन या ओविडक्ट की मांसपेशियों के आंशिक पक्षाघात
2. एक अंडे का आकार इतना बड़ा है कि यह निकलना असंभव है ।

नियंत्रण

1. प्रबंधन और स्वच्छता के उच्चतम मानकों को बनाए रखना।
2. भीड़ से बचें ।
3. सूखी, धूल भरी स्थिति से बचें ।
4. मुर्गी घर में पर्याप्त वेंटिलेशन प्रदान करें ।
5. अमोनिया गैस के निर्माण से बचें.
6. उचित बिछाबन की स्थिति बनाए रखने.
7. तापमान, गर्मी या ठंड की चरम सीमाओं के खिलाफमुर्गी की रक्षा करें।
8. स्वच्छ जल की आपूर्ति सुनिश्चित करें। वॉटर सैनिटाइजर का भी इस्तेमाल करें।
9. योल्क साक संक्रमण और प्रारंभिक चिक्स मृत्यु दर को रोकने के लिए, सबसे अच्छा ब्रूडिंग करें।
10. खनिज की कमी और कुपोषण से बचने के लिए अच्छी तरह से संतुलित आहार प्रदान करें। उच्च प्रोटीन, विटामिन–ए, विटामिन–ई, विटामिन–सी और जिंक की आपूर्ति सुनिश्चित करें।
11 चूजों को दिए गए पहले पीने के पानी में प्रोबायोटिक प्रदान करें और कम से कम एक सप्ताह के लिए इसका उपयोग करना जारी रखें।

एलोपैथी उपचार (उपरोक्त सभी तीन प्रकार रोगों के लिए)

MQ-https://www.youtube.com/watch?v=qqMNozRARmw

1. क्योंकि अधिकांश ई कोलाई संक्रमण गंदे परिवेश और विभिन्न पर्यावरणीय तनावों के साथ शुरू होते हैं, इसलिए एक पूर्ण स्वच्छता होना चाहिए । और,
2. प्रति किलो शरीर का वजन : कोलिस–वी 2.5 मिलिग्राम या रेस्ट्रिक्ट–एल/वेनफ्लक्स/एनरोसिन आदि 100 मिलिग्राम। इसे 2 घंटे में सेवन करने के लिए पर्याप्त पानी के साथ मिलाएं। इसे 5 दिनों के लिए दें।
3. यदि घर का बना फ़ीड खिलाते हैं, तो कोलिडॉक्स पाउडर 2.5 ग्राम प्रति किलो फ़ीड मिलाएं। इस औषधीय फ़ीड को केवल 7 दिनों के लिए जारी रखें। इसके अलावा, सेफ–गार्ड या एक्वा–मैक्स 1मिली प्रति 10 ली पानी में मिलाएं और 5 दिनों के लिए 24 घंटे जारी रखें । या 20 ली पीने के पानी में 1 ग्राम फिटकिरी डालें ।

** ब्रॉड–स्पेक्ट्रम एंटीबायोटिक्स (क्लोरामफेनिकोल, क्लोरटेट्रासाइक्लिन, नियोमाइसिन, नाइट्रोफ्यूरान, जेंटामाइसिन, ऑक्सीटेट्रासाइक्लिन, एनरोफ्लॉक्सासिन आदि) इस के इलाज में सहायक हो सकते हैं।

6 .3 पुलोरम रोग या साल्मोनेलोसिस

डॉ जैद यासीन https://youtu.be/3iB021hZnYY

लक्षण

1. पुलोरम रोग मुख्य रूप से 3 सप्ताह से कम उम्र के चूजों में देखा जाता है ।पहला संकेत, आमतौर पर बड़ी संख्या में नबजात चूजों का होता है, और हैचिंग के तुरंत बाद मौत हो जाती है ।
2. एक छोटी सी जगह में चूजों एक साथ गर्मी स्त्रोत के पास भीड़ करने की प्रवृत्ति के साथ अवसाद दिखाते है ।
3. श्वसन समस्या, भूख की कमी और सफेद मोटी और चिपचिपा मल जो मलद्वार के चारों तरफ चिपक के रहती हैं।यही है, सफेद बेसिलरी दस्त।चूजे कठिनाई के साथ सांस लेते हैं और मृत्यु जल्द होती है।सबसे ज्यादा मृत्यु दर आमतौर पर दूसरे और तीसरे सप्ताह के दौरान होती है ।
4. बयस्क मुर्गी उदास और बिखराहुआ पंखों के साथ पीला सिकुड़ा हुआ चूल दिखाई देता है । कम अंडे का उत्पादन बीमारी का और एक लक्षण हो सकता ।हालांकि, वयस्क मुर्गी में यह रोग का बाहक हो सकता है परन्तु रोग दिखाई नहीं देती है । .

फैलना

1. पुलोरम रोग एक अत्यधिक संक्रामक, अंडे से संचरित रोग है ।यह मुख्य रूप से मुर्गियों का एक रक्त संक्रमण है ।
2. प्रभावित मुर्गी अपने मल के माध्यम से यह रोग फैलने का प्रमुख तरीका है।
4. दूषित फ़ीड, पानी और बिछाबन भी संक्रमण का एक स्त्रोत हो सकता है ।

पोस्टमॉर्टम निष्कर्ष

1. चूजों में एक सूजन, अवशोषित योल्क साक हो सकती है।फेफड़े जमाबट वाले हो सकते हैं और जिगर/कलेजी काले रंग हो सकते हैं और सतह पर दिखाई देने वाले रक्तस्राव के साथ सूजन हो सकती है ।

Pullorum disease in a chicken. Note liver is enlarged, congested, and shows small necrotic foci (minute white spots). Such necrotic foci are highly suggestive of pullorum disease.

2. चूजों 1 या 2 दिनों के लिए लक्षण दिखाने के बाद मर जाते हैं caeca की सूजन दिखाते हैं।caeca बढ़े हुए हैं और कठोर, सूखी, परिगलित के साथ फुला हुआ पाए जाते हैं।

3. कुछ संक्रमित वयस्क मुर्गियों में अंडाशय निष्क्रिय होता है, ओवा छोटा, पीला और अविकसित होता है।

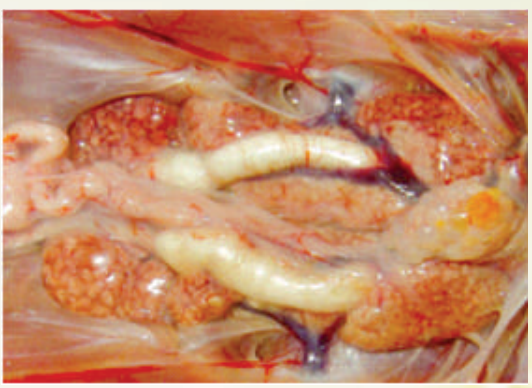

पुलोरम रोग का अलग पहचान :

पुलोरम रोग को अन्य साल्मोनेलोसेस रोग, ई. कोलाई संक्रमण, एस्परजिलस जो समान फुफ्फुसीय घावों का उत्पादन करता है से अलग किया जाना चाहिए ।कभी–कभी, फुफ्फुसीय नोड्स मारेक्स की बीमारी में ट्यूमर से मिलते–जुलते हैं।

उपचार

एंटीबायोटिक दवाओं की प्रयोग से मृत्यु दर को कम कर सकते है ।

6.4 फाउल टाइफाइड

मुर्गी टाइफाइड एक तीव्र या पुरानी सेप्टिसेमिक बीमारी है जो मुख्य रूप से वयस्क मुर्गियों और टर्की को प्रभावित करती है ।

प्रकोप आमतौर पर चारा की खपत और अंडे के उत्पादन में तेज गिरावट के साथ शुरू होता है। निषेचन (फर्तिलैजासन) और हैचबिलिटी दर काफी कम हो जाती है ।बलगम योक्त– पीले पतला दस्त प्रकट होता है। टाइफाइड संक्रमित मुर्गियों का अंडे से निकलने वाली चूजों में से लगभग 1/3 मर जाती हैं। वयस्क मुर्गी में जिगर/कलेजी का बढ़ा हुआ और कांस्य हरा रंग होना लक्षण है ।

पुलोरम रोग के विपरीत, मुर्गी टाइफाइड महीनों तक रहता है।

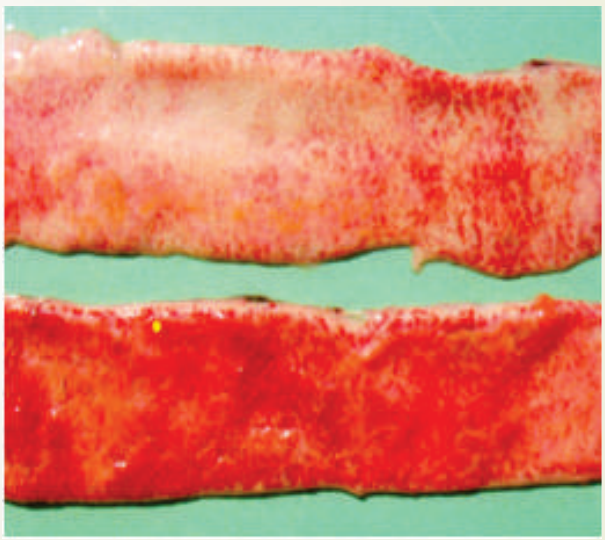

प्लीहा 2–3 गुना बड़ा होता है, कभी–कभी सतह पर भूरे–सफेद नोड्यूल्स पाया जाते है।

बैक्टीरिया साल्मोनेला gallinarum है ।

उपचार

एंटीबायोटिक दवाओं की प्रयोग से मृत्यु दर को कम कर सकते है ।

6.5 फाउल कलेरा (हैजा).

डॉ जैद यासीन https://youtu.be/55pEXjui0o4

यह मुर्गियों का एक सेप्टीसीमिक (रक्त संक्रमण) रोग है। अपने सबसे कठोर रूप में, फ़ाउल कलेरा सबसे हानिकारक और अत्यधिक संक्रामक बीमारियों में से एक है जो भारी मृत्यु करता है।

कारण

पाश्चरेला मुल्टोसिडा नामक एक जीवाणु है ।

फैलना

1. एक झुंड के भीतर पाश्चरेला मुल्टोसिडा का प्रसार मुख्य रूप से मुंह, नाक, और रोगग्रस्त मुर्गी के conjunctiva से उत्सर्जन द्वारा होता है ।ये उत्सर्जन उनके पर्यावरण, विशेष रूप से फ़ीड और पानी को दूषित करते हैं ।
2. रोग अंडे से संचरित नहीं है।

लक्षण

1. यह रोग कई रूपों में होता है। सबसे तीव्र रूप में, कोई पूर्ववर्ती लक्षण नहीं हैं और अच्छी शारीरिक स्थिति में झुंड में बड़ी संख्या में मुर्गी मृत पाए जाते हैं ।12 से 18 सप्ताह की उम्र के बीच के मुर्गी सबसे अधिक संवेदनशील होते हैं।
2. कम गंभीर रूप में, अवसाद, भूख की कमी, मुख से बलगम के निर्वहन, बिखराहुआ पंख, चूल और वाटल्स के नीले रंग, और बदबूदार हरे रंग के दस्त देखा जा सकता है।
3. चिरकालिक रूप मुर्गी में देखा जाता है जो गंभीर बीमारी से बच जाते हैं।लक्षण आमतौर पर स्थानीयकृत संक्रमण के कारण होते हैं।लक्षणों में अवसाद, जोर से साँस लेना, और बाद में लंगड़ापन, गर्दन को एक तरफघुमाना, गठिया और वाटल्स की सूजन हैं ।

नियंत्रण

संक्रमण का मुख्य स्रोत बीमार मुर्गी है, या जो ठीक हो गए हैं लेकिन अभी भी जिबाणु बाहक होते हैं। इसलिए सभी मुर्गी का मार देना और इमारतों को अच्छी तरह से कीटाणुरहित करने के साथ अच्छा प्रबंधन, स्वच्छता पर जोर मुर्गियों के हैजा को रोकने का सबसे अच्छा साधन हैं।

उपचार :

1. फ़ाउल कलेरा का सबसे तीव्र रूप इतना तेज है कि उपचार शायद ही कभी काम का होता है।
2. कम गंभीर रूप में, दवाओं में सल्फ़ोनामाइड्स और एंटीबायोटिक्स (पेनिसिलिन, स्ट्रेप्टोमाइसिन, ऑक्सीटेट्रासाइक्लिन, क्लोरटेट्रासाइक्लिन और एरिथ्रोमाइसिन) का सफ़लतापूर्वक उपयोग किया गया है।

6.6 डक कलेरा (बतख हैजा):

यह एक संक्रामक रोग है, जो चार सप्ताह से अधिक उम्र के बतख में जीवाणु जीव पास्चुरीला मुल्टोकोडा के कारण होता है। भूख न लगना, शरीर का तापमान अधिक होना, प्यास, दस्त और अचानक मृत्यु हो जाती है। सबसे आम घावों पेरिकार्डिटिस, गठिया, पेटेचियल और त्वचा के नीचे रक्तस्राव अदि हैं ।जिगर/कलेजी और तिल्ली बढ़े हुए हैं ।

उपचार :

सल्फ़ा दवाएं और टीकाकरण बीमारियों को नियंत्रित कर सकते हैं। बत्तख हैजा के टीके लगाएं, पहले 4 सप्ताह की उम्र में और फिर 18 सप्ताह में ।एनरोसिन या सल्फ़ा मेज़ाथिन से उपचार पीने के पानी में 7 दिनों के लिए करें (5ली पानी में 30 से 60 मिली सल्फ़ा क्विनोक्सालिन या एरिथ्रोमाइसिन या राबाट्रान ग्रैनुल्स या नियोडॉक्स–फ़ोर्ट या मोर्टिन वेट) से उपचार पशु चिकित्सक के दिशानिर्देशों के तहत किया जा सकता है।

6 .7 स्टेफिलोकोकोसिस

यह एस .ऑरियस जीवाणु के कारण होता है। विभिन्न प्रकार की संक्रमण यह पैदा करती है । इनमें से महत्वपूर्ण स्थितियों में योल्क साक संक्रमण, गैंग्रेनस डर्मेटाइटिस, बंबल फुट और स्टैफिलोकोकल सेप्टिसेमिया (यानी, रक्त संक्रमण) शामिल हैं।

फैलना

1. संक्रमण होने के लिए, त्वचा या श्लेष्मा झिल्ली को चोट आवश्यक है ।
2. नए हैच किए गए चूजों में, खुली नाभि की सूजन (ओम्फेलाइटिस) बैक्टीरिया प्रवेश का एक मार्ग प्रदान करती है ।

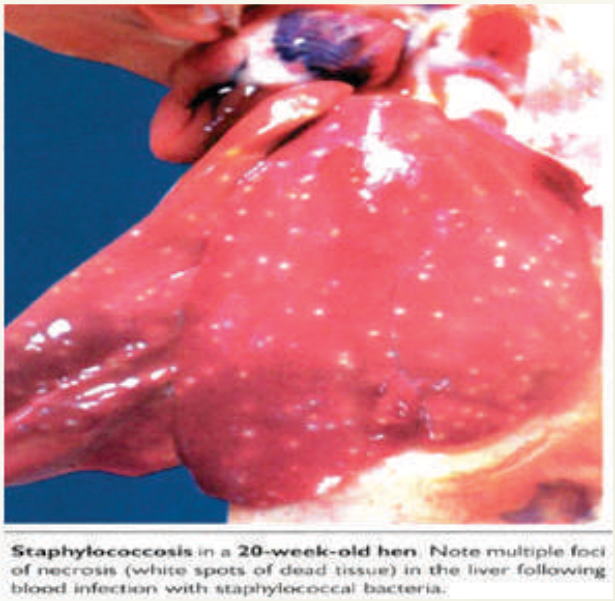

Staphylococcosis in a **20-week-old hen**. Note multiple foci of necrosis (white spots of dead tissue) in the liver following blood infection with staphylococcal bacteria.

लक्षण

शुरुआती लक्षणों में बिखराहुआ पंख, एक पैर पर लंगड़ाना, एक या दोनों पंखों के नीचे लटकना और बुखार शामिल हैं। इसके बाद गंभीर अवसाद और मृत्यु हो सकती है।

पोस्टमॉर्टम निष्कर्ष

योल्क साक संक्रमण, गैंग्रीनस डर्मेटाइटिस और पैर में सूजन/फोड़ा/घाव के पोस्टमॉर्टम निष्कर्षों को अन्य स्थानों पर वर्णित किया गया है। स्टैफिलोकोकल सेप्टिसीमिया के मामले में पोस्टमॉर्टममें कलेजी, प्लीहा और हृदय में सफेद धब्बे की उपस्थिति शामिल है ।

नियंत्रण

क्योंकि घाव शरीर में एस .ऑरियस बैक्टीरिया प्रवेश का एक मार्ग है, चोट की संभावना को कम करने वाली किसी भी चीज से संक्रमण को रोकने में मदद मिलेगी।

उपचार

उपचार के लिए उपयोग की जाने वाली दवाओं में पेनिसिलिन, टेट्रासाइक्लिन, स्ट्रेप्टोमाइसिन, एरिथ्रोमाइसिन, लिंकोमाइसिन और सल्फोनामाइड्स शामिल हैं।

6 .8 बम्बल फुट

बम्बल फुट पैर में एक फोड़ा है, जो बयस्क मुर्गियों में एक आम संक्रमण है। बम्बल फुट स्टैफिलोकोकल बैक्टीरिया के कारण होता है। पैर के नीचे की सतह पहले प्रभावित होती है, और घाव पूरे पैर के बड़े पैमाने पर सूजन की ओर जाता है, और लंगड़ापन का कारण बनता है.

हर्बल उपचार :

2 भाग एलोवेरा का रस 1 भाग हल्दी पाउडर के साथ मिलाएं । एक पेस्ट बनाएं और लागू करें।

6.9 नेक्रोटिक एंटराइटिस (एन.ई.)

डॉ जैद यासीन https://youtu.be/HPu149fz0wE

नेक्रोटिक एंटराइटिस मुर्गीके आंत्र पथ का एक जीवाणु रोग है । यह एक महत्वपूर्ण बीमारी है, और आमतौर पर 4 सप्ताह या उससे अधिक उम्र के मुर्गी में देखी जाती है। 25 सप्ताह की उम्र में मुर्गियां भी आमतौर पर प्रभावित होती हैं, जो आमतौर पर कोकिडियोसिस से जुड़ा होता है। यह काफी आम बीमारी है।

कारण

नेक्रोटिक एंटराइटिस एक जीवाणु के विकास के कारण होता है जिसे क्लोस्ट्रीडियम परफ्रिंजेन्स (प्रकार–ए और सी) कहा जाता है। पहले यह बड़ी आंत में बिकषित होता है, बाद में, यह जीव छोटी आंत में स्थानांतरित हो जाता है जहां यह विषाक्त पदार्थों का उत्पादन करता है।

कारक

1. कक्सिडीओसिस के प्रकोप, विशेष रूप से हल्के और **subclinical**.
2. अघुलनशील ग्रिट के प्रावधान के बिना अनाज खाना इस का कारण बनते हैं ।
3. फ़ीड घटकों में तेजी से परिवर्तन.

हालांकि, नेक्रोटिक एंटराइटिस का सबसे महत्वपूर्ण कारण, कक्सिडीओसिस प्रतीत होता है। इसलिए, नेक्रोटिक एंटराइटिस के हर प्रकोप की कोकिडिओसिस के लिए जांच की जानी चाहिए, और यदि मौजूद हो, तो इसका इलाज किया जाना चाहिए। इसी तरह, कक्सिडीओसिस के हर प्रकोप में, नेक्रोटिक एंटराइटिस को खारिज कर दिया जाना चाहिए, और यदि मौजूद है, तो इसका इलाज किया जाना चाहिए।

लक्षण

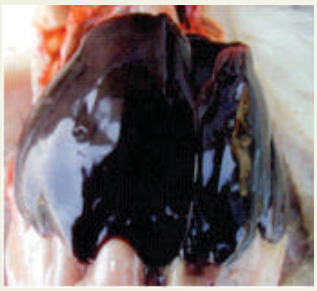

1. कोई लक्षण नहीं हो सकता है। क्लिनिकल लक्षण बहुत कम है, और अक्सर, मुर्गी को मृत पाया जाता है।
2. मुर्गी अवसाद, भूख की कमी, दस्त, बिखराहुआ पंख, और बढ़ती मृत्यु दर दिखा सकते हैं ।

पोस्टमॉर्टम निष्कर्ष

1. पोस्टमॉर्टम निष्कर्ष आमतौर पर छोटी आंत के मध्य भाग तक ही सीमित होते हैं। आंत को विघटित करने से एक बदबूदार भूरे रंग के तरल पदार्थ से भरा पाया जाता है। 2. तीव्र मामलों में, जिगर/कलेजी में काले रंग की उपस्थिति पे जाते हैं ।

3. बीमारी अचानक शुरू होती है, मृत्यु दर में तेज वृद्धि के साथ। एक मजबूत निर्जलीकरण पाया जाता है। मांसपेशियों पर त्वचा चिपक जाता है ।

नियंत्रण

1. कारक की पहचान करें और कक्सिडीओसिस और गम्बोरो रोग पर विशेष ध्यान दें।
2. प्रोबायोटिक्स नेक्रोटिक एंटराइटिस की गंभीरता को कम करते हैं ।

उपचार

पीने के पानी में दिए गए कई एंटीबायोटिक्स (एमोक्सिसिलिन, एम्पीसिलिन, क्लोरैम्फेनिकोल, सिप्रोफ्लोक्सासिन, डॉक्सीसाइक्लिन, नियोमाइसिन, एरिथ्रोमाइसिन, फ्यूराज़ोलिडोन), इलाज में सहायक हो सकते हैं।

6 .10 बोटुलिज़्म या लिम्बर नेक

यह क्लोस्ट्रीडियम बोटुलिनम के विषाक्त पदार्थों के कारण होने वाला एक बैक्टीरिया रोग है ।
यह युवा और वयस्क बतख दोनों में एक गंभीर समस्या है। यह बैक्टीरिया के अंतर्ग्रहण के कारण होता है जो सड़ने वाले पौधों पर बढ़ता है। सड़ने वाले पौधे की सामग्री पर बतख को खिलने से बचें।

लक्षण :

पैरों, पंखों, गर्दन और पलकों के फ्लैक्सिड पैरेसिस को देखा जाता है। पैरेसिस तेजी से पक्षाघात की ओर बढ़ता है और मुर्गी गर्दन और सिर के साथ एक गहरे कोमा में गिर जाते हैं।

उपचार :

सेलेनियम, विटामिन ए डी और ई के साथ–साथ कुछ एंटीबायोटिक दवाओं के साथ क्लोरटेट्रासाइक्लिन, बेसिट्रासिन आदि के साथ उपचार मृत्यु दर को कम कर सकता है।

6 .11 गैंगरेनस डर्मेटाइटिस की सूजन

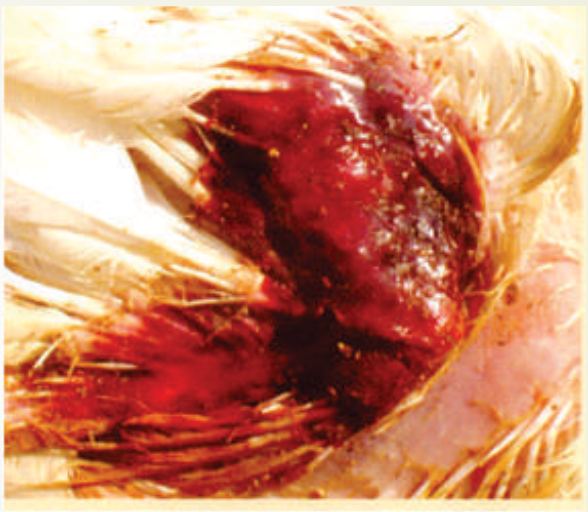

यह काफी आम बीमारी है। "विंग रॉट" के रूप में भी जाना जाता है ।इसकी घटना गर्म, आर्द्र परिस्थितियों में अधिक आम है।

कारण

1. बैक्टीरिया (clostridia, staphylococc और ई .कोलाई), या तो अकेले या एक साथ शामिल होकर संक्रमण को गंभीर करते हैं।
2. गैंगरेनस डर्मेटाइटिस की सूजन उन बीमारियों की उपस्थिति में होने की अधिक संभावना है जो इम्यूनोसप्रेशन करते हैं, जैसे कि गम्बोरो रोग।
3. अन्य कारकों अस्वास्थ्यकर प्रबंध, भीड़ भाड़, मायकोटॉक्सिन, वायरस आदि

पोस्टमॉर्टम निष्कर्ष

1. त्वचा और पंखों के नी, जांघों के बीच, और पसलियों, आमतौर पर पंखों से रहित जगह होते हैंऔर बदबूदार गंध होती है
2. गहरे लाल और सूजन पैरों पर पाए जाते हैं, और कभी–कभी त्वचा के नीचे एक रक्त–रंग का पानी का तरल पदार्थ होता है।

नियंत्रण

1. प्रबंधन में स्वच्छता के अच्छे मानकों को बनाए रखें। बिछाबन की स्थिति में सुधार, नमी और जीवाणु को कम करें । फ़ीड, पानी और बिछाबन का प्रबंधन बहुत महत्वपूर्ण है।
2. गम्बोरो रोग के खिलाफ मुर्गी की रक्षा करें ।

उपचार

1. कोई भी उपचार पूरी तरह से सफल साबित नहीं हुआ है। यह ऊतक परिवर्तन की प्रकृति के कारण है। मृत ऊतक का इलाज नहीं किया जा सकता है। इसके अलावा, कई प्रकार के कारण बीमारी के उत्पादन में शामिल होते हैं।
2. हालांकि, पेनिसिलिन, टेट्रासाइक्लिन, क्लोरटेट्रासाइक्लिन, ऑक्सीटेट्रासाइक्लिन, एरिथ्रोमाइसिन, या बेसिट्रासिन पीने के पानी में दिया जाता है। नहीं तो,
3. इंजेक्शन Gentamicin रोग को नियंत्रित करने में सहायक साबित हुए हैं। लेकिन यह एंटीबायोटिक गुर्दे के लिए बहुत हानिकारक भी हो सकता है ।

6 .12 अल्सरेटिव एंटराइटिस (यू.ई.), जिसे बटेर रोग के रूप में भी जाना जाता है

यह आंतों के म्यूकोसा और जिगर/कलेजी और प्लीहा में घावों करने की विशेषता है। क्लिनिकल लक्षण में सामान्य अस्वस्थता, बिखराहुआ पंख, दस्त और एनीमिया शामिल हैं। कई मामलों में, बीमारी अचानक मृत्यु के साथ ख़त्म होती है।

यू.ई. रोग युवा मुर्गी को अधिक बार संक्रमित किया जाता है, हालांकि यह बीमारी वयस्क बटेर के बीच भी आम है।

7 विटामिन की कमी

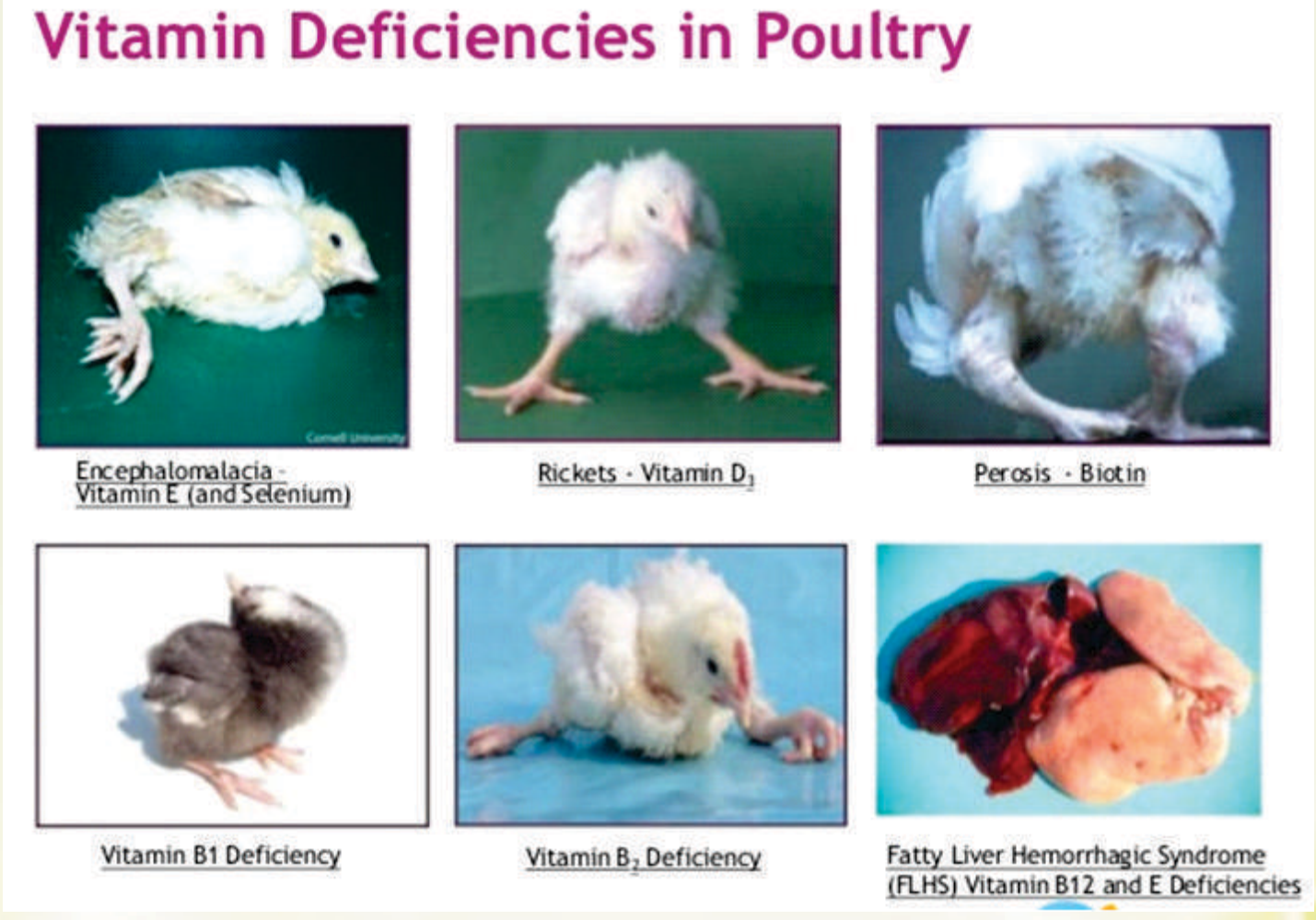

7.1 विटामिन "ए" की कमी

विटामिन–ए; विकास, अच्छी दृष्टि, और श्लेष्मा झिल्ली की अखंडता के लिए मुर्गी आहार में आवश्यक है। श्लेष्म झिल्ली, पाचन, श्वसन, मूत्र और जननांग प्रणालियों के आंतरिक स्तर हैं जिनमें परिवर्तन होता है विटामिन–ए की कमी ज्यादातर देखी जाती है। पोषण की दृष्टि से, विटामिन–ए सबसे अधिक चुनौतीपूर्ण है, क्योंकि यह सबसे अधिक मुर्गी में कमी होने की संभावना है. ज्यादातर मामलों में, यह युवा में देखा जाता है।

कमी के कारण

1. विटामिन–ए की कमी के साथ हाल ही में हैच की गई मुर्गियों में, एक चिपचिपा एक्सूडेट्स के साथ पलकों की सूजन और आसंजन देखा जा सकता है।
2. रोग, उदाहरण के लिए, कक्सिडीओसिस, कृमि संक्रमण अदि

कमी के लक्षण

चूजों में, लक्षणों में भूख की कमी, खराब विकास, बिखराहुआ पंख, नींद और कमजोरी शामिल हैं। अपर्याप्त एंटीबॉडी उत्पादन के कारण, कमी वाले चूजों को संक्रमण के लिए अतिसंवेदनशील होता है। वयस्क मुर्गियों में, विटामिन–ए की कमी पहले अन्नप्रणाली में दिखाई देते हैं।

उपचार

1. फ़ीड में स्थिर विटामिन–ए तैयारी का उपयोग करें।

कमी का इलाज

विटामिन–ए दें।

7.2 विटामिन बी–1 (थायमिन) की कमी

मुर्गी में, विटामिन बी–1(थायमिन) की कमी क्लिनिकल लक्षण रूप से और रूपात्मक रूप से अंगों और मांसपेशियों के पक्षाघात के साथ प्रकट होती है, जो पैर की उंगलियों के फ्लेक्सर्स से शुरू होती है और पैरों, पंखों और गर्दन के एक्सटेंसर की ओर बढ़ती है। मुर्गियों को फ्लेक्स किए गए पैरों के साथ एक विशिष्ट मुद्रा प्राप्त होती है और सिर ऊपर तरफखींचलिया जाता है (स्टार गज़िंग)। चूंकि बी–1 की कमी गंभीर खाद्य अनाग्रह का कारण बनती है, इसलिए पीने के पानी में विटामिन बी–1(थायमिन) देने की सलाह दी जाती है।

7.3 विटामिन बी–2 की कमी

विटामिन बी–2 (राइबोफ्लेविन) की कमी से नसों में परिवर्तनों होना विशेषता है।
विशिष्ट क्लिनिकल लक्षण पक्षाघात (10 से 12 दिनों की उम्र) के कारण पैर की उंगलियों घुम जाता है। शुरुआत में, पैर की उंगलियों थोड़ा टेढ़ी होता है और मुर्गियां अपने पिछवाड़े पर खड़ी होती हैं। मध्यम मामलों में, एक पैर की कमजोरी और पैर की अंगुली का लचीलापन देखा जाता है।
गंभीर मामलों में, पैर की उंगलियों को पूरी तरह से नीचे और अंदर की ओर घुम जाता है और पैरों की पूरी कमजोरी मौजूद होती है। पानी में घुलनशील विटामिन, जो आसानी से उपयोग किए जाते हैं, की सिफारिश की जाती है।

7.4 विटामिन "ई" की कमी (क्रेजी चिक्स बीमारी)

विटामिन–ई का सबसे महत्वपूर्ण कार्य यह है कि यह एक एंटीऑक्सिडेंट के रूप में कार्य करता है। एक एंटीऑक्सिडेंट एक ऐसी चीज है जिसे हवा में ऑक्सीजन की गिरावट को रोकने या देरी करने के लिए मदत करता है। विटामिन–ई को प्राकृतिक रूप से होने वाला एंटीऑक्सिडेंट कहा जा सकता है। इसके अलावा, विटामिन–ई मांसपेशियों और जिगर/कलेजी में अपक्षयी परिवर्तनों को रोकता है ।

कमी के लक्षण : विटामिन–ई की कमी 2 रोग की स्थिति को जन्म देती है।
इनमें शामिल हैं: 1. एन्सेफ्लोमालेसिया (क्रेजी चिक्स रोग) https://222.4outube.com/ watch?1=uS2k&ygJELA

यह एक तंत्रिका विकार है। यह अक्सर 2 से 3 सप्ताह की उम्र के बीच मुर्गी में देखा जाता है। लक्षणों में मांसपेशियों की कमजोरी, लगातार गिरने के साथ मांसपेशियों में असंगठितता, तेजी से संकुचन और पैरों की पक्षाघात, और मृत्यु शामिल हैं। । सामान्य उपचार पीने के पानी के माध्यम से विटामिन–ई दें ।

8 मेटाबोलिक (चयापचय/मेटाबोलिक) संबंधी विकार

8.1 रिकेट्स

यह एक ऐसी स्थिति है, जिसमें हड्डियों में अपर्याप्त खनिजों की मात्रा होता है, अर्थात् कैल्शियम और फास्फोरस। इसके परिणामस्वरूप हड्डी के आकार और संरचना की असामान्यताएं होती हैं। रिकेट्स हड्डी के लचीलेपन और विकृति में वृद्धि का कारण बनता है, जिसके परिणामस्वरूप लंगड़ापन होता है। यह आमतौर पर तेजी से बढ़ते युवा चूजों में देखा जाता है। चार सप्ताह से कम उम्र के मुर्गी सबसे अधिक संवेदनशील होते हैं, लेकिन यह स्थिति किसी भी उम्र में हो सकती है।

Rickets. 7-day-old chick suffering from calcium deficiency. The chick was lame and unable to stand.

कारण

1. कैल्शियम, फास्फोरस और / या विटामिन डी–3 की कमी, या असंतुलन।

लक्षण

1. प्रभावित मुर्गियों का ख़राब विकास, मांसपेशियों के असमन्वय, जकडन पैर और प्रगतिशील लंगड़ापनलक्षण दिखाते हैं। मुर्गियों को खाने में कैल्शियम की कमी प्रारंभिक संकेत पतले या नरम खोल वाले अंडे।
2. युवा चूजों में चोंच और पैर की हड्डियां नरम और लचीली होती हैं ।

Rickets in an 11-week-old grower chicken. Note that the leg bone is rubbery and easily bent.

पोस्टमॉर्टम निष्कर्ष

1. हड्डियों एक अचानक तेज ध्वनि के साथ न टूटना, क्योंकि वे नरम और खनिज की कमी से से कमजोर हो जाते हैं ।
2. पैर मुड़े हुए होते हैं ।

उपचार

1. पीने के पानी के माध्यम से 2–3 बार खुराक में विटामिन डी–3 दें ।और
2. संतुलित और ठीक से मिश्रित कैल्शियम और फास्फोरस खनिज दें ।

8 .2 पेरोसिस (मैंगनीज की कमी):

पेरोसिस युवा मुर्गियों, टर्की, बटेर आदि में पैर की हड्डियों का विरूपण (लंबी हड्डियों के मंद वृद्धि) आदि इस की विशेषता है । कारण: आहार में मैंगनीज या निम्नलिखित विटामिनों में से कुछ की कमी होती है: कोलीन, nicotic एसिड, pyridoxine, biotin या फोलिक एसिड आदि।
उपचार: फ़ीड में खनिज मिश्रण प्रदान करें।

8 .3 फैटी लीवर सिंड्रोम

फैटी लीवर रक्तस्रावी सिंड्रोम (FLHS) एक चयापचय/मेटाबोलिक विकार है जो एक बहुत ही फैटी जिगर/कलेजी की विशेषता है, रक्तस्राव के साथ। यह स्थिति कभी–कभी, विशेष रूप से गर्म मौसम में बयस्कों मुर्गियों में पाया गजट है जो पिंजरों में रखा गया है । आमतौर पर प्रभावित झुंड में अंडे के उत्पादन में गिरावट आती है।

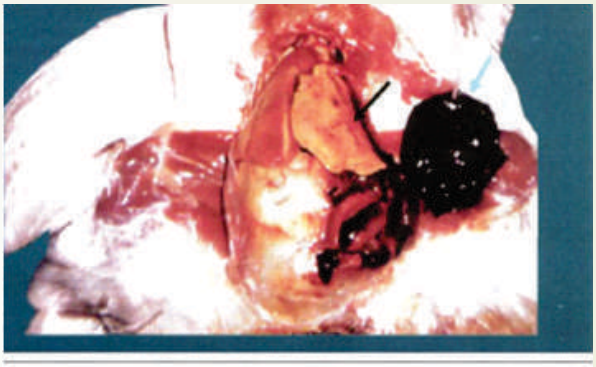

Fatty liver-haemorrhagic syndrome (FLHS) in a **laying hen**. Note liver is pale (black arrow), has also ruptured, resulting in massive haemorrhage into the abdominal cavity. Blue arrow points to clotted blood.

कारण

1. मुर्गी में उच्च ऊर्जा आहार की अत्यधिक खपत, जिसका व्यायाम पिंजरों में प्रतिबंधित है, फैटीनेस की ओर जाता है। यह गर्म मौसम से बढ़ जाता है।
2. पोषण असंतुलन ।
3. उच्च तापमान ।

लक्षण

1. अंडे के उत्पादन में एक अचानक गिरावट है ।
2. मुर्गियों अधिक वजन हो सकता है, बड़े पीला चूल और वाटल्स के साथ शरीर का वजन 20 से 25% तक बढ़ जाता है।

पोस्टमॉर्टम निष्कर्ष

1. मृत मुर्गी पेट में बड़े रक्त के थक्के है, आमतौर पर थक्के आंशिक रूप से जिगर/कलेजी को कवर करते हैं और इससे उत्पन्न भी होते हैं।
2. जिगर/कलेजी बड़ा है, वसायुक्त है, हल्के भूरे से पीले रंग के लिए, और बहुत friable है ।

नियंत्रण

1. ऊर्जा का सेवन कम, या तो फ़ीड प्रतिबंध द्वारा, या metabolizable ऊर्जा को कम करना।
2. मुर्गी आहार में फफूंदी फ़ीड या फ़ीड सामग्री के उपयोग से बचें ।

उपचार

1. फ़ीड में विटामिन–ई, कोलीन क्लोराइड, विटामिन बी–12 और इनोसिटोल अदि देना ।

8.4 गाउट बीमारी

गाउट एक चयापचय/मेटाबोलिक रोग है जो विभिन्न आंतरिक अंगों, या विभिन्न जोड़ों की सतहों पर यूरेट के जमाव की विशेषता है । मुर्गी की पोस्टमॉर्टम परीक्षा के दौरान यह पाया जाता है, और मुर्गी आमतौर पर गुर्दे की विफलता से मर जाते हैं।

गाउट दो रूपों में होता है: A. आंत गाउट

कारण

1. पानी की कमी, या पानी की अपर्याप्त आपूर्ति (निर्जलीकरण)
2. आहार में कैल्शियम की अधिकता , कैल्शियम के संबंध में फास्फोरस का कम सेवन । नमक या सोडियम बाइकार्बोनेट की अत्यधिक मात्रा
3. प्रोटीन का सेवन बढ़ा हुआ है। विटामिन ए की कमी
4. फंगस विषाक्त पदार्थों टॉक्सिन

पोस्टमॉर्टम निष्कर्ष

दिल, यकृत, गुर्दे, प्रोवेंट्रिकुलस और फेफड़ों के सतहों पर सफेद चॉक–पौडर जमा की उपस्थिति । इन जमाओं को सफेद चॉकी कोटिंग ।

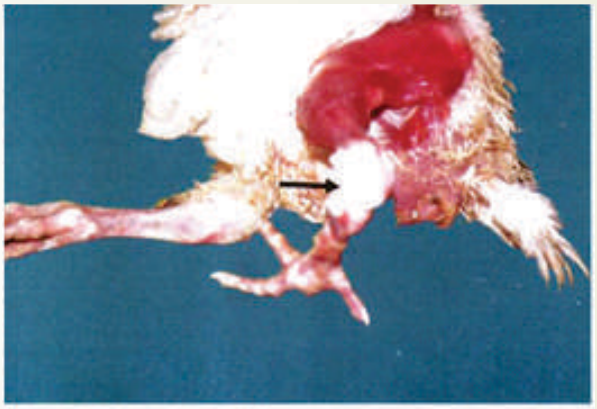

Gout (articular) in a **14-day-old broiler chicken**. Note massive deposits of urates around the left hock joint (arrow). (The joint is cut open). As a result, the joint is enlarged and foot deformed. Further note that the other small joints of both the feet also show deposition of urates. Such joints have turned white.

B. आर्टिकुलर गाउट : इस में, जब जोड़ों को खोला जाता है, तो जोड़ों के आसपास यूरेट जमाव के कारण सफेद पदार्थ मिलता हैं ।

रोकथाम

a. बहुत सारा पानी दें, ड्रिंकर को ठीक से प्रबंधित करें। सुनिश्चित करें कि प्रति 100 मुर्गी में कम से कम 3 ड्रिंकर हैं।

b. कैल्शियम और प्रोटीन के उच्च स्तर को कम करें, मक्का बढ़ाएं ।

उपचार :

गठिया का इलाज MQ: https://youtu.be/plq60hOEjDo

1. मूत्र एसिडिफायर का उपयोग करें, जैसे कि मेथिओनिन हाइड्रॉक्सिल एनालॉग (एमएचए) या यहां तक कि पूरक डीएल–मेथिओनिन भी ।
2. 100 मुर्गी के लिए – 2 घंटे के भीतर पिने के लिए पर्याप्त पानी लें और प्रति 1लि पानी में 1 मिली नेफ्रो–केयर (या नेफ्रोगार्ड या यूरोकेयर मिलकर दें। इसे 3–4 दिनों के लिए दें। ये दवाएं गुर्दे पर दबाव बनाती हैं। इसलिए, अगले 2 दिनों के लिए पीने के पानी में यूरो–फ्रेश दें।

हर्बल उपचार :

100 मुर्गी के लिए– 50 ग्राम काली मिर्च, 100 ग्राम अजवाइन को 200 ग्राम लौकी को साथ पीस लें। इन्हें 500 मिली पानी में बहुत अच्छी तरह से मिलाएं। इस घोल को एक दिन में 100 मुर्गी द्वारा पिने के लिए पर्याप्त पानी में डालें। 3–4 दिनों के लिए जारी रखें।

8.5 यूरोलिथियासिस :

मुर्गियों में यूरोलिथियासिस मूत्र पथ और गुर्दे में पथरी का गठन है। वही स्थिति गुर्दे और पेट के अंगों में गाउट की विशेषता है, यूरोलिथियासिस मुख्य रूप से अंडा देनेबले मुर्गियों का बीमारी है ।

कारण

1. अतिरिक्त आहार में कैल्शियम,
2. संक्रामक ब्रोंकाइटिस वायरस (नेफ्रोट्रोपिक उपभेदों) के साथ संक्रमण ।
3. पानी की कमी 4 .कुछ मायकोटॉक्सिन जो गुर्दे को नुकसान पहुंचाते हैं अदि ।

Urolithiasis in a **44-day-old broiler chicken**. Note kidney lobes are enlarged and gouty from urate deposition (arrows). This is renal gout (kidney gout).

लक्षण

अंडा देने बाले मुर्गियां अचानक मर जाती हैं या, उनके चूल छोटे–पीले और सफेद हो सकते हैं, हो सकते ।

पोस्टमॉर्टम निष्कर्ष

1. गुर्दे फैल जाना (urate जमा के लिए) और बहुत सूजन हो सकता है

नियंत्रण

1. पर्याप्त पानी की उपलब्धता सुनिश्चित करें।
2. नियंत्रण मायकोटोक्सिकोसिस फ़ीड में टकसिन बाइंडर्स मिलायें ।

उपचार :

गठिया का इलाज

MQ: https://youtu.be/plq60hOEjDo

1. मूत्र एसिडिफायर का उपयोग करें, जैसे कि मेथिओनिन हाइड्रॉक्सिल एनालॉग (एमएचए) या यहां तक कि पूरक डीएल–मेथिओनिन भी ।
2. 100 मुर्गी के लिए – 2 घंटे के भीतर पिने के लिए पर्याप्त पानी लें और प्रति 1 लि पानी में 1 मिली नेफ्रो–केयर (या नेफ्रोगार्ड या यूरोकेयर मिलकर दें।इसे 3–4 दिनों के लिए दें।ये दवाएं गुर्दे पर दबाव बनाती हैं।इसलिए, अगले 2 दिनों के लिए पीने के पानी में यूरो–फ्रेश दें।

हर्बल उपचार :

100 मुर्गी के लिए– 50 ग्राम काली मिर्च, 100 ग्राम अजवाइन को 200 ग्राम लौकी को साथ पीस लें। इन्हें 500 मिली पानी में बहुत अच्छी तरह से मिलाएं।इस घोल को एक दिन में 100मुर्गी द्वारा पिने के लिए पर्याप्त पानी में डालें। 3–4 दिनों के लिए जारी रखें।

8.6 एसाइटीस (वाटर बेली)

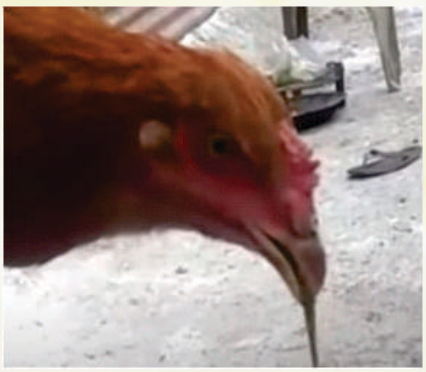

एसाइटीस, मुर्गियों के उदर गुहा में तरल पदार्थ का एक संचय है। यह एक संक्रमण नहीं है, लेकिन जटिल घटनाओं की एक श्रृंखला के कारण होता है जो टिश्यू के लिए ऑक्सीजन की आपूर्ति को प्रभावित करता है। एसाइटीस ब्रॉयलर उद्योग में आर्थिक नुकसान के एक प्रमुख स्त्रोत के रूप में उभरा है। चरम परिस्थितियों में 25% तक मृत्यु दर देखी जाती है। आधुनिक ब्रॉयलरमुर्गीअपनी तेजी से विकास दर, उच्च फ़ीड दक्षता आदि के कारण एसाइटीस के लिए अतिसंवेदनशील है, जिसके लिए ऑक्सीजन की उच्च मांग की आवश्यकता होती है। तेजी से बढ़ते ब्रॉयलरमुर्गीकी चयापचय/मेटाबोलिक दर बहुत अधिक है। इस प्रकार, ऑक्सीजन की आपूर्ति और तेजी से विकास दर और उच्च खाद्य क्षमता को बनाए रखने के लिए आवश्यक ऑक्सीजन के बीच असंतुलन, ब्रॉयलर मुर्गियों में एसाइटीस का कारण बनता है।

कारण

1. तेजी से विकास दर
2. खराब वेंटिलेशन
3. ठंड. यह ऑक्सीजन की बढ़ती मांग का कारण बनता है।
4. उच्च ऊर्जा आहार
5. भीड़ भाड़
6. दोषपूर्ण ब्रूडिंग
7. अमोनिया गठन और धूल
8. सोडियम विषाक्तता
9. विटामिन ई / सेलेनियम की कमी
10. माइकोटॉक्सिकोसिस
11. तनाव आदि

लक्षण

1. अचानक मृत्यु ।
2. मृत्यु दर 28 दिनों के बाद सबसे बड़ी है। एसाइटीस की चरम घटना बढ़ती अवधि के 35 और 42 दिनों के बीच होती है। हालांकि, मामले 15 दिनों और उसके बाद के रूप में जल्दी से हो सकते हैं।
3. प्रभावित मुर्गी सामान्य से छोटे, विकास दर रुक जाना, उदास, और बिखराहुआ पंख ।
4. सिर पीला और सिकुड़ी हुई चूल, मुर्गी चलने फिरने के लिए अनिच्छुक हो सकते हैं, मुश्किल साँस लेना, यहां तक कि हांफना भी दिखा सकते हैं ।
5. गंभीर रूप से प्रभावित मुर्गी पेट में खिंचाव दिखाते हैं ।

पोस्टमॉर्टम निष्कर्ष

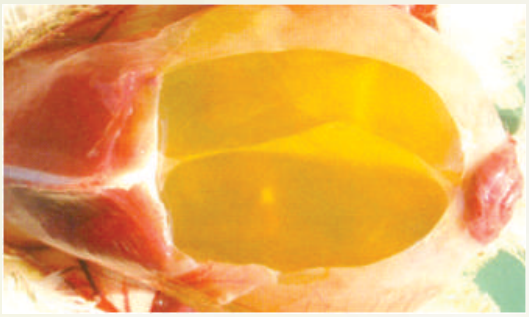

1. पेट खोलने पर स्पष्ट रूप से पीले तरल पदार्थ की बड़ी मात्रा की उपस्थिति ।
2. दिल, जिगर/कलेजी फूल जाता है । 3. फेफड़ों में बेहद जमाबट होता हैं ।

नोट: एसाइटीस विकसित होने से पहले कुछ मुर्गी मर सकते हैं। यही है, एसाइटीस से मरने वाले सभी मुर्गी उदर गुहा में तरल पदार्थ का संचय नहीं दिखाते हैं।

नियंत्रण

I. एसाइटीस को फ़ीड प्रतिबंध के माध्यम से, या बहुत कम ऊर्जा फ़ीड के उपयोग के माध्यम से रोका जा सकता है ।

2. पर्याप्त वेंटिलेशन सुनिश्चित करें।
3. सर्दियों में, ठंड से बचने केलिए ज्यादा समय पर्दा बंद रखने से अमोनिया गैस का जमाबत हो जाता है, इसलिए इसेखुला रखें ।

उपचार एसायटिसेज का इलाज MQ:https://youtu.be/6e_uhNeNEe8

1. धूल और अमोनिया से बचें, चूने पाउडर की तरह बिछाबन में To×imar स्प्रे करें ।और,
2. मुर्गी को 1 घंटे के लिए प्यासा रखें।फिर 2 घंटे में पिने के लिए पर्याप्त पानी में, Carniforcyl प्रति 5 किलो के वजन में 1 मिली दर में दें ।इसके बाद अगले 2 घंटों के लिए समान परिमाण में मल्टीविटामिन दें। 3–4 दिनों के लिए जारी रखें।नहीं तो,
3. मुर्गी को 1 घंटे के लिए प्यासा रखें।फिर लेसिक्स को 2 घंटे में पिने के लिए पर्याप्त पानी में, 1 टैबलेट प्रति 40 किलोग्राम के वजन के दर में दें ।इसके बाद अगले 2 घंटों के लिए समान परिमाण के मल्टीविटामिन दें। 3–4 दिनों के लिए जारी रखें।
4. एक दवा Frusemide जो कि मूत्र के प्रवाह को बढ़ाता है, एसाइटीस में मृत्यु दर को कम कर देता है ।
5. विटामिन–सी, विटामिन–ई और कार्बनिक सेलेनियम एसाइटीस से मृत्यु दर को कम करने में प्रभावी हैं।

8.7 कनिबलीज्म

मुर्गी में कनिबलीज्म आमतौर पर पंख या मलद्वार–त्वचा नोचने का परिणाम होता । पंख नोचना या त्वचा खींचना मुर्गी में देखा जाता है, जो बंद, अक्सर भीड़–भाड़ वाले परिसर में पाला जाता है।शरीर के विभिन्न भागों में घाव के परिणामस्वरूप रक्त की हानि के कारण होती है।

कारण :

तनाव, इसका का प्रमुख कारण है।यह जगह और मौसम के अचानक परिवर्तन, भीड़–भाड़, अस्वास्थ्यकर स्थितियों और वेंटिलेशन की कमी, घर में उच्च प्रकाश की रौशनी, अपर्याप्त फ़ीड, पोषण और खनिज की कमी और बाहरीपरजीवी द्वारा त्वचा की चोट से शुरू होता है।

उपचार :

कनिबलीज्म की रोकथाम पर्याप्त आहार प्रदान करके की जा सकती है, प्रकाश की तीव्रता को कम करें, भीड़ से बचें । एक महत्वपूर्ण उपाय 20 वें, 35 वें, 50 वें और 65 वें दिन डिबेकिंग है।

9. अन्य बीमारियां

9.1 पेस्टऐड वेंट (चिपका हुआ मलद्वार):

चिपका हुआ मलद्वार आमतौर पर दस्त में देखा जाता है, जब मलद्वार के बगल के पर चिपके होते हैं।यह अगले मल निकासी को रोकने से यह बंद हो जाता है ।

हर्बल उपचार : मुर्गी वाला– https://youtu.be/OlpvyzbTGb

1. मुर्गी के मलाशय के हिस्से को 2–3 मिनट के लिए गुनगुने पानी में भिगोएं और नरम होने के लिए इसे 5 मिनिट के लिए छोड़ दें।फिर बलों का उपयोग किए बिना जितना संभव हो उतना धीरे–धीरे हटाने का प्रयास करें।
2. प्रतिदिन प्रति चूजे 1 ग्राम गुड़ दें।इसे एक दिन में सेवन करने के लिए पर्याप्त पानी में मिलाएं।इसे 2–3 दिनों के लिए जारी रखें

9.2 अमोनिया एक्सपोजर

अमोनिया गैस पानी में अत्यधिक घुलनशील है । जब यह श्वसन पथ (साँस लेने के बाद) या आंखों के आंतरिक स्तर के संपर्क में आता है, यह घुल जाता है और एक अत्यधिक परेशान रासायनिक पदार्थ का उत्पादन करता है । यह अमोनियम हाइड्रॉक्साइड है, जो बहुत हानिकारक प्रभाव पैदा करता है।

Ammonia exposure. Note inflammation of the eye ('keratitis' of cornea and 'conjunctivitis' of conjunctiva) following exposure to high levels of atmospheric ammonia.

मुर्गीघर में अमोनिया उत्पादन इस पर निर्भर करता है:

1. अपर्याप्त वेंटिलेशन. अनुचित वेंटिलेशन, गीला बिछाबन को जन्म दे सकता है। अमोनिया का धुआं गीले बिछाबन और बूंदों में विकसित होता है।
2. गीला बिछाबन (नमी में वृद्धि): जब बिछाबन की नमी 20 – 25% के बीच होती है, तो अमोनिया का उत्पादन आमतौर पर नहीं होता है। अमोनिया उत्पादन तब शुरू होता है जब नमी 30त्न से अधिक हो जाती है और तापमान बढ़ने के साथ आगे बढ़ जाती है। गीला बिछाबन, कक्सिडीओसिस रोग भी करता है ।

अमोनिया के हानिकारक प्रभाव

1. अमोनिया श्वसन प्रणाली को नुकसान पहुंचाता है और ई. कोलाई संक्रमण और रानीखेत रोग अदि को बढ़ाबा देता है
2. अमोनिया गैस शरीर के वजन और फ़ीड दक्षता को कम करता है, जिस से विकास दर कम होता है, अंडे का उत्पादन भी प्रभावित हो सकता है । कभी–कभी ब्रॉयलर में 'अमोनिया अंधापन' का कारण बनता है, भी इसे 'अमोनिया बर्न' के रूप में जाना जाता है।

लक्षण

प्रभावित मुर्गी अपनी आँखें बंद रखते हैं, आमतौर पर दोनों आंखों को प्रभावित करती है, पलकें सूजी हुई, बिखराहुआ पंखों के साथ निराशाजनक रूप से खड़े होते हैं, और चलने फिरने के लिए अनिच्छुक होते हैं। वही हैं।

रोकथाम

1. उचित वेंटिलेशन सुनिश्चित करें ।
2. उचित बिछाबन प्रबंधन सुनिश्चित करें और बिछाबन सामग्री में Toximar स्प्रे करें।

9.3 निर्जलीकरण (डी–हाईड्रेसन)

"निर्जलित" का अर्थ है शरीर या टिश्यू को पानी से वंचित करना । लगभग 80% नए हैच किए गए चूजे का शारीर में पानी है। चूजे पानी के बिना कुछ दिनों तक जीवित रह सकते हैं, लेकिन चौथे या पांचवें दिन से मर जाएंगे।

कारण

पानी की कमी, ड्रिंकरकी अपर्याप्त संख्या, मुर्गी की पानी तक पहुँचने में असमर्थता आदि ।

लक्षण

उम्र के अनुपात मुर्गीका अपर्याप्त वजन, और निर्जलित और झुर्रीदार त्वचा, धंसी हुई आंखों के साथ कमजोर दिखाई देते हैं ।

नियंत्रण

ताजे साफपानी की पर्याप्त आपूर्ति और वितरण सुनिश्चित करें । गर्मी के मौसम के दौरान ठंडे और ठंड के दौरान गुनगुना पानी दें ।

9.4 हीट स्ट्रेस (हीट स्ट्रोक)

हीट स्ट्रेस एक ऐसी स्थिति है जिसमें शरीर का तापमान सामान्य शरीर से अधिक होता है । गर्मियों का मौसम में शरीर पर पंखों की मोटी परत के साथ जुड़ा हुआ मुर्गियों में पसीने की ग्रंथियों की अनुपस्थिति, उन्हें गर्मी के तनाव के लिए अत्यधिक प्रवण बनाते हैं । चूंकि मुर्गी में पसीने की ग्रंथियों की कमी होती है, इसलिए ठंडा करने का उनका एकमात्र तरीका खुले मुंह के साथ तेजी से श्वसन है। यदि शरीर तापमान बढ़ता है, मुर्गी थक जाते हैं, और श्वसन, संचार या इलेक्ट्रोलाइट असंतुलन से मर जाते हैं।

MQ-https://www.youtube.com/watch?v=vO_kZe6LgdM
द्वारा गर्मियों की देखभाल

लक्षण

1. खुले मुंह साँस लेने, अंडे के उत्पादन में गिरावट, कम वृद्धि, थकावट के साथ लेटना और मृत्यु आदि ।

Heat stress in a **36-day-old broiler chicken**. Breast muscles bear the maximum brunt of heat. Muscles on the left are relatively less affected; those on the right have turned white. Note their **cooked-meat appearance**. **This is characteristic of heat stress.**

पोस्टमॉर्टम निष्कर्ष

1. गंभीर रूप से निर्जलित और जमाबट शव ।
2. छाती की मांसपेशियों विशेष रूप से प्रभावित करते हैं., वे अपने सामान्य लाल रंग को खो देते हैं और सफेद/पीला रंग हो जाते हैं, और एक 'पके हुए मांस की तरह दीखते हैं। यह गर्मी तनाव की विशेषता है।

नियंत्रण

1. छत में पानी के छिड़काव प्रदान किए जा सकते हैं।
2. अंदर ठंडा करने के लिए Foggers प्रदान की जा सकती है ।
3. मुर्गी को गर्मियों में पर्याप्त ठंडा पानी प्रदान किया जाना चाहिए ।
4. भीड़ भाड़ से बचें ।

उपचार

डॉ अली : https://youtu.be/2T×JyXXDi6U

1. तुरंत पर्याप्त पेयजल उपलब्ध कराएं। गुड़ और नमक या ग्लूकोज के साथ मिश्रण करने के लिए बेहतर है। इलेक्ट्रोलाइट्स भी दें, क्योंकि गर्मी तनाव इलेक्ट्रोलाइट असंतुलन पैदा करता है।
2. हवा आंदोलनों, वेंटिलेशन और स्प्रिंकलर और **foggers** के रूप में, गर्मी के नुकसान की सुविधा।
3. बढ़ी हुई मात्रा में विटामिन दें, विशेष रूप से विटामिन ई और सी।
4. वेंटिलेशन उपकर चलाकर हवा के परिसंचरण को बढ़ाने के लिए हर संभव प्रयास किया जाना चाहिए।

9.5 मुर्गी पालन हेतु टिकाकरण एवं कृमिकरण की वार्षिक सारणी

माह	जनवरी		फरवरी	मार्च	अप्रैल		मई	जून	जुलाई		अगस्त	सितम्बर	अक्टूबर		नवम्बर	दिसम्बर
कृमिकरण/ टीका	कृमिकरण	लासोटा (टिकाकरण)		फाउल पोक्स (टीकाकरण)	कृमिकरण	लासोटा (टिकाकरण)			कृमिकरण	लासोटा (टिकाकरण)		फाउल पोक्स (टीकाकरण)	कृमिकरण	लासोटा (टिकाकरण)		
दवा का नाम	अल्बेन्डाजोल/ फेनबेन्डाजोल	थार्मास्टेबल लासोटा		फाउलपोक्स	अल्बेन्डाजोल/ फेनबेन्डाजोल	थार्मास्टेबल लासोटा			अल्बेन्डाजोल/ फेनबेन्डाजोल	थार्मास्टेबल लासोटा		फाउलपोक्स	अल्बेन्डाजोल/ फेनबेन्डाजोल	थार्मास्टेबल लासोटा		

दवा का नाम	दवा की मात्रा	कहाँ देना है	टिप्पणी
अल्बेन्डाजोल/ फेनबेन्डाजोल	1 माह उम्र 1 से बूंद 4 माह उम्र 4 बूंद, 4 माह से ज्यादा उम्र 5 बूंद, 21 दिन से कम उम्र के चूजा को नहीं देना है,	ड्रोप के द्वारा पिलाना है	कभी भी दे सकते है 3 महीना में 1 बार, हर बार अल्बेन्डाजोल एवं फेन्बेन्डाजोल को अदला बदली करना होगा।
लासोटा	15 दिन से कम उम्र के चूजा को नहीं देना है।	कोई भी एक आँख में	मिलाने के बाद 24 घंटा तक रहेगी।
फाउलपोक्स	2 माह के ज्यादा उम्र की मुर्गी 0.2 मीलि प्रति मुर्गी	कोई भी एक पंख के नीचे चमड़ा एवं मांस के बीच में 2 मीलि का सिरिज से	मिलाने के बाद 2 घंटा तक रहेगी।

9.6 बकरी पालन हेतु टिकाकरण एवं कृमिकरण की वार्षिक सारणी

कहाँ देना है	दवा की मात्रा	दवा की नाम	उम्र	कृमिकरण/ टीका	माह
5ml का सिरिज उस से पिलाना है।	5 केजी वजन के लिए 1ml 10 केजी वजन के लिए 2ml 20 केजी के लिए 5ml	अल्बेन्डाजोल/ फेनबेन्डाजोल	3 माह से ज्यादा	कृमिकरण	जनवरी
5ml का सिरिज उस से पिलाना है।	21 दिन से कम उम्र के बच्चे को नहीं देना है। 2 महीने के बच्चे को 2ml , 3 महीने के बच्चा के लिए 3ml	पाईपाराजिन (Paiperazin)	3 माह से कम		
चमड़ा और मांस के बीच में	1 ml प्रति बकरी		4 माह से 2 साल तक के बकरी	ENT टीका	फरवरी
चमड़ा और मांस के बीच में	1 ml प्रति बकरी	गोटपोक्स	3 माह से ज्यादा	गोटपोक्स टीका	मार्च
					अप्रैल
5ml का सिरिज उस से पिलाना है।	5 केजी वजन के लिए 1ml 10 केजी वजन के लिए 2ml 20 केजी के लिए 5ml	अल्बेन्डाजोल/ फेनबेन्डाजोल	3 माह से ज्यादा	कृमिकरण	मई
5ml का सिरिज उस से पिलाना है।	21 दिन से कम उम्र के बच्चे को नहीं देना है। 2 महीने के बच्चे को 2ml , 3 महीने के बच्चा के लिए 3ml	पाईपाराजिन (Paiperazin)	3 माह से कम		
चमड़ा और मांस के बीच में	1 ml प्रति बकरी	FMD	3 माह से ज्यादा	FMD टीका	जून
					जुलाई
चमड़ा और मांस के बीच में	1 ml प्रति बकरी	गोटपोक्स	3 माह से ज्यादा	गोटपोक्स टीका	अगस्त
5ml का सिरिज उस से पिलाना है।	5 केजी वजन के लिए 1ml 10 केजी वजन के लिए 2ml 20 केजी के लिए 5ml	अल्बेन्डाजोल/ फेनबेन्डाजोल	3 माह से ज्यादा	कृमिकरण	सितम्बर
5ml का सिरिज उस से पिलाना है।	21 दिन से कम उम्र के बच्चे को नहीं देना है। 2 महीने के बच्चे को 2ml , 3 महीने के बच्चा के लिए 3ml	पाईपाराजिन (Paiperazin)			
चमड़ा और मांस के बीच में	1 ml प्रति बकरी	ईटी	3 माह से कम	ENT टीका	
चमड़ा और मांस के बीच में	1 ml प्रति बकरी	PPR	3 माह से ज्यादा	PPR टीका	अक्टूबर
					नवम्बर
चमड़ा और मांस के बीच में	1 ml प्रति बकरी	FMD	3 माह से ज्यादा	FMD टीका	दिसम्बर

गाय, बकरी और मुर्गी जैसे जानवर के बीमारी के बारे में जानकारी और घरेलु चिकित्सा की विधियाँ

इस किताब में दर्शाऐ गए औषधीय सामग्री और पेड़ के फूल, पत्ता आदि का कुछ चित्र

चिरायता

गिलोय

विसल्याकरनी (संजीवनी)

शिरीष

अकवन (अर्का)

ईश्वरमूल

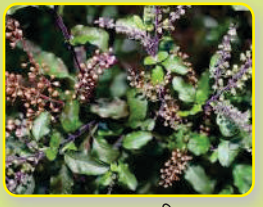
वन तुलसी

गयासा

कोचिला

धतूरा

करंज

सिंधवार

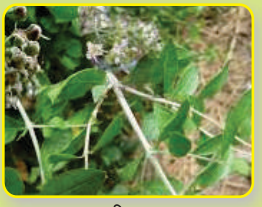
हीना

तम्बाकू पत्ता

वज्रावल्ली (हाड़जोड़)

जायफल

पलाश

अस्वागंधा

पुनर्नवा

कदम

घृतकुमारी

कुराई (कोरया)

डूमर / गूलर

सेमर पेड

रति / गुंजा

बकायन / महा नीम

गुड्मार

बबूल बीज

जामुन

सदाबहार

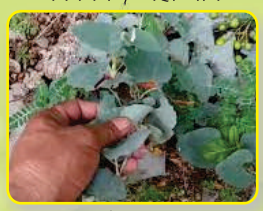
कीटमार

दादमारी

राधाचूड़ा

अमलतास (बंदरलोरी)

अमरबेल (अलगजरिया)

सतावर

अर्जुन/आशन

अपमार्ग

बच (तटजीरा)

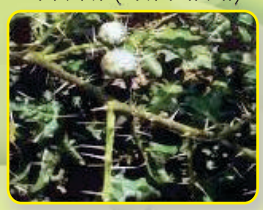
सत्यानाशी/अंकरंती